ISBN: 978-93-5913-084-2

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन



डॉ० राजीव अग्रवाल

धीरेन्द्र कुमार वर्मा

निधि चौरसिया

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल

डीन– शिक्षा संकाय

बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)

धीरेन्द्र कुमार वर्मा

एम०एस-सी० (वनस्पति विज्ञान), एम०एड०

निधि चौरसिया

एम०एस-सी० (वनस्पति विज्ञान), बी०एड०

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल

धीरेन्द्र कुमार वर्मा

निधि चौरसिया

E-book संस्करण: 2023

मूल्य: ₹49

ISBN: 978-93-5913-084-2

प्रकाशक—

निधि चौरसिया

पान मंडी के पीछे, पिटाकपुरा,

जिला— महोबा (उत्तर प्रदेश)

पिन कोड— 210427

मो० — +91-7652003516

ई-मेल: nidhichaurasia254@gmail.com

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र का इतिहास, उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होता है। देश का इतिहास जितना गौरवमयी होगा वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊंचा माना जायेगा। वैसे तो बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता लेकिन उस काल में बनी इमारतों और लिखे गये साहित्य उन्हें हमेशा सजीव बनाये रखते हैं।

यह सत्य है कि वक्त रहते यदि हमने अपनी गलतियों को नहीं सुधारा तो हम अपनी ऐतिहासिक विरासतों को खो देंगे। अतः आवश्यकता है कि हम सभी अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक हों। साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि समाप्त हो चुकी या समाप्ति की कगार पर पहुँच चुकी ऐतिहासिक विरासतों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाये तथा भविष्य के लिये इन्हें संरक्षित किया जाये। यह तभी सम्भव होगा जब देश का प्रत्येक नागरिक अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक होगा तथा उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी को समझेगा।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक **'गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन'** है। इस पुस्तक को छ: अध्यायों में विभक्त किया गया है, जिनका विवरण निम्न प्रकार है—

प्रथम अध्याय में शिक्षा: विकास की प्रक्रिया, इतिहास का आशय, वर्गीकरण एवं महत्व: शिक्षा में इतिहास का स्थान, इतिहास शिक्षण की समस्याएँ, चित्रकूट का इतिहास, चित्रकूट की ऐतिहासिक विरासत, प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या, अध्ययन के उद्देश्य, परिसीमांकन, शोध विधि, शोध उपकरण, शोध का महत्व एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में जागरूकता एवं ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित कतिपय शोध कार्य की समीक्षा प्रस्तुत की गयी है।

तृतीय अध्याय में गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत का सचित्र वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में शोध विधि, शोध अभिकल्प, लक्षित प्रतिदर्श, जनपद एवं संस्थाओं का चयन, शोध उपकरण, परीक्षण का प्रशासन, फलांकन एवं सांख्यिकीय प्रविधियों का सविस्तार वर्णन किया गया है।

पञ्चम अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन प्रस्तुत किया गया है।

षष्ठ अध्याय में निष्कर्ष, सुझाव, शैक्षिक उपादेयता एवं अध्ययन की सीमाएँ प्रस्तुत की गयी हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध-प्रबन्ध पर आधारित है। प्रत्येक शोध कार्य उद्देश्यपरक होता है और यह उद्देश्य तभी सार्थक हो सकता है जब शोध कार्य के परिणामों का उचित क्रियान्वयन किया जाये। इस कार्य के लिए शोध कार्य को जनमानस के लिए सुलभ बनाने की नितांत आवश्यकता होती है। एक पुस्तक के रूप में शोध कार्य को प्रकाशित करने से यह कार्य सुगमता से पूर्ण हो सकता है। शोध कार्य के पुस्तक के रूप में प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि होती है तथा अन्य बुद्धिजीवियों को अनेक क्षेत्रों में नवीन अनुसन्धान करने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही विद्यार्थियों में गणेश बाग जैसे ऐतिहासिक विरासतों के महत्त्व पर प्रकाश डालने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में संदर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो, हम अत्यंत आभारी रहेंगे और आगामी संस्करणों में उन त्रुटियों को दूर कर सकेंगे।

डॉ० राजीव अग्रवाल

धीरेन्द्र कुमार वर्मा

निधि चौरसिया

अनुक्रमणिका

परिशिष्ट

तालिका सूची

चित्र सूची

आरेख सूची

अध्याय प्रथम

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

किसी भी देश की पहचान उस देश के सांस्कृतिक और पुरातात्विक विकास से होती है। भारत में भी वैदिक काल से लेकर वर्तमान समय तक अनेक शहरों, मंदिरों और स्थलों इत्यादि की खोज की जा चुकी है, जिन्होंने इस देश के महत्व को विश्व स्तर पर कई गुना बढ़ाया है। भारत एक जीवंत और विविध सांस्कृतिक, विशाल भूगोल और इतिहास से जुड़ा हुआ देश है। देश की ऐतिहासिक उपलब्धियों के सबूत अभी भी वास्तुकला, विरासत स्थलों और परंपराओं के पूजा और अध्ययन में दिखाई देते हैं। इन विरासत स्थलों में से कुछ बहुत अधिक वैश्विक और राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित करते हैं। हालांकि, इन विरासत स्थलों को शहरीकरण की जोखिम, आर्थिक विकास और अप्रत्याशित परिवर्तन के निहितार्थ का सामना करना पड़ता है। विश्व धरोहर स्थलों, प्राचीन स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों का संरक्षण राष्ट्रीय महत्व को बनाये रखने का एक महत्वपूर्ण साधन है और पर्यटन के विकास, जो आर्थिक विकास के प्रमुख स्रोत में से एक है को बढ़ावा देने में मदद करता है।

गणेश बाग भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले में स्थित एक ऐतिहासिक स्थल है। बुंदेलखण्ड क्षेत्र में चित्रकूट जिले के बनाड़ी गाँव के निकट स्थित यह स्थल चित्रकूट धाम रेलवे स्टेशन से लगभग 3.5 किमी दूर है। वहीं दूसरी ओर कल्यानगढ़ का किला, मड़फा दुर्ग, चित्रकूट के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। गणेश बाग को चित्रकूट के सुन्दर व मध्यकाल के ऐतिहासिक स्थलो में गिना जाता रहा है। इस स्थल में भगवान गणेश व भगवान शिव का मंदिर स्थित है।

ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह स्थान काफी महत्वपूर्ण है। काफी समय तक चंदेलों ने यहाँ शासन किया है। अपने शासन काल के दौरान चंदेल राजाओं ने कई ऐतिहासिक किलों और मंदिरों आदि का निर्माण करवाया था। इसके पश्चात इस जगह पर कई मराठा व पेशवा राजाओं ने शासन किया। गणेश बाग ऐतिहासिक दृष्टि से काफी प्रमुख माना जाता है। इस स्थल में कई स्थानों पर टूटी हुई शिल्पाकृतियाँ व मूर्तियाँ बिखरी हुई हैं, जिन्हें पुरातत्व विभाग द्वारा एकत्र करके संग्रहालय में सुरक्षित रखवा दिया गया है।

ये शिल्पाकृतियाँ व मूर्तियाँ रोचक तथा आनंददायक हैं जिनके माध्यम से विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमता, सौंदर्यबोध व आलोचनात्मक समझ विकसित होती है।

गणेश बाग चित्रकूट जिले की देवांगना रोड में बनाड़ी गांव के निकट स्थित है। यह एक तरह का बाग है जिसे चित्रकूट के राजा ने अपने आमोद प्रमोद के लिए बनवाया था। इसकी दीवारें चौड़ी और मजबूत हैं। इनकी तुलना इस स्थल में स्थापत्य कला की कई शैलियाँ दिखाई देती हैं।

वास्तुकला की दृष्टि से यह क्षेत्र महत्वपूर्ण रहा है। यहाँ पर खजुराहो शैली, तथा पंचायतन नागर शैली के दर्शन होते हैं| इस क्षेत्र को देखने में ऐसा प्रतीत होता है कि वास्तुकारों ने इसकी रचना अग्निपुराण तथा अन्य वस्तु ग्रंथों से प्रेरणा प्राप्त की है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि गणेश बाग निश्चित ही चित्रकूट की बहुमूल्य ऐतिहासिक धरोहर है। यह क्षेत्र शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं तथा पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करने में पूर्ण समर्थ है।

यहाँ के समृद्ध बाग, मंदिर तथा बावली की प्रकृति व रचना से स्पष्ट होता है कि यह क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से एक समृद्धशाली क्षेत्र रहा है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र के समीप कई पहाड़ी तथा अन्य बहुमूल्य धातुओं के संबंध में जानकारी मिली है। इसके अतिरिक्त आस-पास के क्षेत्रों में कीमती पत्थर पाए जाते हैं जो उस समय के आर्थिक समृद्धि के द्योतक थे। इस प्रकार इस क्षेत्र में आर्थिक समृद्धि ने यहाँ की कला तथा संस्कृति को विकसित होने का शुभ अवसर प्रदान किया है।

उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में चित्रकूट, बांदा जिले में स्थित पौराणिक संदर्भ वाले ऐसे कई ऐतिहासिक दुर्ग व स्थल है। जो भारतीय इतिहास में सामरिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण रहे हैं। यह धरोहर स्थल चित्रकूट जिला मुख्यालय के निकट ही स्थित है। यह स्थल चित्रकूट के शानदार ऐतिहासिक स्थलों में एक माना जाता है। चित्रकूट जिले के देवांगना पहाड़ी के नजदीक स्थित इस स्थल में अनेक स्मारकों और मूर्तियों का खजाना है। इन चीजों से इतिहास के विभिन्न पहलुओं का पता चलता है। पेशवाओं द्वारा बनवाया गया यह स्थल पेशवा शासन काल की वास्तु कला का उदाहरण है। बाग के अंदर कई भवन और मंदिर हैं। इस बाग में एक शानदार भव्य षट्कोणीय पञ्चमंदिर है और बैठने का स्थान हैं, जिन पर बारीक डिजाइन और नक्काशी की गई है। जिसमे भगवान के अनेको रूपों को मंदिर के ऊपरी भागों में प्रदर्शित किया गया है।

1.1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है | शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करता है । इस प्रकार मनुष्य के स्वानुशासन के विकास में 'शिक्षा' का महत्वपूर्ण स्थान है। जब से बालक इस संसार में जन्म लेता है, तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारंभ कर देता। वातावरण एवं पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महती भूमिका होती है।

प्रारंभिक अवस्था में बालक की सीखने की गति प्राय: कम होती है। धीरे-धीरे जब बच्चा बड़ा होता है तो वह वातावरण से कुछ नए अनुभव अर्जित करता है और उसके फल स्वरूप उसका व्यवहार परिवार एवं समाज तथा समुदाय के अनुकूल हो जाता है। बालक के अनुभव का यह क्रम दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहता है, जिसके परिणामस्वरूप उसका व्यवहार संयमित होने लगता है । शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य, अविकसित, अपरिपक्व मानव, सुसभ्य एवं सुविकसित इंसान के रूप में परिवर्तित हो जाता है |

शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है " अपितु उसका चारित्रिक विकास भी करती है संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है क्योंकि मनुष्य एक विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के पशुवत व्यवहार में परिवर्तन करके उसे एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है। सामाजिक प्राणी बनने की प्रक्रिया में परिवार विद्यालय, समाज तथा समुदाय बालक की सहायता करते हैं। बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं, जिससे बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके। बालक की शिक्षा में माध्यमिक शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है | उच्च माध्यमिक शिक्षा स्तर पर ही बालक की शैक्षिक व्यावसायिक एवं सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति होती है, जो उसके आगे आने वाले भविष्य की दिशा निर्धारित करती है।

समाज की आर्थिक व्यवस्था चार प्रकार की श्रेणियों में विभक्त रही है ब्राह्मण वर्ग से अपेक्षा की जाती थी कि वह समुदाय को पुरोहित, चिंतक, लेखक, विधायक, धार्मिक नेता तथा पथ प्रदर्शक देंगे। क्षत्रिय वर्ण समाज को योद्धा शासक प्रशासक, वैश्य समाज को उत्पादक, कृषक, शिल्पकार, व्यापारी देते

थे। शूद्र वर्ण छोटे-छोटे कार्यों के लिए भृत्यों या नौकरी की आपूर्ति करते थे | इस प्रकार की प्रणाली में धर्म चिंतन तथा विद्या को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया | सामाजिक व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं, अपितु व्यक्ति क्षमता व आंतरिक व्यवस्था के आधार पर निर्धारित की गई | वर्णों के आधार पर तदनुरूपी चार पुरुषार्थ स्थापित किए गए जो उस समय की दार्शनिक सोच के द्योतक हैं- ब्राह्मण-मोक्ष, क्षत्रिय काम, वैश्य अर्थ, शूद्र-धर्म कालांतर में यही वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिणत हुई तथा जातीय संघर्ष का जन्म हुआ जो आज के सूचना तकनीकी युग में भी यह संघर्ष उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यमान है, चाहे वह राजनीति में हो, शिक्षा में हो, या शासन में हो, यह राष्ट्र निर्माण में बाधा स्वरूप है। इस सामाजिक विघटन को दूर करने के लिए समाज में ऐसी शिक्षा का होना नितांत आवश्यक है जो हमें संकीर्ण सोच से ऊपर उठाकर वैश्विक स्तर तक पहुंचा सके, और इस सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी युग में एक सकारात्मक सोच का विकास कर सके। वर्तमान समय में उच्च माध्यमिक शिक्षा की जो स्थिति है उसमें कुशल शिक्षक के साथ वर्तमान तकनीकी भी महत्वपूर्ण भूमिका में होती है, क्योंकि उच्च माध्यमिक शिक्षा के संदर्भ भारत की स्थिति अभी निराशाजनक है।

1.1.2 इतिहास का आशय, वर्गीकरण एवं महत्व

इतिहास मानव जीवन की समस्त क्रियाओं पर प्रकाश डालने वाला एक कथ्य या कहानी है, जिसमें मानव की समस्त क्रियाओं तथा उत्थान पतन की झाँकी हमें देखने को मिलती है। इतिहास के द्वारा हम अतीत के उन सारे गुण दोषों को देख पाते हैं जो मानव के द्वारा सम्पादित किये जाते रहे हैं। वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में इतिहास विषय का शिक्षण व अध्ययन की महती आवश्यकता है। इस विषय का अर्थ, परिभाषाएं, अवधारणाएं, उद्देश्य तथा उपयोगिता अत्यन्त व्यापक एवं दूरगामी है। अतः भविष्य निधि के रुप में इतिहास विषय का अध्ययन व शिक्षण की व्यवस्था आवश्यक है। अतः समस्त मानव जाति को इतिहास विषय के अध्ययन हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए तथा इसकी सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

इतिहास मानव जीवन की समस्त क्रियाओं पर प्रकाश डालने वाला एक कथ्य या कहानी है जिसमें मानव जीवन की समस्त क्रियाओं तथा उत्थान पतन की झाँकी हमें देखने को मिलती है। इसमें समस्त कृत्यों को क्रमवार ढंग से निष्पक्ष रुप से प्रस्तुत करने की क्षमता है। इतिहास नामक शिक्षा शाखा

की उत्पति सर्वप्रथम यूनान में मिलती है। परीक्षा सिद्ध गवेषणा के अर्थ में स्वयं इतिहास शब्द का प्रयोग उस समय हुआ जब किसी विशेषज्ञ के द्वारा वाद विवाद के निबटारे के लिए अभ्यर्थना की जाती थी। अतः इतिहासकार से अभिप्राय वाद-विवाद के निर्णय करने वाले व्यक्ति से होता था। सर्वप्रथम हिस्ट्री शब्द का प्रयोग करने वाला इतिहास का जनक हेरोडोटस था। इस प्रकार यह सर्वमान्य है कि हिस्ट्री अथवा इतिहास का उद्गम स्थल प्राच्च संस्कृति का केन्द्र यूनान रहा है। वैसे विद्वानों और इतिहासकारों ने इतिहास शब्द का प्रयोग संकीर्ण तथा व्यापक दोनों अर्थों में किया हैं। सबसे पहले हम इसके शाब्दिक अर्थ पर प्रकाश डालना चाहेंगे तदुपरांत इसके संकीर्ण और व्यापक अर्थों का विवेचन करेंगे।

इतिहास विषय की आवश्यकता पर बल देते हुए इतिहासकार रोमिला थापर का मानना है कि मानवीय एवं राष्ट्रीय विरासत को समझने के लिये बालकों को इतिहास का ज्ञान देना अत्यावश्यक है। इतिहास विषय के अध्ययन से बालकों में स्थानीय राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के ज्ञान से परिचित होने का सुअवसर प्राप्त होता है जिससे वे अपने देश के स्थानीय स्तर के इतिहास को जानते हुए राष्ट्रीय तथा स्तर के इतिहास को समझ पाते है। 19 वीं शताब्दी के अन्तिम चरण तथा 20 वीं सदी के प्रारम्भ में जब विज्ञान का बोलबाला हो गया था,तब इतिहास को समाज के सच्चे विज्ञान के रूप में देखा जाने लगा था। केवल इतिहासकारों ने ही नहीं वरन राजनीति शास्त्रियों तथा दार्शनिकों ने भी इसे विज्ञानों के विज्ञान का अध्ययन करना आरम्भ कर दिया था। फिर भी इतिहास की प्रकृति के सम्बन्ध में विवाद बना रहा। कुछ विद्वानों ने इतिहास को कारण तथा कार्यकारण भाव का सूचक माना। इसके विपरीत दूसरे विद्वानों ने इतिहास की समाज के सच्चे विधान या विज्ञानों के विज्ञान के रूप में देखा। आज कोई भी इस बात से सहमत नहीं होता है कि इतिहास अलौकिक शक्तियों के हस्तक्षेप से प्रभावित होता है। अब सामान्यतः यह विश्वास किया जाने लगा है कि इतिहास को उन्हीं विधियों का अनुसरण करके समझा जा सकता हैए जिनका अनुसरण भौतिक और सामाजिक वैज्ञानिक करते हैं। इसी कारण आज इतिहास को उस अध्ययन क्षेत्र के रूप में देखा जाता है जो वास्तविकता का वर्णन करता है। इस अध्ययन क्षेत्र में वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करके ही वास्तविकता की खोज की जाती है।

इतिहास को सार्वभौमिक रूप से विद्यालय पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण विषय माना गया है। यह समाज में मनुष्य के विकास का अध्ययन है। इतिहास के अध्ययन के अभाव में न तो हम अपने वर्तमान

को समझ सकते हैं और न भविष्य का आंकलन कर सकते हैं। इसी कारण पाठ्यक्रम में इतिहास को स्थान प्रदान किया गया है। इतिहास के शिक्षण से विद्यार्थियों में अपने देश के अतीत के प्रति प्रेम एवं गौरव की भावना उत्पन्न होती है एवं इसके ज्ञान से जाति ए धर्म ए भाषा आदि के बन्धनों को समाप्त कर भावनात्मक एकता का विकास किया जा सकता है। इतिहास के द्वारा छात्रों को ज्ञान का भण्डार प्रदान किया जाता है अर्थात् इतिहास स्वयं ज्ञान का भण्डार है जिसमें बालक स्वेच्छानुसार अन्वेषण कर सकते हैं। इतिहास उनको विभिन्न राष्ट्रों व्यक्तियों, उनके विचारों, परम्पराओं, प्रथाओं तथा समस्याओं का ज्ञान प्रदान करता है। इतिहास में बालक को अपने मस्तिष्क का सबसे अधिक उपयोग करना पड़ता है उनको स्मरण रखने के लिए स्मरण शक्ति का उपभोग करना पड़ता है। जब बालक इतिहास में विभिन्न सभ्यताओं एवं संस्कृतियों संस्थाओं आदि के विषय में ज्ञान प्राप्त करता है तब उसकी कल्पना शक्ति को विकसित होने के बहुत से अवसर प्राप्त होते हैं। इन सभी में प्रमुख लाभ इतिहास के अध्ययन से यह होता है कि बालक निष्पक्षता एवं अपनी योग्यता के अनुसार तथ्यों को संकलित, परीक्षित एवं समन्वित करना सीख जाता है। इतिहास बालक के मानसिक अन्तरिक्ष को विस्तृत करता है, जिससे वह समस्त वसुधा को कुटुम्ब समझने के लिए उद्यत हो जाता है। वह समस्त विश्व को ऐक्य के दृष्टिकोण से देखता है। इस प्रकार इससे उसमें सत्य, देश, प्रेम के साथ-साथ विश्वबन्धुत्व की भावना भी विकसित हो जातीहै।

इतिहास का प्रमुख कार्य यह स्पष्ट करना है कि मानव तथा समाज का विकास किस प्रकार हुआ। उसका यह कार्य नहीं है कि वह राजाओं, रानियों, युद्धों, सन्धियों तथा तिथियों के विषय में ही विवरण प्रस्तुत करे इतिहास अतीत के वर्णन द्वारा वर्तमान का स्पष्टीकरण करता है। वर्तमान की विषद रीति से सहृदयतापूर्वक व्याख्या करना ही इतिहास का महान उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है। भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता आधुनिक भारत की एक महत्वपूर्ण माँग है जिसे किसी के द्वारा अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। भावात्मक एकता के लिए इतिहास का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है जिसके महत्व को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

- **शैक्षिक महत्व**

शैक्षिक दृष्टि से इतिहास का ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इतिहास भावी शिक्षा का आधार है। इतिहास मानव जीवन को परिष्कृत,पुष्पित तथा पल्लवित करती है। यह मनुष्य को परिपक्व बुद्धिमान

तथा अनुभवी बनाने वाला एक उपयोगी विषय है। अतीत के आधारशिला पर वर्तमान का निर्माण करने तथा भावी मार्गदर्शन के लिए इतिहास मनुष्य को सक्षम बनाता है। हीगेल ने लिखा है कि दृष् मनुष्य इतिहास से वह शिक्षा प्राप्त करता है जो अन्य विषयों में अप्राप्त है।

- **व्यावसायिक महत्व**

व्यावसायिक दृष्टि से भी इतिहास का कम महत्व नहीं हैं। इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने वाले व्यक्ति पुस्तकालयों संग्रहालयों तथा अन्य संस्थाओं में कार्य करने का सुअवसर प्राप्त कर सकते हैं। पत्रकारिता के लिए तो इतिहास का ज्ञान वरदान हैं। प्रशासकीय सेवा में भी इतिहास का ज्ञान सहायता कराता है क्योंकि इसके ज्ञान के माध्यम से प्रशासक मानवीय एवं सामाजिक समस्याओं को समझने एवं उनके समाधान में समर्थ होता है।

- **नैतिक महत्व**

इतिहास का नैतिक दृष्टि से भी महत्व है क्योंकि यह नैतिकता की शिक्षा प्रदान करता है। यह समाज के नैतिक मूल्यों को भी संरक्षित रखता है। विश्व के तमाम महापुरुषों की जीवनी को यह मानव समुदाय के समक्ष परोसकर उसकी नैतिकता का पाठ हमें पढ़ाता है। इसके अतिरिक्त इतिहास अध्ययन के माध्यम से छात्र विश्व के महान व्यक्तियों के जीवन दर्शन से परिचित होता हैं तथा उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं। इससे छात्रों व पाठक के व्यक्तित्व में नैतिक गुणों का विकास होता है।

- **अनुशासनात्मक महत्व**

इतिहास विषय का अनुशासनात्मक महत्व भी कम नहीं है क्योंकि इतिहास अध्ययन द्वारा छात्रों की मानसिक शक्तियां प्रशिक्षित होती है। अन्य विषयों की तुलना में इतिहास अध्ययन में छात्रों को स्मरण एवं कल्पना के लिए अधिक अवसर प्राप्त होते है। जब छात्र इतिहास अध्ययन में किसी ऐतिहासिक घटना के कारण एवं परिणाम का सूक्ष्म अध्ययन करते हैं तो वे तथ्यों का परीक्षण एवं विवेचन करके साक्ष्यों के आधार पर निष्कर्ष निकालने का प्रयास करते हैं। इतिहास पुरुषों की जीवनी से छात्र अनुशासन, समय की उपयोगिता एवं आचरण आदि की बातों को सिखाता है।

- **सांस्कृतिक महत्व**

सांस्कृतिक दृष्टि से भी इतिहास का व्यापक महत्व है क्योंकि यह मानव मस्तिष्क एवं आचरण को सुसंस्कृत बनाने का प्रमुख एवं प्रभावपूर्ण साधन है। इसके अध्ययन से छात्र अपने देश की अतीत कालीन सभ्यता एवं संस्कृति के आधार पर वर्तमान संस्कृति को समझने में समर्थ होते हैं और उसके क्रमिक विकास का ज्ञान प्राप्त करते हैं। इतिहास द्वारा विद्यमान तथ्यों की अभिव्यक्ति, अपनी रीति रिवाज, अपनी प्रथाओं एवं अपनी परम्पराओं आदि का ज्ञान कराया जाता है। प्राचीन सभ्यता संस्कृति के अनुसार जो हमें आज वर्तमान संस्कृति प्राप्त हुई है, इसका श्रेय इतिहास को ही जाता है।

- **सूचनात्मक महत्व**

इतिहास का सूचनात्मक महत्व भी अधिक है। यह एक तरफ से सूचनाओं का विशाल और अद्भुत भण्डार है। छात्र इसके अध्ययन द्वारा विविध मानवीय समस्याओं के समाधान खोज सकते हैं। इसके वास्तविक अध्ययन से अवबोध के नये आयाम जोड़े जा सकते है। अतीत कालीन अनुभवों के अध्ययन से व्यक्तियों में विद्वेष संकीर्णता दूर करने में सहायता मिलती है।

- **राष्ट्रीय महत्व**

इतिहास राष्ट्रीय महत्व का विषय है क्योंकि छात्र जब अपने देश के ऐतिहासिक दुर्गों, खण्डहरों, भवनों, राज प्रसादों, मीनारों, गुफाओं, स्तूपों, स्तम्भों एवंशिलालेखों आदि के विषय में पढ़कर ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त करता है तो राष्ट्रीय स्तर के महत्व से वह परिचित होता है। आज ताजमहल विश्व के अजूबों में शामिल है। इस जानकारी से छात्रों में राष्ट्रीय महत्व के प्रति जागृति पैदा होती है। इसके साथ ही इतिहास अध्ययन द्वारा देश की गौरवशाली गाथाओं से वह परिचित होता है। एक तरह से इतिहास छात्रों में देशप्रेम की भावना जागृत करने का काम करता है। यह राष्ट्रीय गौरव को प्रदान कर अच्छे नागरिक बनाने का प्रयत्न करता है। इतिहास अध्ययन से छात्र देश के महापुरुषों के शौर्य, त्याग, बलिदान एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यों का अध्ययन कर प्रेरणा प्राप्त करता है।

- **अंतर्राष्ट्रीय महत्व**

इतिहास का अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना की दृष्टि से भी विशेष महत्व है क्योंकि विश्व इतिहास के ज्ञान द्वारा ही छात्रों को विभिन्न देशों की सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान कराया जा सकता है। इसके साथ ही इतिहास अध्ययन द्वारा विभिन्न राष्ट्रों के संबंधों, प्रभावों एवं उनकी सामाजिक,सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को समझने की क्षमता उत्पन्न की जा सकती हैं परिणामस्वरुप इससे छात्रों में विश्व बंधुत्व की भावना विकसित होगी जो अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना एवं महत्व के लिए आधार बनेगी।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि विभिन्न क्षेत्रों में इतिहास का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। इतिहास के ज्ञान के बिना विश्व की विविध समस्याओं का ज्ञान और उसका समाधान संभव नहीं है। अतः सभी को इतिहास का ज्ञान अवश्य प्राप्त करना चाहिए।

1.1.3 शिक्षा में इतिहास का स्थान

इतिहास-लेख या इतिहास-शास्त्र (Historiography) से दो चीजों का बोध होता है

(1) इतिहास के विकास एवं क्रिया पद्धति का अध्ययन तथा

(2) किसी विषय के इतिहास सम्बन्धित एकत्रित सामग्री।

इतिहासकार इतिहास शास्त्र का अध्ययन विषयवार करते हैं। भारत का इतिहास, जापानी साम्राज्य का इतिहास आदि। जैसे- इतिहास के मुख्य आधार युगविशेष और घटनास्थल के वे अवशेष हैं जो किसी न किसी रूप में प्राप्त होते हैं। जीवन की बहुमुखी व्यापकता के कारण स्वल्प सामग्री के सहारे विगत युग अथवा समाज का चित्रनिर्माण करना दुःसाध्य है। सामग्री जितनी ही अधिक होती जाती है उसी अनुपात से बीते युग तथा समाज की रूपरेखा प्रस्तुत करना साध्य होता जाता है। पर्याप्त साधनों के होते हुए भी यह नहीं कहा जा सकता कि कल्पनामिश्रित चित्र निश्चित रूप से शुद्ध या सत्य ही होगा। इसलिए उपयुक्त कमी का ध्यान रखकर कुछ विद्वान कहते हैं कि इतिहास की संपूर्णता असाध्य सी है, फिर भी यदि हमारा अनुभव और ज्ञान प्रचुर हो, ऐतिहासिक सामग्री की जाँच पड़ताल को हमारी कला तर्कप्रतिष्ठित हो तथा कल्पना संयत और विकसित हो तो अतीत का हमारा चित्र अधिक मानवीय और प्रामाणिक हो सकता है। सारांश यह है कि इतिहास की रचना में पर्याप्त सामग्री, वैज्ञानिक ढंग से उसकी जाँच, उससे प्राप्त ज्ञान का महत्व समझने के विवेक के साथ ही साथ ऐतिहासिक कल्पना की शक्ति तथा सजीव चित्रण की क्षमता की आवश्यकता है। स्मरण रखना चाहिए कि इतिहास न तो साधारण परिभाषा के अनुसार विज्ञान

है और न केवल काल्पनिक दर्शन अथवा साहित्यिक रचना है। इन सबके यथोचित सम्मिश्रण से इतिहास का स्वरूप रचा जाता है।

इतिहास न्यूनाधिक उसी प्रकार का सत्य है जैसा विज्ञान और दर्शनों का होता है। जिस प्रकार विज्ञान और दर्शनों में हेरफेर होते हैं उसी प्रकार इतिहास के चित्रण में भी होते रहते हैं। मनुष्य के बढ़ते हुए ज्ञान और साधनों की सहायता से इतिहास के चित्रों का संस्कार उनकी पुनरावृत्ति और सुसंस्कृत होती रहती है। प्रत्येक युग अपने-अपने प्रश्न उठाता है और इतिहास से उनका समाधान ढूंढता रहता है। इसीलिए प्रत्येक युग समाज अथवा व्यक्ति इतिहास का दर्शन अपने प्रश्नों के दृष्टिबिंदुओं से करता रहता है। यह सब होते हुए भी साधनों का वैज्ञानिक अन्वेषण तथा निरीक्षण, कालक्रम का विचार, परिस्थिति की आवश्यकताओं तथा घटनाओं के प्रवाह की बारीकी से छानबीन और उनसे परिणाम निकालने में सतर्कता और संयम की अनिवार्यता अत्यंत आवश्यक है। उनके बिना ऐतिहासिक कल्पना और कपोलकल्पना में कोई भेद नहीं रहेगा।

इतिहास की रचना में यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि उसमें जो चित्र बनाया जाए वह निश्चित घटनाओं और परिस्थितियों पर दृढ़ता से आधारित हो । मानसिक काल्पनिक अथवा मनमाने स्वरूप को खड़ा कर ऐतिहासिक घटनाओं द्वारा उसके समर्थन का प्रयत्न करना अक्षम्य दोष होने के कारण सर्वथा वर्जित है। यह भी स्मरण रखना आवश्यक है कि इतिहास का निर्माण बौद्धिक रचनात्मक कार्य है अतएव अस्वाभाविक और असंभाव्य को प्रमाणकोटि में स्थान नहीं दिया जा सकता। इसके सिवा इतिहास का ध्येय विशेष एवं यथावत् ज्ञान प्राप्त करना है। किसी विशेष सिद्धांत या मत की प्रतिष्ठा, प्रचार या निराकरण अथवा उसे किसी प्रकार का आंदोलन चलाने का साधन बनाना इतिहास का दुरुपयोग करना है। ऐसा करने से इतिहास का महत्व ही नहीं नष्ट हो जाता, वरन् उपकार के बदले उससे अपकार होने लगता है जिसका परिणाम अंततोगत्वा भयावह होता है।

1.1.4 इतिहास शिक्षण की समस्याएं

इतिहास शिक्षण की वास्तविक संरचना को समझने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं—

- **इतिहास का डरावना ज्ञान**

एक सामान्य इतिहास शिक्षक आमतौर पर अपने विषय में ज्यादा दिलचस्पी नहीं रखता है और वह इतिहास के अपने ज्ञान के पूरक के लिए बहुत उत्साही नहीं है जो उसने कॉलेज की उम्र में हासिल किया है। उसे न तो पढ़ने में दिलचस्पी है और न ही सैर-सपाटे में। वह स्कूल में खुद को वैज्ञानिक तरीके से प्रशिक्षित करने के लिए इच्छुक नहीं है। आम तौर पर ऐतिहासिक तथ्यों के बारे में उनकी गलत धारणाएं हैं और इससे विनाशकारी स्थिति पैदा होती है। इस तरह के शिक्षक से विद्यार्थियों को विकृत तथ्य प्रस्तुत करने की संभावना होती है और इस प्रकार उनके व्यक्तित्व को विकृत किया जा सकता है।

- **विश्व इतिहास का ज्ञान खो देता है**

आमतौर पर हमारे स्कूलों में इतिहास के शिक्षकों में विश्व इतिहास के ज्ञान की कमी पाई जाती है। ज्ञान की इस कमी के कारण वे ऐतिहासिक तथ्यों को उनके वास्तविक प्रभाव में देखने में विफल होते हैं। दुनिया के किसी भी हिस्से में हर सामाजिक या राजनीतिक आंदोलन का प्रभाव पूरी दुनिया पर पड़ता है, इसलिए किसी के लिए भी अपने देश के इतिहास से काफी हद तक निपटना संभव नहीं है। इस प्रकार विश्व इतिहास का ज्ञान किसी भी सफल इतिहास शिक्षक के लिए जरूरी है, इसके बिना उसका शिक्षण अपूर्ण रहेगा।

- **धार्मिक या सामाजिक पूर्वाग्रह**

अधिकांश शिक्षक ऐसे पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं और इससे पीड़ित कोई भी व्यक्ति इतिहास का सही ज्ञान नहीं दे सकता है। यदि कोई हिंदू शिक्षक कट्टर है और नस्लीय पूर्वाग्रह रखता है तो वह मुसलमानों के इतिहास को सही और निष्पक्ष रूप से नहीं सिखा सकता है। वह निश्चित रूप से शिक्षण में बेईमान होंगे क्योंकि उनके लिए यह समझाना काफी मुश्किल होगा कि मुसलमान कैसे हिंदू शासकों पर विचार करते हैं। अन्य धर्मों के शिक्षक के लिए भी ऐसी ही स्थिति होगी।

- **राष्ट्रीय पूर्वाग्रह**

इतिहास के शिक्षण में राष्ट्रीय पूर्वाग्रह उतना ही हानिकारक है जितना कि धार्मिक या नस्लीय पूर्वाग्रह। "मेरा देश, सही या गलत" एक निंदा का नारा है। देशभक्ति के महान गुण हैं और एक देशभक्ति होनी चाहिए लेकिन देशभक्ति और राष्ट्रीय पूर्वाग्रह के अलग-अलग अर्थ हैं। एक सच्चा देशभक्त अपने देश की कमजोरियों को देखता है और स्वीकार करता है जबकि राष्ट्रीय पूर्वाग्रह रखने वाला व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता। राष्ट्रीय पूर्वाग्रह से पीड़ित इतिहास का एक शिक्षक अपने विद्यार्थियोंको उनके देश की कमजोरियों के बारे में कभी नहीं समझाएगा।

यदि भारत में एक इतिहास के शिक्षक के पास राष्ट्रीय पूर्वाग्रह है, तो वह बच्चों के सामने यह नहीं समझाएगा कि अंग्रेज अपने देश की कमजोरियों के कारण इस देश में अपना शासन करने में सक्षम थे। दूसरी ओर, वह विद्यार्थियोंको बताएगा कि भारतीय शासकों में कोई कमजोरियां नहीं थीं और यह केवल अंग्रेजों की चालाक थी कि वे भारतीयों पर हावी थे। एक इतिहास शिक्षक को देशभक्त होना चाहिए लेकिन उसे कभी राष्ट्रीय पूर्वाग्रह नहीं होना चाहिए, उसे अपने और अपने लोगों में अंतर्राष्ट्रीय समझ विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

- **शिक्षण की दोषपूर्ण विधि**

हमारे देश में आम तौर पर इतिहास को मृत राजकुमारों और बीती घटनाओं से निपटने के लिए माना जाता है और इस तरह सेशिक्षा निर्जीव हो जाएगी। हालांकि, इतिहास एक जीवित विषय है क्योंकि यहमानव के नाटक या दुनिया के मंच से संबंधित है जो अभी भी बढ़ रहा है। इस नाटक को बच्चों के सामने कक्षा-कक्ष में विषय केरूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इसके लिए एक इतिहास शिक्षक को सक्रिय औरअनुभव से भरा होना चाहिए।

- **सहसंबंध की कमी**

इतिहास पढ़ाने वाले अधिकांश शिक्षक अन्य विषयों के साथ इतिहास को सहसम्बंधितकरने में विफल होते हैं। चूंकि किसी भी विषय को अलगाव में नहीं पढ़ाया जा सकता है, इसलिए इतिहास को कभी भी इस तरह से नहीं पढ़ाया जाना चाहिए। इतिहास के शिक्षक के लिए भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र, शिल्प या किसी अन्य विषय के साथ सहसम्बंधबनाना हमेशा संभवहै।

1.1.5 चित्रकूट का इतिहास

भारतीय साहित्य और पवित्र ग्रन्थों में प्रख्यात, वनवास काल में साढ़े ग्यारह वर्षों तक भगवान राम, माता सीता तथा श्रीराम के अनुज लक्ष्मण की निवास स्थली रहा चित्रकूट मानव प्रसिद्ध है। एक पर्यटक यहाँ के खूबसूरत झरने, चंचल युवा हिरण और नाचते मोर को देखकर रोमांचित होता है, तो एक तीर्थयात्री पयस्विनी / मन्दाकिनी में डुबकी लगाकर और कामदगिरी की धूल में तल्लीन होकर अभिभूत होता है। प्राचीन काल से चित्रकूट क्षेत्र ब्रह्मांडीय चेतना के लिए प्रेरणा का एक जीवंत केंद्र रहा है। हजारों भिक्षुओं, साधुओं और संतों ने यहाँ उच्च आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त की है और अपनी तपस्या, साधना, योग, तपस्या और विभिन्न कठिन आध्यात्मिक प्रयासों के माध्यम से विश्व पर लाभदायक प्रभाव डाला है। प्रकृति ने इस क्षेत्र को बहुत उदारतापूर्वक अपने सभी उपहार प्रदान किये हैं, जो इसे दुनिया भर से तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम बनाता है। अत्री, अनसुइया, दत्तात्रेय, महर्षि मार्कंडेय, सारभंग, सुतीक्ष्ण और विभिन्न अन्य ऋषि, संत, भक्त और विचारक सभी ने इस क्षेत्र में अपनी आयु व्यतीत की और जानकारों के अनुसार ऐसे अनेक लोग आज भी यहाँ की विभिन्न गुफाओं और अन्य क्षेत्रों में तपस्यारत हैं। इस प्रकार इस क्षेत्र की एक आध्यात्मिक सुगंध है, जो पूरे वातावरण में व्याप्त है और यहाँ के प्रत्येक दिन को आध्यात्मिक रूप से जीवंत बनाती है।

चित्रकूट सभी तीर्थों का तीर्थ है। हिंदू आस्था के अनुसार, प्रयागराज (आधुनिक नाम इलाहाबाद) को सभी तीर्थों का राजा माना गया है; किन्तु चित्रकूट को उससे भी ऊंचा स्थान प्रदान किया गया है। किंवदंती है किजबतक अन्य तीर्थों की तरह चित्रकूट, प्रयागराज नहीं पहुंचे तब प्रयागराज को चित्रकूट की उच्चतर पदवी के बारे में बताया गया तथा प्रयागराज से अपेक्षा की गयी की वह चित्रकूट जाएँ, इसके विपरीत किचित्रकूट यहाँ आयें। ऐसी भी मान्यता है कि प्रयागराज प्रत्येक वर्ष पयस्विनी नदी में स्नान करके अपने पापों को धोने के लिए आते हैं। यह भी कहा जाता है कि जब प्रभु राम ने अपने पिता का श्राद्ध समारोह किया तो सभी देवी-देवता शुद्धि भोज (परिवार में किसी की मृत्यु के तेरहवें दिन सभी सम्बन्धियों और मित्रों को दिया जाने वाला भोज) में भाग लेने चित्रकूट आए। वे इस स्थान की सुंदरता को देखकर मोहित हो गए थे। भगवान राम की उपस्थिति से इसमें एक आध्यात्मिक आयाम जुड़ गया। इसलिए वे वापस प्रस्थान करने के लिए तैयार नहीं थे। कुलगुरु वशिष्ठ, भगवान राम की इच्छा के अनुसार

रहने की उनकी इच्छा को समझते हुए विसर्जन (प्रस्थान) मंत्र को बोलना भूल गए। इस प्रकार सभी देवी-देवताओं ने इस जगह को अपना स्थायी आवास बना लिया और वहां हमेशा उपस्थित रहते हैं। आज भी यहां तक कि जब एक अकेला पर्यटक भी प्राचीन चट्टानों, गुफाओं, आश्रमों और मंदिरों की विपुल छटा बिखरे हुए इस स्थान में पहुंचता है तो पवित्र और आध्यात्मिक साधना में लगे ऋषियों के साथ वह अनजाने में ही खुद को पवित्र संस्कारों और ज्ञान प्राप्ति के उपदेशों और कृतियों से भरे माहौल में खो जाताहै और एक अलग दुनिया के आनंद को प्राप्त करता है। विश्व के सभी हिस्सों से हजारों तीर्थयात्री और सत्य के साधक इस स्थान में अपने जीवन को सुधारने और उन्नत करने की एक अदम्य इच्छा से प्रेरित होकर आश्रय लेते हैं।

प्राचीन काल से ही चित्रकूट का एक विशिष्ट नाम और पहचान है। इस स्थान का पहला ज्ञात उल्लेख वाल्मीकि रामायण में है जो कि पहले कवि द्वारा रचित सबसे पहला महाकाव्य माना जाता है। एक अलिखित संरचना के रूप में, विकास के इस महाकाव्य को, पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा द्वारा सौंप दिया गया था। जैसा कि वाल्मीकि, जो राम के समकालीन (या उनसे पहले) माने जाते हैं, और मान्यता है कि उन्होंने राम के जन्म से पहले ही रामायण का निर्माण किया गया था, से इस स्थान की प्रसिद्धि व पुरातनता को अच्छी तरह से निरूपित किया जा सकता है। महर्षि वाल्मीकि चित्रकूट को एक महान पवित्र स्थान के रूप में चित्रित करते हैं, जो महान ऋषियों द्वारा बसाया गया है और जहाँ बंदर, भालू और अन्य विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षी और वनस्पतियां पाई जाती हैं। ऋषि भारद्वाज और वाल्मीकि दोनों इस क्षेत्र के बारे में प्रशंसित शब्दों में बोलते हैं और श्रीराम को अपने वनवास की अवधि में इसे अपना निवास बनाने की सलाह देते हैं, क्योंकि यह स्थान किसी व्यक्ति की सभी इच्छाओं पूर्ण करने और उसे मानसिक शांति देने में सक्षम था। जिससे वह अपने जीवन में सर्वोच्च लक्ष्यों को प्राप्त कर सके। भगवान राम स्वयं इस जगह के मोहक प्रभाव को मानते हैं। रामोपाख्यान' और महाभारत के विभिन्न स्थानों पर तीर्थों के विवरण में चित्रकूट एक को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। यह अध्यात्म रामायण और 'बृहत् रामायण' चित्रकूट की झकझोर कर देने वाली आध्यात्मिक और प्राकृतिक सुंदरता को प्रमाणित करते हैं। लेखकों के अनुसार बाद में चित्रकूट और इसके प्रमुख स्थानों का वर्णन सोलह खंडों वर्णित है।

राम से संबंधित पूरे भारतीय साहित्य में इस स्थान को एक अद्वितीय गौरव प्रदान किया गया है। फादर कामिल बुलके ने भी 'चित्रकूट महात्म्य' का उल्लेख किया है जो मैकेंज़ी के संग्रह में पाया गया है। विभिन्न संस्कृत और हिंदी कवियों ने चित्रकूट का वर्णन किया है। महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य 'रघुवंश' में इस स्थान का सुंदर वर्णन किया है। वह यहाँ के आकर्षण से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने मेघदूत में अपने यक्ष के निर्वासन का स्थान चित्रकूट (जिसे वह प्रभु राम के साथ इसके सम्मानित संबंधों की वजह से रामगिरी कहते हैं) को बनाया। हिंदी के संत कवि तुलसीदास जी ने अपने सभी प्रमुख कार्यों- रामचरित मानस, दोहावली और विनय पत्रिका में इस स्थान का अत्यंत आदरपूर्वक उल्लेख किया है। उनके अंतिम ग्रन्थ में कई छंद हैं, जो तुलसीदास और चित्रकूट के बीच एक गहन व्यक्तिगत बंधन प्रदर्शित करते हैं। अपने जीवन का काफी हिस्सा उन्होंने यहाँ भगवन राम की पूजा और उनके दर्शन की लालसा में व्यतीत किया। यहाँ उनकी उपलब्धियों का एक उल्लेखनीय पल माना जाता है जब हनुमान जी की मध्यस्थता में उन्हें, उनके आराध्य प्रभु राम के दर्शन प्राप्त हुए। उनके मित्र प्रसिद्ध हिंदी कवि रहीम (अब्दुर रहीम खान ए खाना, सैनिक, राजनीतिज्ञ, संत, विद्वान, कवि, जो अकबर के नव रत्नों में से एक थे) ने भी यहां कुछ समय बिताया था जब वह अकबर के पुत्र बादशाहजहांगीर के पक्ष में थे। प्रणामी संप्रदाय के बीटक साहित्य के अनुसार संत कवि महामति प्राणनाथ ने यहां अपनी दो पुस्तकों छोटाकयामत नामा और बड़ा कयामतनामा को लिखा था। वह वास्तविक स्थान, जहाँ प्राणनाथ रहे और जहाँ उन्होंने कुरान की व्याख्या और श्रीमद्भागवतगीता, महापुराण इसकी समानताओं से सम्बंधित कार्य किये, का सही पता नहीं लगाया जा सका है।

उत्तर प्रदेश में 6 मई 1997 को बाँदा जनपद से अलग कर छत्रपति शाहू जी महाराज नगर के नाम से नए जिले का सृजन किया गया जिसमे कर्वी तथा मऊ तहसीलें शामिल थीं। कुछ समय बाद, 4 सितंबर 1998 को जिले का नाम बदल कर चित्रकूट कर दिया गया। यह उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश राज्यों में फैली उत्तरी विंध्य श्रृंखला में स्थित है। यहाँ का बड़ा हिस्सा उत्तर प्रदेश के चित्रकूट और मध्य प्रदेश के सतना जनपद में शामिल है। यहाँ प्रयुक्त "चित्रकूट" शब्द, इस क्षेत्र के विभिन्न स्थानों और स्थलों की समृद्ध और विविध सांस्कृतिक धार्मिक, ऐतिहासिक और पुरातात्विक विरासतों का प्रतीक है। प्रत्येक अमावस्या में यहाँ विभिन्न क्षेत्रों से लाखों श्रद्धालु एकत्र होते हैं। सोमवती अमावस्या, दीपावली, शरद पूर्णिमा, मकर संक्रांति और राम नवमी यहाँ ऐसे समारोहों के विशेष अवसर हैं।

1.1.6 चित्रकूट जनपद की ऐतिहासिक विरासत

1.1.6.1 कामदगिरी

प्रधान धार्मिक महत्व की एक वन्य पहाड़ी, जिसे मूल चित्रकूट माना जाता है। यहीं भरत मिलाप मंदिर स्थित है। तीर्थयात्री यहाँ भगवान कामदनाथ व भगवान श्रीराम का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए कामदगिरी पहाड़ी की परिक्रमा करते हैं।



चित्र संख्या 1.1,6.5 कामदगिरी

1.1.6.2 राम घाट

मन्दाकिनी नदी के तट पर स्थित यह घाट एक शांत तीर्थ स्थल है। इस नदी के किनारे इस स्थान को भगवान राम, देवी सीता और भगवान लक्ष्मण के साथ संत गोस्वामी तुलसीदास का साक्षात्कार स्थल माना जाता है। यह चित्रकूट के प्रमुख घाटों में से एक है जहाँ अध्यात्मिक व धार्मिक गतिविधियों के कारण भीड़ बनी रहती है। प्रातः काल से यहाँ दर्शनार्थ जाया जा सकता है। नदी के किनारे रंग बिरंगी नौकाओं के सुंदर दृश्यों के साथ यहाँ सायंकाल होने वाली आरती के दर्शन का लाभ अवश्य प्राप्त करना चाहिए।



चित्र संख्या 1.1,6.2 राम घाट

1.1.6.3 भरत कूप

भरत कूप, भरतकूप गांव के निकट एक विशाल कुआं है जो चित्रकूट के पश्चिम में लगभग किमी के दूर स्थित है। यह माना जाता है कि भगवान राम के भाई भरत ने अयोध्या के राजा के रूप में भगवान राम को सम्मानित करने के लिए सभी पवित्र तीर्थों से जल एकत्र किया था। भरत, भगवान राम को अपने राज्य में लौटने और राजा के रूप में अपनी जगह लेने के लिए मनाने में असफल रहे। तब भरत ने महर्षि अत्री के निर्देशों के अनुसार वह पवित्र जल इस कुएं में डाल दिया। ऐसीमान्यता है कियहाँ के जल से स्नान करने का अर्थ सभी तीर्थों में स्नान करने के समान है। यहाँ भगवान राम के परिवार को समर्पित एक मंदिर भी दर्शनीय हैं।



चित्र संख्या 1.1,6.3 भरत कूप

1.1.6.4 भरत मिलाप मंदिर

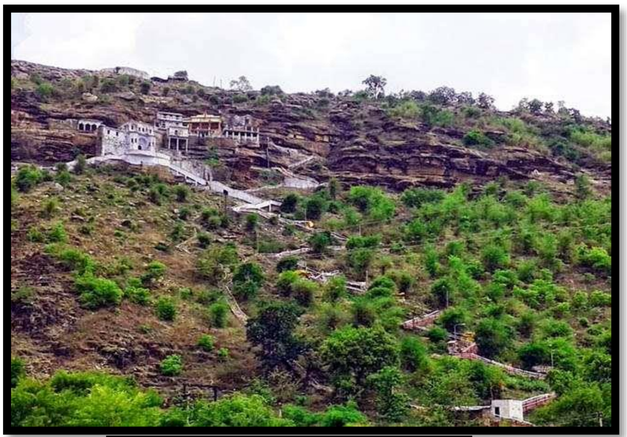
ऐसा माना जाता है कि भरत मिलाप मंदिर उस जगह को चिह्नित करता है जहां भरत अयोध्या के सिंहासन पर लौटने के लिए भगवान श्री राम को मनाने के लिए उनके वनवास के दौरान उनसे मिले थे ऐसी कथा प्रचलित है किचारों भाइयों का मिलन इतना मार्मिक था कि चित्रकूट की चट्टानें भी पिघल गयीं थीं। भगवान राम और उनके भाइयों के इन चट्टानों पर छपे पैरों के निशान अभी भी देखे जा सकते हैं।



चित्र संख्या 1.1,6.4 भरत मिलाप मंदिर

1.1.6.5 हनुमान धारा

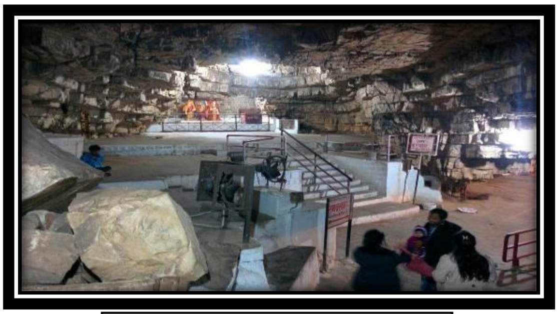
यह एक विशाल चट्टान के ऊपर स्थित हनुमान मंदिर है। मंदिर तक पहुँचने के लिए कई खड़ी सीढ़ियों की चढ़ाई चढ़नी पड़ती है। इन सीढ़ियों पर चढ़ते समय चित्रकूट के शानदार दृश्य देखे जा सकते हैं। पूरे रास्ते में हनुमान जी की प्रार्थना योग्य अनेक छोटी मूर्तियां स्थित हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार हनुमान जी के लंका में आग लगा कर वापस लौटने पर इस मंदिर के अंदर भगवान राम, भगवान हनुमान के साथ रहे। यहां भगवान राम ने उनके गुस्से को शांत करने में उनकी मदद की थी। इस स्थान के आगे भगवान राम, माता सीता और लक्ष्मण जी को समर्पित कुछ और मंदिर हैं।



चित्र संख्या 1.1,6.5 हनुमान धारा

1.1.6.6 गुप्त गोदावरी

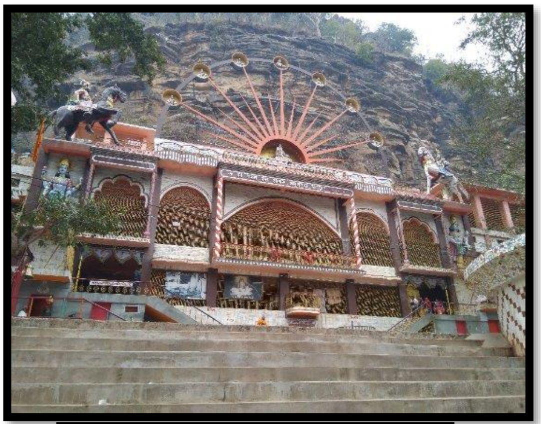
गुप्त गोदावरी चित्रकूट से 18 किलोमीटर दूर स्थित एकतीर्थ स्थल है। पौराणिक कथा के अनुसार भगवान भगवान राम और लक्ष्मण अपने वनवास अवधि के दौरान कुछ समय के लिए यहां रुके थे। गुप्त गोदावरी एक गुफा के अंदर स्थित मंदिर है, जहाँ घुटने तक का जल स्तर रहता है। बड़ी गुफा में पत्थर के दो सिंहासन हैं जो राम और लक्ष्मण से संबंधित हैं। इन गुफाओं के बाहर स्मृति चिन्ह खरीदने के लिए दुकानें हैं।



चित्र संख्या 1.1.6.6 गुप्त गोदावरी

1.1.6.7 सती अनुसुइया आश्रम

यह आश्रम ऋषि अत्री के विश्राम स्थान के रूप में जाना जाता है। महर्षिअत्री ने अपनी भक्त पत्नी अनुसुइया के साथ यहां ध्यान किया। कथा के अनुसार वनवास के समय भगवान राम और माता सीता



इस आश्रम में सती अनुसुइया के पास गए थे। सती अनुसुइया ने यहाँ माता सीता को शिक्षाएं दी थी। यहाँ एक रथ पर सवार भगवान कृष्ण की बड़ी सी मूर्ति है, जिसमे अर्जुन पीछे बैठे हैं, महाभारत के दृश्य को दर्शाती है। अंदर पवित्र दर्शन के लिए अनेक मूर्तियां एवं समाधियां स्थापित हैं।

चित्र संख्या 1.1,6.7 सती अनुसुइया

1.1.6.8 राम दर्शन

राम दर्शन मंदिर, एक अनोखा मंदिर है, जहां पूजा और प्रसाद निषिद्ध हैं। यह मंदिर लोगों को मूल्यवान नैतिक पाठ प्रदान करके अभिन्न मानवता में प्रवेश करने में मदद करता है। यह मंदिर सांस्कृतिक और मानवीय पहलुओं का एकीकरण है, जो कभी भी इस मंदिर में जाने पर मन में एक निशान छोड़ता है। मंदिर भगवान राम के जीवन और उनके अंतर-व्यक्तिगत संबंधों की जानकारी देता है। परिसर में प्रवेश करने के लिए प्रवेश टिकट की व्यवस्था है।



चित्र संख्या 1.1,6.8 राम दर्शन

1.1.6.9 स्फटिक शिला

स्फटिक शिला एक छोटी सी चट्टान है, जो रामघाट से ऊपर की ओर मंदाकिनी नदी के किनारे स्थित है। यह ऐसा स्थान माना जाता है जहां माता सीता ने श्रृंगार किया था। इसके अलावा किंवदंतीहै कि यह वहीजगह है जहां भगवान इंद्र के बेटे जयंतने एक कौवा के रूप में माता सीता के पैर में चोंच मारी थी। ऐसा कहा जाता है कि इस चट्टान में अभी भी राम के पैर की छाप है।



चित्र संख्या 1.1,6.9 स्फटिक शिला

1.1.6.10 मड़फा दुर्ग

मड़फा दुर्ग भी एक चन्देल कालीन किला है। यह दुर्ग चित्रकूट के समीप चित्रकूट से 30 किलोमीटर दूर भरतकूप मार्ग पर बरिया मानपुर के समीप एक पहाड़ी पर स्थित है। चन्देल शासन काल में इस दुर्ग का महत्वपूर्ण स्थान था तथा दुर्ग के भग्नावशेष यहाँ आज भी उपलब्ध हैं। सुरक्षा की दृष्टि से इस दुर्ग का विशेष महत्व था। तथा यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य भी सराहनीय है। यह दुर्ग कालिंजर से 26 किमी दूर उत्तर पूर्व में है। यहाँ तक पहुँचने के लिए कच्चा रास्ता है तथा इसके थोडी ही दूरी पर बघेलाबारी गाँव है। इस दुर्ग में चढ़ने के लिए तीन रास्ते है। पहला मार्ग उत्तर पूर्व से मानपुर गाँव से है। तथा दूसरा मार्ग दक्षिण पूर्व से सवारियाँ गाँव से है। तथा तीसरा मार्ग कुरहन गाँव से है। तथा ये मार्ग दक्षिण पश्चिम में है।

अब इस दुर्ग में प्रवेश करने के लिए एक ही द्वार बचा है। इस द्वार को हाथी दरवाजा के नाम से पुकारा जाता है यह द्वार लाल रंग के बलुवा पत्थर से निर्मित है। चन्देलों के दुर्ग और मन्दिर समस्त स्थलो पर इन्ही पत्थरों से निर्मित हुए थे। यहाँ से कुछ ही दूरी पर खभरिया के समीप चन्देलकालीन दो मन्दिर मिलते होते है। तथा यहीं पर एक सरोवर है और उसके ऊपर छत है जो चार स्तम्भो से रूकी हुई है। मड़फा दुर्ग समुद्र तल से 378 मी की ऊँचाई पर स्थित है, इस दुर्ग के पश्चिमी किनारे पर एक अन्य तालाब है इसका निर्माण चट्टान काटकर किया गया है। तथा करहन दरवाजे के समीप कुछ चन्देलकालीन मन्दिर भी है।

मड़फा दुर्ग की खोज अंग्रेज इतिहासकार ने 18वीं शताब्दी में की थी और इसे मड़फा नाम प्रदान किया था। इस दुर्ग में कालान्तर में बघेलों और बुन्देल नरेशों का राज्य रहा। यहाँ का अन्तिम शासक हरवंश राय था जिसका पतन चचरिया युद्ध के पश्चात हुआ। यह युद्ध सन् 1780 ई0 में बाँदा के राजा और पन्ना के राजा के मध्य हुआ था। सन् 1804 ई0 में ब्रिटिश सैनिकों ने इसे अपने अधिकार में ले लिया था।

मड़फा दुर्ग के दर्शनीय स्थल

इस दुर्ग के चारो ओर जंगल है। मड़फा दुर्ग में अनेक दर्शनीय स्थल है। हाथी दरवाजे के सन्निकट भगवान शिव का एक विशालकाय मन्दिर है, जिसमें भगवान शिव की विशाल मूर्ति है, तथा उनके अनेक भुजायें है, तथा उन भुजाओं में अनेक प्रकार अस्त्र-शस्त्र भी है। तथा वे गले में नरमुण्डो की माला पहने हुए है। यही से थोडी दूरी पर अनेक छोटे-छोटे मन्दिर मिलते होते है इन मन्दिरों को यहाँ के लोग बारादरी के नाम

से पुकारते है। ये मन्दिर पूरी तरह सुरक्षित नही है यहीं से थाडी दूर चलने पर दुर्ग से नीचे उतरने के लिए सीढ़िया लगी हुई है। सीढ़ियों के नीचे गौरी शंकर गुफा नामक एक स्थान है। यहाँ अनेक अर्थ निर्मित मूर्तियाँ है तथा साधू सन्तो की एक प्राकृतिक गुफाभी है। इतिहास के साक्ष्यों के अनुसार यह स्थल माण्डव ऋषि की तपस्थली थी तथा यही पर शकुन्तला ने दुश्यन्त के संयोग से अपने पुत्र भरत को जन्म दिया था।



चित्र संख्या 1.1,6.10 (i) शिव मन्दिर

यह स्थली कर्म कण्व ऋषि, यवन ऋषि, चरक ऋषि, और महाआर्धवर्ण की कर्म स्थली रही है। महाआर्धवर्ण, महर्षि व्यास के ससुर थे तथा उनकी पुत्री का नाम वाटिका था। जो व्यास की पत्नी थी जब इस क्षेत्र में बघेलों का शासन स्थापित हुआ उस समय यह बघेल नरेश ब्याघ देव की राजधानी रही। रामचन्द्र बघेल के शासनकाल तक यह क्षेत्र बघेलों के शासन के अर्न्तगत रहा बाद में रामचन्द्र बघेल ने इस क्षेत्र को मुगल बादशाह अकबर को दे दिया।



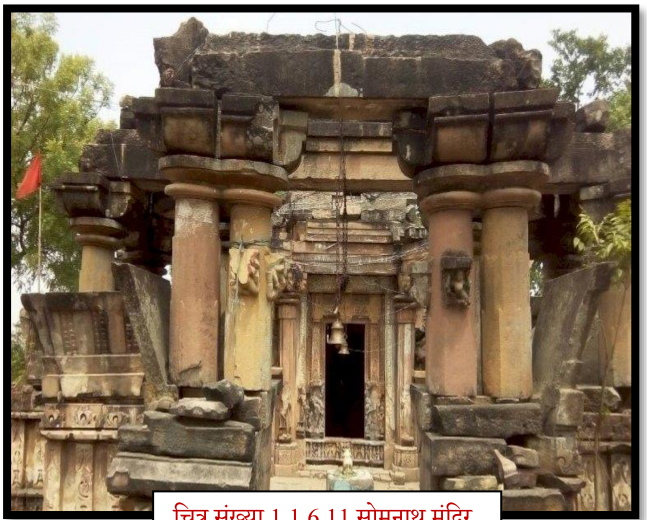
चित्र संख्या 1.1,6.10 (ii) मड़फा दुर्ग

सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ तानसेन और बीरबल पहले रामचन्द्र बघेल के राज्य में मडफा में निवास किया करते थे। यह दुर्ग वास्तव में सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण दुर्ग था जो विभिन्न नरेशों के शासन के अधीन रहा। आज के समय मे मड़फा दुर्ग अपनी क्षीण अवस्था में है। अब यहां इसके सिर्फ भग्नावशेष ही देखने को मिलते है। जो इतिहास में रुचि रखने वाले पर्यटकों को खूब आकर्षित करता है।

1.1.6.11 सोमनाथ मन्दिर, चर

कर्वी से 12 किलोमीटर पूर्व कर्वी-मानिकपुर रोड के मध्यवर्ती ग्राम चर में वाल्मीकि नदी के तट पर एक पहाड़ी पर भगवान सोमनाथ शिव जी का भव्य प्राचीन मन्दिर है। मन्दिर के गर्भगृह की दीवार पर

एक शिलालेख अंकित है जिसमें लिखा हुआ है कि इसका निर्माण 14 वीं शताब्दी के अन्त में तत्कालीन नरेश राजा कीर्ति सिंह ने कराया है। ऐसा बताया जाता है कि जिस पहाड़ी पर इस मन्दिर का निर्माण हुआ है, उस पहाड़ी को सौरठिया पहाड़ी कहते थे। उस समय सौरठिया का अर्थ लोगों की समझ में नहीं आया था पर अब स्पष्ट हो गया है कि सौराष्ट्र का अपभ्रंश सौरठिया है। इसके समीप ही तत्कालीन शासकों की उप राजधानी भी थी जिसका नाम मदनगढ़ था। आजकल लोग इसे 'मदना' नाम से पुकारते हैं। उसके ध्वंशावशेष आज भी विद्यमान हैं। मन्दिर प्रांगण तथा इसके आस पास विभिन्न आकार-प्रकार वाली देवी देवताओं, गन्धवरें, अप्सराओं, किन्नरों, भूत-प्रेतों, और गंगा, यमुना की देवी स्वरूप मूर्तियों के साथ-साथ पशु-पक्षियों की लगभग दो हजार छोटी-बड़ी मूर्तियों और उनके अवशेषों को देखकर ऐसा लगता है जैसे यहाँ मूर्तिकला सिखाने का कोई विश्वविद्यालय रहा होगा। यहाँ जीर्णावस्था में बिखरे पड़े असंख्य भग्नावशेषों से एक भी पत्थर ऐसा नहीं है जिसमें नक्काशी न हो। पत्थर की कटाई करके उकेरी (उत्कीर्ण) गयी देवी-देवताओं की मूर्तियां प्राचीन शिल्प कला का अद्भुत नमूना हैं।



चित्र संख्या 1.1.6.11 सोमनाथ मंदिर

ऐसा कहा जाता है कि व्याघ्रदेव ने सौराष्ट्र के सोमनाथ मन्दिर की तर्ज में चर के इस मन्दिर का निर्माण कराया था।

1.1.6.12 गणेश बाग

चित्रकूट मुख्यालय के निकट गणेश बाग यहां के बहुत ही प्रसिद्ध पर्यटक स्थलों में से एक है। गणेश बाग चित्रकूट रेलवे स्टेशन से 4 किलोमीटर दूर कर्वी-देवांगना रोड पर स्थित है। यह स्थान प्राकृतिक सौंदर्य ऐतिहासिक महत्व से भरपूर है। इस जगह के मुख्य आकर्षण मंदिर, महल, तालाब, बगीचा और बावड़ी हैं। यहां पर दूर-दूर से पर्यटक आते हैं और यहां के शांत वातावरण का आनंद उठाते हैं।

यहां पर जो मंदिर और बावली है, उसका निर्माण 19वीं शताब्दी के दौरान मराठा शासक पेशवा विनायक राव ने करवाया था। जब पेशवा राजा विनायक राव ने अपने विश्राम स्थल के निर्माण के लिए इस एकांत स्थान को चुना होगा तो इसका स्थान शायद निर्णायक कारक रहा होगा। इस ऐतिहासिक स्थल को राजा ने बहुत ही शानदार स्थापत्य कला का प्रयोग करके बनवाया है जिसमें बहुत सारे तरह-तरह नक्कासी द्वारा मूर्तियों का निर्माण किया गया है। यहां का षट्कोणीय पंचमंदिर इस बाग का बहुत ही अद्भुत व सुंदर मंदिर है जो यहां की खूबसूरती पर चार चांद लगाता है।



चित्र संख्या 1.1.6.12 गणेश बाग

गणेश बाग का रख-रखाव भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा किया जाता है और ऐसा माना जाता है कि एक समय में, इस संरचना का उपयोग शाही परिवार के ग्रीष्मकालीन रिसॉर्ट के रूप में प्रयोग किया जाता था। भले ही आज इसका अधिकांश भाग अब खंडहर में पड़ा हो, लेकिन वे आपको पुराने समय में इसकी भव्यता का अंदाजा देते हैं।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

अनुसंधान समस्या की उत्पत्ति प्रायः इस अनुभूति के द्वारा होती है कि किसी क्षेत्र विशेष में किसी कार्य के सुचारू ढंग से संचालन में कोई बाधा है एवं उस बाधा को दूर किया जा सकता है। वस्तुतः आवश्यकता, जिज्ञासा व असन्तोष को आविष्कार की पृष्ठभूमि तैयार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

किसी भी राष्ट्र का इतिहास उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होता है। इतिहास जितना गौरवमयी होगा वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊंचा माना जाएगा। देश का यूं तो बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता लेकिन उस काल में बनी इमारतें और लिखे गए साहित्य उन्हें हमेशा सजीव बनाए रखते हैं। यही वजह है कि ऐसी वर्षों पुरानी या यूँ कहें कई सदियों पुरानी ऐतिहासिक इमारतें जो संबंधित राष्ट्र के

वर्षों पुरानी इतिहास की गौरव गाथा कहती हैं, उनके संरक्षण का पूरा-पूरा प्रयास किया जाता है। भारत में भी कई ऐतिहासिक मंदिर, पुरास्थल एवं अन्य इमारतें हैं जो स्वयं हमारे विशाल और सम्मानजनक इतिहास की कहानी कहती हैं। लेकिन समय के साथ-साथ इन इमारतों और उनमें रखे गए साहित्य को बहुत नुकसान पहुंचा है । हमने भी परवाह किए बगैर उन अनमोल धरोहरों को मनमाने ढंग से खंडित किया है।

यह भी सत्य है कि वक्त रहते यदि हम अपनी भूल को पहचान नहीं पाए तो अपनी विरासत को धीरे-धीरे खो देंगे आज आवश्यकता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक हो साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि पुरानी हो चुकी जर्जर इमारतों की मरम्मत की जाए तथा भवनों और महलों को पर्यटन स्थल बना कर उनकी चमक को बनाये रखने का प्रयास किया जाये किताबों और स्मृति चिन्हों को संग्रहालय में जगह दी जाए। यह तभी सम्भव होगा जब प्रत्येक व्यक्ति अपनी विरासतों के प्रति जागरूक और जिम्मेदार होगा। विरासतों को संभाल कर रखना इतना आसान नहीं है इसलिए यूनेस्को द्वारा हर वर्ष विश्व विरासत दिवस मनाया जाता है जिसका स्पष्ट उद्देश्य इन इमारतों और उनमें रखी गई धरोहरों की देखभाल करना है। ऐसी ही महत्वपूर्ण इमारतों में से एक चित्रकूट स्थित गणेश बाग भी है।

अतः उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया है। इस समस्या के अध्ययन से केवल विद्यार्थियों का ही नहीं अपितु अभिभावक, शिक्षक, समाज तथा राष्ट्र को भी लाभ होगा।

1.3 समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन का समस्या कथन इस प्रकार है;

गणेश बाग, चित्रकूट की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन।

1.4 अध्ययन का औचित्य

शोधकर्ता को समस्या का चयन करने से पूर्व उसके औचित्य एवं उपयोगिता के सम्बन्ध में विचार कर लेना चाहिये। शोध वस्तुतः ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में व्यवस्थित संज्ञान है। शोध में गहन निरीक्षण का प्रत्यय होता है। इसमें किसी सीमित क्षेत्र की किसी समस्या का सर्वांगीण विश्लेषण होता है। उसकी निरीक्षण प्रक्रिया में वैज्ञानिक निरीक्षण ही क्रमबद्ध सोद्देश्य सुनियोजित होते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है। हमारी ऐतिहासिक विरासतें हमें अतीत के बारे में बहुत कुछ सिखाती और बतलाती है। साथ ही इस ऐतिहासिक विरासत को देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक यहाँ आते हैं। वर्तमान समाज एवं आने वाली पीढ़ियों को ऐतिहासिक स्थलों को देखने की जिज्ञासा होती है। दर्शनीयता, कलात्मकता दृश्यों के प्रति आकर्षण व्यक्ति को बार-बार उस स्थल पर आने की प्रेरणा प्रदान करता है। उन्हें दुर्गम स्थलों गुफाओं, प्राकृतिक दृश्यों को देखने की जिज्ञासा रहती है साथ ही विभिन्न सामाजिक संगठनों, वर्गों, समुदायों के लोग जब किसी स्थान विशेष पर आते हैं तो स्थानीय जनता का उनसे संपर्क होता है। वे उन्हें आवश्यकतानुसार आश्रय, भोजन आदि संसाधनों को उपलब्ध कराते हैं। उनकी हर प्रकार से व्यवस्था करते हैं। इस प्रकार से उनमें एक दूसरे को समझने व परखने के साथ-साथ उत्तरदायित्व पूर्ण भावना की अनुभूति होती है। किन्तु आज हमारी ऐतिहासिक विरासतों को पर्याप्त संरक्षण एवं लोगों को सही जानकारी न होने की वजह से इनका अस्तित्व समाप्त हो रहा है। इसके आस-पास साफ सफाई न होने से लोगों का रुझान इस ओर कम होता जा रहा है। इस समय कई स्मारक अतिक्रमण का शिकार हो गए हैं। आस-पास बस्ती होने की वजह से इसके अस्तित्व को खतरा हो रहा है। जब तक लोग अपने ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरुक नहीं होंगे तब तक इन विरासतों को संरक्षण दे पाना मुश्किल होगा। अतः प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया गया है।

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

परिभाषीकरण से तात्पर्य अध्ययन की समस्या को चिंतन द्वारा सम्पूर्ण समस्या क्षेत्र से बाहर निकल कर स्पष्ट करना है। प्रस्तुत अध्ययन के शीर्षक में प्रयुक्त कठिन शब्दों की व्याख्या निम्नानुसार है—

1.5.1 गणेश बाग: गणेश बाग से तात्पर्य चित्रकूट जनपद में 25°19'56" अक्षांश और 80°91'83" देशांतर पर स्थित मराठा शासकों द्वारा 19 वीं शताब्दी में निर्मित बाग से है।

1.5.2 चित्रकूट; यह शहर बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित है। इस शहर का नाम यहां पर स्थित अनेको मन्दिरों एवं मूर्तियों के नाम पर है। चित्रकूट भगवान कामतानाथ की तपोभूमि है। यह शहर मन्दाकिनी नदी के तट पर स्थित है। चित्रकूट पूर्व में बांदा जिले के अन्तर्गत आने वाला एक ऐतिहासिक स्थान था जो बाद में बांदा जिले से अलग होकर नया जिला बना। यह शहर जिले का मुख्यालय भी है। चित्रकूट के चारो तरफ अनेक पर्यटन एवं धार्मिक स्थल हैं। यहाँ से करीब 60 किमी की दूरी पर बांदा तथा कालिंजर की दूरी भी लगभग 61 किमी है। चित्रकूट मन्दाकिनी नदी के तट पर बसे होने व यहां पर स्थित मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध है, जिनका सैकडो वर्ष पुराना इतिहास रहा है। यहाँ विभिन्न ऐतिहासिक हिन्दू मंदिर हैं। यहाँ की मन्दाकिनी नदी जिले की एक प्रमुख नदी है। यहाँ के प्रमुख ऐतिहासिक मंदिरों में कोठी तालाब का शिव मंदिर, गणेश बाग का शिव गणेश मंदिर, चित्रकूट का कामतानाथ मन्दिर व रामघाट का मतगयेन्द्रनाथ मन्दिर है। यहां पर अनेक ऐतिहासिक स्थल जैसे कर्वी का राजा महल, तरौहा का किला, कोठी तालाब व गणेश बाग आदि प्रमुख हैं। जो कि वर्तमान में पुरातत्व विभाग के अधिकार में है। चित्रकूट बुन्देलखण्ड क्षेत्र का प्रमुख शहर है। चित्रकूट मुख्यतः प्रकृति की गोद में बसा एक प्राकृतिक स्थान है जहां पर अनेकों तरह के पेड़ पौधे पाए जाते हैं जिनका औषधीय रूप में बहुत महत्व है। यहां पर देश-विदेश से लोग घूमने आते हैं और यहां के मंदिरों एवं प्रकृति की छटा का आनंद लेते हैं। यहां से 35 किलोमीटर की दूरी पर यमुना नदी के तट पर स्थित राजापुर नामक स्थान पर महाकवि तुलसीदास जी का जन्म हुआ था जिन्होंने चित्रकूट में मां मंदाकिनी के तट पर रामचरित मानस नामक महाकाव्य लिखा था। चित्रकूट जिला भगवान राम की स्मृतियों से जुड़ा धार्मिक जिला है। यह अनेक महापुरुषों की जन्म स्थली एवं कर्म भूमि रही है। चित्रकूट एक ऐतिहासिक नगर है, जिसका वर्णन प्राचीन ग्रंथों में भी मिलता है।

क्षेत्रफल; चित्रकूट जनपद का क्षेत्रफल 3415 वर्ग किलोमीटर है। चित्रकूट मुख्यालय से 1 किलोमीटर बांदा रोड में राजा का महल और 3.5 किलोमीटर देवांगना रोड में गणेश बाग, तरौंहा में राजा का किला व ट्रैफिक चौराहा में कोठी तालाब आदि ऐतिहासिक स्थल है।

सीमाएँ; चित्रकूट जनपद के उत्तर में कौशाम्बी, फतेहपुर, दक्षिण में रीवा, सतना (म.प्र.) स्थित है। पूरब में जिला प्रयागराज व पश्चिम में बांदा जिला इसकी राजनैतिक सीमा निर्धारित करते हैं।

विस्तार; विस्तार की दृष्टि से चित्रकूट जनपद उत्तर से दक्षिण 95 किलोमीटर चौड़ा है। यह पूरब में बरगढ, मुर्का, पश्चिम में रौली, भरतकूप, उत्तर में चिल्लीमल, यमुना नदी तथा दक्षिण में रानी कल्यानगढ़ तक फैला है।

प्राकृतिक रचना; चित्रकूट को प्राकृतिक बनावट के अनुसार दो भागों में बाँट सकते हैं।

1. दक्षिण का पहाड़ी भाग।

2. उत्तर पूर्व का समतल मैदान।

1. चित्रकूट का दक्षिणी भूभाग पूरी तरह से पहाड़ी एवं दुर्गम है। यहां पर विभिन्न तरह के पेढ़, पौधों एवं वनस्पतियां पाई जाती हैं जो औषधीय महत्व के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इस भाग में अधिकतर मानिकपुर तहसील का हिस्सा आता है।

2. उत्तर पूर्व का समतल मैदान इस भाग में राजापुर, कर्वी तहसीले आती हैं। यहाँ का अधिकतर भाग समतल है। केवल छोटी नदियों व नालों के किनारे ही ऊंचा नीचा है। समतल होने के कारण नहरों से सिंचाई होती है। जिले में मुख्य रूप से पांच प्रकार की मिट्टी होती है, जो इस प्रकार हैं:

I. कंकरीली मिट्टी
II. काबर मिट्टी
III. बलुई मिट्टी
IV. राकड़ मिट्टी
V. पडुआ मिट्टी

वनस्पतियां: जनपद में पर्णपाती वन, झाड़-झांखड़, कटीली झाड़ियां, घास प्रमुख रूप से पायी जाती हैं।

पर्वत: चित्रकूट जिले में प्रमुख रूप से विंध्याचल पर्वत माला के कई पर्वत हैं, मुख्य पर्वत इस प्रकार हैं-

मड़फा पहाड़ : यह पर्वत कर्वी तहसील में स्थित है।

चित्रकूट पर्वत माला: कामदगिरि, हनुमान धारा, जानकी कुंड, लक्ष्मण पहाड़ी और देवांगना प्रसिद्ध धार्मिक पर्वत हैं।

बाल्मीकि पहाड़: यह पर्वत कर्वी तहसील में प्रयागराज और बांदा राष्ट्रीय राजमार्ग मार्ग पर स्थित है

नदियाँ; चित्रकूट जिले की महत्वपूर्ण नदियाँ हैं:

- यमुना नदी
- मंदाकिनी (पयस्विनी) नदी
- गुंता नदी
- बाघिन नदी
- ओहन/बाल्मीकि नदी
- बरदहा नदी

ये प्रमुख नदियाँ हैं।

प्रस्तुत लघु-शोध में चित्रकूट से तात्पर्य 1997 में बाँदा जनपद से अलग करके बनाए गए उत्तर प्रदेश के 'चित्रकूट' जनपद से है। (मानचित्र परिशिष्ट- I)

1.5.3 ऐतिहासिक विरासत- ऐतिहासिक विरासत स्थल खास स्थलों जैसे- वन क्षेत्र, पर्वत, झील, मरुस्थल, स्मारक, भवन इत्यादि को कहा जाता है। प्रत्येक विरासत स्थल उस देश विशेष की संपत्ति होती है जिस देश में वह स्थल अपनी विरासत को संजोए खड़ा होता है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में ऐतिहासिक विरासत से अभिप्राय चित्रकूट के ऐतिहासिक विरासत के स्थल से है जिसका सांस्कृतिक महत्त्व है।

1.5.4 उच्चतर माध्यमिक स्तर; कक्षा 10 तक की शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात और महाविद्यालय स्तर की शिक्षा ग्रहण से पूर्व इस बीच 2 वर्ष तक जो शिक्षा ग्रहण की जाती है उसे ही उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा कहते हैं। इस स्तर पर कक्षा 11 एवं 12 का अध्ययन कराया जाता है।

प्रस्तुत लघु शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर से तात्पर्य मान्यता प्राप्त ऐसे विद्यालयों की शिक्षा से है जहाँ कक्षा 12 एवं 12 का शिक्षण कार्य होता है।

1.5.5 विद्यार्थी;

According to Wikipedia– विद्यार्थी वह व्यक्ति होता है जो कोई चीज सीख रहा होता है। विद्यार्थी दो शब्दों से मिलकर बना होता है- 'विद्या'+ 'अर्थी' जिसका अर्थ होता है 'विद्या चाहने वाला'। विद्यार्थी किसी भी आयु वर्ग का हो सकता है बालक, किशोर, युवा या वयस्क। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि वह कुछ सीख रहा होता है।

प्रस्तुत लघु शोध में विद्यार्थियों से तात्पर्य मान्यता प्राप्त विद्यालयों में अध्ययनरत संस्थागत/नियमित छात्र-छात्राओं से है।

1.5.6 जागरूकता; जागरूकता यानी सजग जीवन- चैतन्य जीवन अर्थात चिंतन पर आधारित जीवन, मंथन से निकला जीवन जागरूकता यानी बाहरी संसार भीतरी संसार की संपूर्ण जानकारी, उचित-अनुचित की जानकारी।

वेबस्टर डिक्शनरीज के अनुसार- "जागरूकता का अर्थ देखना, समझना, विचारना या ज्ञान को प्राप्त करना है।"।

प्रस्तुत लघु शोध में जागरूकता से तात्पर्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत की जानकारी से है।

1.5.7 अध्ययन; किसी विषय के सभी अंगों, गुणों एवं तत्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे समझने या पढ़ने की क्रिया अध्ययन कहलाती है।

1.6अध्ययन के उद्देश्य

1. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत का अध्ययन करना।
2. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में जागरूकता के अध्ययन हेतु गणेश बाग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना।
3. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का उनके लिंग एवं विद्यालय प्रकारानुसार अध्ययन करना-
   I. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
   II. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
   III. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना
   IV. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
   V. गणेश बागकी ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
   VI. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना।
5. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत का ई- ब्रोशर (E-brochure) तैयार करना।

1.7 अध्ययन के चर

शोध अध्ययन के संदर्भ में निम्नलिखित चरों को प्रमुख रूप से लिया गया है।

मापदंड चर:

- गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता

वर्गीकरण चर:

- लिंग: छात्र-छात्राएं
- विद्यालय प्रकार: राजकीय/सहायता एवं निजी विद्यालय

1.8 परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत लघु शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैं

I. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

II. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

III. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

IV. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

V. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

VI. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

1.9 अध्ययन का परिसीमांकन

किसी भी अनुसंधान कार्य में एक महत्वपूर्ण सोपान समस्याओं को सीमांकित करना है। कोई भी शोधकर्ता शोध कार्य के लिए किसी विशेष समस्या ग्रस्त क्षेत्र का चुनाव करती है तथा विस्तृत अध्ययन के स्थान में गहन अध्ययन को वरीयता देता है। समस्या का स्वरुप साधारणत: अधिक व्यापक होता है। समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए सीमांकन करना आवश्यक होता है। सीमांकन अध्ययन की चाहरदीवारी होता है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित सीमांकन किया है:

- प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जनपद के अंतर्गत कर्वी नगर में सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन कर्वी नगर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन चयनित विद्यार्थियों के लिंग एवं विद्यालय प्रकारानुसार तुलनात्मक अध्ययन तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन स्मार्टफोन प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के अध्ययन तक सीमित है।

1.10 अध्ययन का महत्त्व एवं सार्थकता

भारत की कला-संस्कृति एवं इसका इतिहास अत्यंत समृद्ध है एवं हमारी कला-संस्कृति की आधरशिला हमारे विरासत स्थल हैं। इन स्थलों के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व के साथ-साथ इनका व्यापक आर्थिक महत्त्व भी है। हमारी एक बहुत बड़ी समस्या ऐतिहासिक विरासतों को सुरक्षित रखने की भी है। पूरे देश में ऐसी अनगिनत प्राचीन और ऐतिहासिक महत्व की इमारतें हैं जिनकी देखभाल ठीक से नहीं हो रही हैं। कुछ इमारतें तो पूरी तरह उपेक्षित हैं और अगर उन पर ध्यान न दिया गया तो वे गिर जाएँगी। सरकारी विभाग अपनी सीमा और साधनों की कमी के कारण केवल उन्हीं विरासतों की देखभाल करते हैं जो उनकी सूची में शामिल हैं पर यह काफी नहीं है। देश की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की ज़िम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं है। वरन यह लोगों का मौलिक कर्तव्य भी है। किन्तु यह तभी सम्भव होगा जब लोग अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक होगे अतः इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत लघु शोध कार्य किया जा रहा है।

अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

2.1 प्रस्तावना

मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं– ज्ञान को एकत्र करना, एक- दूसरे तक पहुँचाना और ज्ञान में वृद्धि करना। किसी भी विषय के विकास में विशेष स्थान की प्राप्ति के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धांतों से भलीभांति अवगत होना चाहिए। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका है अथवा नहीं।

प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसन्धान में चाहे वह भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो यह सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में, साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य एवं प्रारम्भिक कथन है। सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रति-लेखों, विज्ञप्तियों, प्रकाशित-अप्रकाशित शोध प्रबन्धों आदि से है; जिनके अध्ययन से अनुसन्धानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा निर्मित करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। एक अनुसन्धान दूसरे अनुसन्धान के लिए सहायक सिद्ध होता है। इससे एक तो कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती, दूसरा पूर्व में जिन तथ्यों पर प्रकाश नहीं डाला गया उन पर प्रकाश डालकर शोधग्रन्थ को महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है।

जॉन डब्लू बेस्ट के अनुसार — "मान्यता प्राप्त अधिकारियों और पिछले शोध के लेखन का सारांश इस बात का प्रमाण प्रदान करता है कि शोधकर्ता पहले से ज्ञात, अज्ञात और अनुपयोगी से परिचित है।"

"A summary of the writings of recognized authorities and of previous research provides evidence that the researcher is familiar with what is already known and what is still unknown and untested."

–John W. Best.

पूर्व शोधों का पुनरावलोकन वर्तमान में किए जाने वाले शोध हेतु प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता है। सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोधार्थी को ज्ञान के उस शिखर तक ले जाता है, जहाँ वह अपने क्षेत्र की नवीन समस्याओं से परिचित होता है। वास्तव में सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना वह उचित दिशा में एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा सकता। जब तक उसे यह ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? किस विधि से कार्य हुआ है? तथा उसके निष्कर्ष क्या रहे हैं? वह अपने शोध कार्य को आगे नहीं जा सकता। अतः सम्बन्धित साहित्य अनुसन्धान के सभी स्तर पर सहायता प्रदान करता है।

2.2 जागरुकता से सम्बन्धित शोध अध्ययन

निधि अवस्थी (2005) ने 'ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता का अध्ययन' किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में कानपुर नगर के 400 ग्रामीण तथा 400 नगरीय परिवारों को शामिल किया गया। ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थिनी द्वारा 62 प्रश्नों की स्वनिर्मित प्रश्नावली तथा T.S. Sodhi द्वारा निर्मित Attitude Scale Towards small family and population education (ASSFPE) का प्रयोग किया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि ग्रामीण परिवारों में आयु जागरूकता को प्रभावित कर रही है। ग्रामीण परिवारों में 15-25 आयु वर्ग में अधिक जागरूकता प्राप्त हुई है, परन्तु नगरीय परिवारों की जागरूकता पर आयु का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

मधुरिमा मिश्रा (2009) ने 'महिलाओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता पर एक समाजशास्त्रीय अध्ययन' किया। इस अध्ययन में कानपुर नगर की 400 महिलाओं को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया। महिलाओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि अशिक्षित महिलाओं की तुलना में शिक्षित महिलाएँ पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक थीं।

अर्चना सक्सेना (2010) ने 'पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण उन्मूलन के प्रति जनमानस की जागरूकता एवं सहभागिता का अध्ययन' किया। इस अध्ययन में उन्होंने कानपुर नगर के 600 व्यक्तियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया। पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनमानस की जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित पर्यावरण संरक्षण प्रश्नावली का प्रयोग किया गया, जिसमें कुल 50 प्रश्न रखे गये। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि छात्रों की तुलना में छात्राएँ प्रदूषण उन्मूलन के प्रति अधिक जागरूक हैं, जबकि नौकरी पेशा महिलाओं की तुलना में नौकरी पेशा पुरुष पर्यावरण संरक्षण के प्रति अधिक जागरूक हैं।

योगेश पाठक (2011) ने 'पूर्वी उत्तर प्रदेश के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का सूचना क्रान्ति, परम्परागत विषयों तथा पर्यावरण जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन' किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में वाराणसी मण्डल के 8 ग्रामीण एवं 8 शहरी महाविद्यालयों से कुल 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया। पर्यावरण जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु डॉ० प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित पर्यावरणीय जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण मापनी(EAAM) का प्रयोग किया जिसमें कुल 51 कथनों में से 43 सकारात्मक तथा 8 नकारात्मक कथन हैं। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि शहरी छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण में शहरी छात्रों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक अन्तर है।

लक्ष्मण सिंह (2016) ने 'अलीगढ़ मण्डल के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत शिक्षकों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन' किया। इस शोध में न्यादर्श के रूप में उन्होंने अलीगढ़ मण्डल के चार जिलों कासगंज, एटा, हाथरस और अलीगढ़ के

800 शिक्षकों का चयन किया। प्रदत्त संकलन हेतु उन्होंने स्वनिर्मित पर्यावरण जागरूकता मापनी का प्रयोग किया जिसमें 75 प्रश्न रखे गये। शोध के निष्कर्ष रूप में उन्होंने पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत महिला एवं पुरुषों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता में अन्तर है। महिला शिक्षकों की तुलना में पुरुष शिक्षक अधिक जागरूक हैं। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत पुरुषों के पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक है।

श्वेता पटेल (2017) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में वृत्तिक अभिमुखीकरण हेतु जागरूकता कार्यक्रम का प्रभाव: एक अध्ययन' किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने लाडनूं जिले की 200 छात्राओं का चयन किया। इस अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में उन्होंने पाया कि जागरूकता कार्यक्रम वृत्तिक अभिमुखीकरण को प्रभावित करता है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययन छात्रवृत्ति का अभिमुखीकरण हेतु के प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित वृत्तिक अभिमुखीकरण मापनी का प्रयोग किया गया। इस प्रश्नावली के दो भागों में क्रमश: 38-38 प्रश्न शामिल किए गये। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा निजी विद्यालयों की छात्राओं पर जागरूकता कार्यक्रम अधिक प्रभावशाली रहा।

आरती खण्डेलवाल (2018) ने 'सिरोही जिले के बी० एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन' किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में सिरोही जिले के बी०एड० कॉलेजों से 400 प्रशिक्षणार्थियों (200 पुरुष एवं 200 महिलाओं) का चयन किया गया। बी० एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित मानवाधिकार जागरूकता प्रमापनी का प्रयोग किया गया। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि पुरुष प्रशिक्षणार्थियों एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों के मध्य मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता में स्पष्ट रूप से अन्तर परिलक्षित होता है।

शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी (2018) ने 'अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में एड्स के प्रति जागरूकता एवं पर्यावरण ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन' किया। इस अध्ययन में उन्होंने कानपुर नगर के अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के माध्यमिक स्तर के 800 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया। एड्स जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु डॉ० मधु अस्थाना द्वारा निर्मित एड्स जागरूकता मापनी का प्रयोग किया गया। इस प्रश्नावली में कुल 52 कथन व प्रश्न हैं, जिनके उत्तर हाँ या नहीं में देना होता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष में उन्होंने पाया कि अंग्रेजी तथा हिन्दी माध्यम के छात्रों की एड्स के प्रति जागरूकता छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। साथ ही हिन्दी माध्यम की छात्राओं की अपेक्षा, अंग्रेजी माध्यम की छात्राएँ एड्स के प्रति अधिक जागरूक हैं।

विक्रम आनन्द (2019) ने माध्यमिक स्तर के हिन्दी अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रतिजागरूकता एवं अध्यापक की शिक्षण प्रभाविकता का अध्ययन' किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने वाराणसी जनपद के 80 माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत 232 हिन्दी शिक्षकों को एवं 696 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया। माध्यमिक स्तर के हिंदी अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूक के प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में उन्होंने पाया कि CBSE और यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों की सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर है। यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति अधिक जागरूक होने की आवश्यकता है। साथ ही उन्होंने यह भी पाया कि प्रशिक्षित हिन्दी अध्यापक, अप्रशिक्षित हिन्दी अध्यापकों की तुलना में ICT के प्रति अधिक जागरूक हैं।

पूनम राठौर (2020) ने 'अनुसूचित पिछड़े एवं सामान्य जाति के स्नातकोत्तर स्तर विद्यार्थियों के मानवाधिकार जागरूकता एवं व्यक्तिगत मूल्य विकास का तुलनात्मक अध्ययन' किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने मेरठ मण्डल के 2 जिलों मेरठ व गाजियाबाद से 720 स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का चयन किया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि पिछड़े एवं सामान्य

जाति के विद्यार्थियों में मानवाधिकार जागरूकता स्तर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है। साथ ही सामान्य जाति की छात्राओं में मानवाधिकार जागरूकता स्तर छात्रों की अपेक्षा अधिक उच्च है।

2.3 ऐतिहासिक विरासत से सम्बन्धित शोध अध्ययन

सरिता साहू (2016) ने 'क्षेत्रीय इतिहास अध्ययन के परम्परागत मौखिक स्रोतों की ऐतिहासिकता छत्तीसगढ़ के विशेष सन्दर्भ में' अध्ययन किया तथा इस निष्कर्ष पर पहुँची कि छत्तीसगढ़ में लिखित साहित्य की कमी के कारण यहाँ के प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास के सम्बन्ध में जानकारियों का अभाव है। इस अञ्चल में विभिन्न पर्व-त्यौहार, उत्सवों व संस्कारों के निर्वहन के दौरान गीत गाने, नृत्य करने एवं लोक परम्पराओं को निभाने का चलन है।

प्रिन्सी चौरसिया (2018) ने 'स्नातक स्तर पर महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में उन्होंने महोबा नगर के स्नातक स्तर के 50 छात्र छात्राओं का चयन किया। अध्ययन के निष्कर्ष रूप में उन्होंने पाया कि छात्राओं की अपेक्षा छात्र महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति अधिक जागरूक हैं। इस अध्ययन में उन्होंने निम्न सुझाव दिये—

- विद्यार्थियों द्वारा नुक्कड़ नाटक किए जायें ताकि लोग ऐतिहासिक स्मारकों के आसपास साफ-सफाई रख सकें।
- ऐतिहासिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए शासन-प्रशासन स्तर पर कार्य योजना तैयार की जानी चाहिए।
- शैक्षिक भ्रमण हेतु ऐतिहासिक स्थल तक पहुँचने के मार्ग संकेत नगर के मुख्य चौराहों पर लगाए जायें।

- ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण एवं आसपास की स्वच्छता के लिए लोगों को प्रेरित किया जाना चाहिए।

पूजा चौरसिया (2019) ने 'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने बाँदा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के 150 छात्र-छात्राओं का चयन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में उन्होंने पाया कि छात्र-छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है। इस अध्ययन में उन्होंने निम्न सुझाव प्रस्तुत किये -

- ऐतिहासिक विरासत के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का आयोजन किया जाना चाहिए।
- कालिंजर क्षेत्र / प्रान्त की ऐतिहासिक विरासत / शौर्य/वीरता / पराक्रम/संस्कृति/पुरुषार्थ का इतिहास उस क्षेत्र विशेष में विस्तृत रूप से अतिरिक्त सहायक पाठ्य पुस्तक के रूप में शामिल किए जाने की आवश्यकता है।
- परम्परागत कुटीर उद्योग को विकसित किया ।
- यहाँ से जुड़ी हुई संगीत परम्पराओं को विकसित करके समय-समय पर उनका प्रस्तुतीकरण किया जाये।
- महोत्सव का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाए और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया जाये।

बृजलाल पटेल (**2021**) ने 'बाँदा जनपद के विद्यार्थियों में भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन' किया। इस अध्ययन में उन्होंने न्यादर्श के रूप में बाँदा जनपद के 90 छात्र-छात्राओं का चयन किया। उन्होंने अपने निष्कर्ष में पाया कि भूरागढ़ दुर्ग क्षेत्र में धर्म, संस्कृति तथा विशिष्ट रीति-रिवाजों 'युक्त अनेक ऐतिहासिक स्थल हैं, जिनके गौरवमयी अतीत से प्रभावित हुए बिना व्यक्ति नहीं रह सकता। से पर्यटन की दृष्टि से यह क्षेत्र रमणीय क्षेत्र है।

इस क्षेत्र में पर्यटन की पर्याप्त सम्भाव्यता है। अतः इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सुविधाएँ, यातायात, आवास, सुरक्षा की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए।

दीपक कुमार (2021) ने 'विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने बाँदा जनपद के 50 छात्र-छात्राओं का चयन किया। इस अध्ययन में उन्होंने मड़फा दुर्ग की जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में निम्न सुझाव प्रस्तुत किए

- मड़फा तक जाने वाले मार्ग में थोड़ी-थोड़ी दूर पर संकेतक लगाए जायें।
- यहाँ पर सीढ़ियों पर रेलिंग लगी होनी चाहिए।
- पानी की व्यवस्था होनी चाहिए।
- मड़फा दुर्ग तक आवागमन के साधनों का विकास तीव्र गति से किया जाना चाहिए।
- शंकर जी की मूर्ति के पास भंडारा करने के लिए छाया के लिए टीन शेड लगाना चाहिए।

2.4 ऐतिहासिक विरासत से सम्बन्धित समाचार, लेख इत्यादि

ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित कुछ प्रमुख समाचार लेख (चित्रावली परिशिष्ट –II) निम्नलिखित हैं —

- **गणेश बाग के पास पार्क के लिए जल्द कराएं जमीन की पैमाइश : डीएम (दैनिक जागरण Oct19, 2021)**

मिनी खजुराहो के रूप में अपनी पहचान रखने वाले पेशवाकालीन गणेश बाग के पास जल्द एक पार्क के निर्माण होगा। जिलाधिकारी शुभ्रांत कुमार शुक्ल ने मंगलवार के पार्क के लिए जमीन का भौतिक निरीक्षण किया। तहसीलदार कर्वी को निर्देश दिए कि जमीन की पैमाइश कराकर जल्द प्रस्ताव तैयार कराएं। डीएम ने बताया कि यहां दो हेक्टेयर जमीन पर एक पार्क बनेगा जो जन सामान्य के लिए उपयोग में होगा। यह पार्क राजकीय भूमि पर बनेगा।तहसीलदार कर्वी सदर संजय अग्रहरी से कहा कि इसकी पैमाइश जल्द से जल्द करा लिया जाए। एक प्रस्ताव बनाकर भेज दिया जाए। जिससे कि यह कार्य का जल्द से जल्द पूरा कर लिया जाए। जिसमें लोग मार्निंग वाक, शुद्ध

वातावरण आदि के उपयोग में लाया जा सकता है। मुख्य विकास अधिकारी अमित आसेरी, उप जिला अधिकारी कर्वी पूजा यादव, तहसीलदार कर्वी सदर संजय अग्रहरी, लेखपाल तरौंहा रामबाबू , बनाड़ी पुरुषोत्तम शुक्ल रहे।

- **उपेक्षा के शिकार बुंदेलखंड के मिनी खजुराहो के अस्तित्व पर संकट, भारतीय वास्तुकला की धरोहर को बचाए रखने की चुनौती (नव भारत टाइम्स Nov 7, 2021)**

भारतीय वास्तुकला की अनमोल धरोहर गणेश का बाग के अस्तित्व पर संकट मंडरा रहा है। मुंबई में हुई बेसिन की संधि के बाद कर्वी (चित्रकूट) की जागीर संभालने वाले मराठा शासक बाजीराव पेशवा के वंशज अमृत राव ने खजुराहों की तर्ज पर भारतीय वास्तुकला की अनमोल धरोहर का निर्माण वर्ष 1828 में कराया था। इसके अलावा पुरानी कोतवाली किला, गोल तालाब और नारायण बाग का भी मराठा शासकों की ही देन है। पुरातत्व विभाग की अनदेखी का शिकार यह मिनी खजुराहो हो गया है।

- **चित्रकूटः मिनी खजुराहों का प्रस्ताव बनाएं, टिकट लगेगा (अमर उजाला Aug 5, 2022)**

भारतीय पुरातत्व विभाग के एएसएई मनोज कुमार वर्मा ने बताया कि भारतीय पुरातत्व विभाग ने बुंदेलखंड में चार स्थानों पर 75वां आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 15 अगस्त के दिन हर घर तिरंगा के अवसर पर एक वृहद कार्यक्रम गणेश बाग में कराया जाएगा। जिलाधिकारी ने पर्यटन अधिकारी से कहा कि पर्यटकों को देखते हुए यहां पर क्या-क्या कार्य हो सकते हैं उसका एक प्रस्ताव बना ले। अपर उप जिलाधिकारी से कहा कि राजस्व विभाग और पुरातत्व विभाग की जमीन का सीमांकन करें जो बगल में पार्क बनाया जाना है उसमें नगर पालिका तथा पुरातत्व विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक कर प्लान तैयार कराया जाए। पर्यटन अधिकारी से कहा कि

यहां पर बाउंड्रीवाल, बेंच, शौचालय, सोलर लाइट के माध्यम से प्रकाश व्यवस्था, फाउंटेन, तालाब के सुंदरीकरण आदि का प्रस्ताव तैयार करें।

पुरातत्व विभाग के अधिकारियों ने बताया कि जो जमीन पुरातत्व विभाग की है उसमें परमीशन पुरातत्व विभाग देता है तथा जो पुरातत्व से तीन सौ मीटर की दूरी के अंतर्गत है तो उसमें एनएमए लखनऊ के द्वारा परमीशन दिया जाएगा। जिलाधिकारी ने पुरातत्व विभाग के अधिकारियों से यह भी कहा कि यहां पर टिकट व्यवस्था शुरू कराएं। ताकि जो धनराशि आए उससे यहां का मेंटीनेंस कराया जा सके। वृक्षारोपण भी कराएं। निरीक्षण के दौरान अपर उप जिलाधिकारी राजबहादुर, पर्यटन अधिकारी शक्ति सिंह, पुरातत्व विभाग के एएसआई नीरज मिश्रा, सीनियर सीए तारक सिंह सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

- **चित्रकूट के दशकों पुराने किले में क्या है रहस्यमयी आवाज का सच ?TV9 की टीम ने किया ये बड़ा खुलासा (TV9भारतवर्ष Jan 22, 2022)**

गणेश बाग के इस किले (Chitrakoot Fort) को खजुराहो शैली के हिसाब से बनाया गया है, कर्वी पेशवाकालीन राजमहल से गणेश बाग तक एक गुप्त रास्ता है, जो पेशवाओं के पारिवारिक सदस्यों के आने-जाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था,

उत्तर प्रदेश **(Uttar Pradesh**) के चित्रकूट (**Chitrakoot Fort**) में 19वीं शताब्दी में बने एक किले में दशकों बाद भी एक रहस्य का जिक्र होता है, लोगों का ऐसा मानना है कि भगवान श्रीराम की तपोभूमि में मौजूद एक किले में घुंघरुओं की आवाज दशकों गुजरने के बाद आज भी बिल्कुल वैसे ही ताजा है, राजस्थान के कई किलों और हवेलियों के किस्से कई बार सुने होंगे, लेकिन चित्रकूट के इस किले में घुंघरुओं की आवाज आना कितना सच है, ये बात हमेशा ही रहस्य (**Chitrakoot Mystery**) बना रहा है. ऐसा मिथ है कि इस किले में घुंघरुओं की आवाज के साथ कोई हमेशा ही रहता है।

किले (Fort) के रहस्य का सच जानने के लिए टीवी 9 भारतवर्ष की टीम ने यहां एक रात गुजारी, जिसके बाद पूरी सच्चाई से पर्दा उठ गया. कुछ आवाजें टीवी 9 के कैमरे में कैद जरूर हुईं, लेकिन इस बात की पुष्टि नहीं की जा सकती कि ये आवाज घुंघरुओं की ही है. खबर के मुताबिक गणेश बाग (Ganesh Bagh) के इस किले की काली गुफाओं के कई रहस्यमयी राज़ हैं. जानकारों का कहना है कि रात होते ही इन गुफाओं में एक अजीब हलचल शुरू हो जाती है. दिन के वक्त ये किला जितना खामोश नज़र आता है, रात होते ही उतना खौफनाक हो जाता है. दिन ढलने के साथ ही इस किले से पायल और घुंघरुओं की तेज़ आवाज़ आने लगती है. जिसकी वजह से गणेश बाग के कर्मचारी शाम होते ही पर्यटकों को किले से बाहर निकाल देते हैं।

- **चित्रकूट DM मिनी खजुराहो का किया निरीक्षण: बोले-पर्यटक स्थल के रूप में करें विकसित, इसकी सूची पर्यटन अधिकारी को दें (दैनिक भास्कर)**

चित्रकूट DM अभिषेक आनन्द ने शुक्रवार को मिनी खजुराहो गणेश बाग का औचक निरीक्षण किया। भारतीय पुरातत्व विभाग के आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (ASAI) के मनोज कुमार वर्मा भी मौजूद रहे।

"पुरातत्व विभाग आजादी महोत्सव मनाएगा"

मनोज कुमार ने बताया, "भारतीय पुरातत्व विभाग पूरे बुंदेलखंड में 4 स्थानों पर 75वां आजादी के अमृत महोत्सव मनाया जाएगा। यहां 15 अगस्त के दिन हर घर तिरंगा के अवसर पर एक कार्यक्रम गणेश बाग में कराया जाएगा।"

DM अभिषेक आनन्द ने कहा, "अपने विभाग द्वारा यहां प्रतिदिन प्रकाश की व्यवस्था तथा सुंदरीकरण कराएं, जिससे पर्यटक आएं। जो काम करना है, उसकी एक सूची बनाकर पर्यटन अधिकारी को दे दें।"

डीएम ने पर्यटन अधिकारी शक्ति सिंह से कहा, "पर्यटकों को देखते हुए यहां पर क्या-क्या काम हो सकते हैं। उसका एक प्रस्ताव बना लें। एडिशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट (ADM) कुंवर बहादुर से कहा, "राजस्व विभाग और पुरातत्व विभाग की जमीन का सीमांकन करा लें। जो पार्क बनाया जाना है, उसमें नगरपालिका तथा पुरातत्व विभाग के अधिकारियों के साथ बैठकर एक प्लान तैयार कराया जाए।"

"बाउंड्री वाल जो टूटी है। बेंच, शौचालय और सोलर लाइट के माध्यम से प्रकाश व्यवस्था और फाउंटेन फसाद तालाब के सुंदरीकरण का प्रस्ताव तैयार कर लें।"

निरीक्षण के दौरान पर्यटन अधिकारी शक्ति सिंह, पुरातत्व विभाग के एएसआई नीरज मिश्रा, सीनियर सीए तारक सिंह सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

2.5 समीक्षात्मक निष्कर्ष

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के द्वारा शोध प्रबन्ध में उल्लेख किए गए, शोध में अनावश्यक पुनरावृत्ति नहीं होने पाती है। सम्बन्धित साहित्य शोध प्रबन्ध के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में शोधकर्ता के ज्ञान एवं कुशलता को स्पष्ट करता है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित पिछले शोध अध्ययनों की समीक्षा दो भागों में की है। प्रथम भाग में जागरूकता से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों की समीक्षा की गयी है, जिसमें पाया कि **जनसंख्या नियन्त्रण, पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण उन्मूलन, वृत्तिक, अभिमुखीकरण, मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता, एड्स के प्रति जागरूकता तथा सूचनाएवं संचार प्रौद्योगिकी** के प्रति जागरूकता से सम्बन्धित अध्ययन पहले किए गये हैं। दूसरे भाग में ऐतिहासिक विरासत से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोधों की समीक्षा की गयी है, जिसमें पाया गया कि **पूर्व में छत्तीसगढ़ की क्षेत्रीय ऐतिहासिकता, महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों, कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत, भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत तथा मड़फा दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत** से सम्बन्धित अध्ययन किए गये हैं; परन्तु अभी तक कोई भी शोध कार्य **चित्रकूट की चयनित ऐतिहासिक विरासत गणेशबाग की जागरूकता** के सम्बन्ध में नहीं किया गया है, जिस कारण से शोधकर्ता ने इस विषय को शोध कार्य हेतु चुनने का निश्चय किया।

अध्याय तृतीय

गणेश बाग: एक परिचय

3.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बुंदेलखण्ड क्षेत्र में चित्रकूट जिले में स्थित पौराणिक संदर्भ वाला यह एक ऐतिहासिक स्थल है। भारतीय इतिहास में सामरिक दृष्टि से ऐसे ऐतिहासिक स्थल काफ़ी महत्त्वपूर्ण रहे हैं। यह चित्रकूट जिले के कर्वी क्षेत्र के निकट ही स्थित है यहां आस-पास कई ऐतिहासिक इमारतें मौजूद हैं जैसे मऊ के पास लोरी का किला, मानिकपुर के पास कल्याण गढ़ का किला, भरतकूप के पास मड़फा दुर्ग एवं कर्वी में अनेक ऐतिहासिक स्थल जैसे कोठी तालाब, राजा का महल, तरौंहा का किला आदि ये सभी बुंदेलखंड की ऐतिहासिक विरासतें हैं जो बुंदेलखंड की शान के रूप में जानी जाती हैं। इस प्रकार बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित किलों, दुर्गों आदि में स्थित अनेक स्मारकों और मूर्तियों का खजाना है। इन चीज़ों से इतिहास के विभिन्न पहलुओं का पता चलता है।



चित्र संख्या-3.1 गणेश बाग

मराठों द्वारा बनवाया गया यह ऐतिहासिक स्थल मराठा वंश के शासन काल की भव्य वास्तुकला का प्रदर्शित करता है। इस स्थल के अंदर कई भवन, तालाब, बावली, कुएं और मंदिर हैं। इस शानदार स्थल में भव्य मंदिर और बावली है, जिन पर बारीक डिज़ाइन और नक्काशी की गई है। स्थल में भगवान शिव का षट्कोणीय पंचमंदिर यहां की सुंदरता और शांति में चार चांद लगा देता है।

ऐतिहासिक कथानक



चित्र संख्या-3.1.1 राजा छत्रपाल

राजा छत्रपाल से पेशवा बाजीराव प्रथम को बुन्देलखण्ड का एक तिहाई भाग उपहार में मिला तो, मराठों ने यहाँ अपनी जड़ें जमानी शुरू की। मराठों ने बुन्देलखण्ड में अनेक किलों, बावड़ियों और मन्दिरों का निर्माण कराया, किन्तु बुन्देलखण्ड में जिस निर्माण के लिए मराठों को सबसे ज्यादा याद किया जाता है, वह है- गणेश बाग का मन्दिर, जो देश के प्राचीन गौरव तथा प्रसिद्धि के प्रतीक स्वरूप पेशवा नरेशों की कीर्ति संजोये खड़ा है।



चित्र संख्या-3.1.2 पेशवा बाजीराव प्रथम

इसका निर्माण 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में कर्वी के पेशवा अमृतराव के पुत्र विनायक राव पेशवा ने अपने पारिवारिक लोगों के आमोद-प्रमोद के लिये करवाया था। गणेश बाग के बनने की एक कहानी अत्यन्त रोचक है मराठा राजवंश की बहू जय श्री जोग बताती है कि उनका खानदान प्लासी के युद्ध के बाद बेसिन की सन्धि में यह क्षेत्र मिलने के बाद यहाँ पर आया था, उनके पुरखे पेशवा अमृतराव को कुआँ, तालाब, बावड़ी आदि बनवाने का काफी शौक था। से उस समय इस शहर का नाम अमृत नगर हुआ करता था। महाराष्ट्र से ताल्लुक रखने के कारण श्री गणेश की आराधना उनके खानदान में होती थी, इसीलिए यहाँ पर गणेश मन्दिर का निर्माण करवाया था। 1882 ई.वी. में यह बुन्देलखण्ड के धार्मिक स्थलों में शामिल हुआ।

गणेश बाग, भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिला स्थित एक शानदार ऐतिहासिक स्थल है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में चित्रकूट के विंध्य पर्वत के निकट स्थित यह विश्व धरोहर स्थल से चित्रकूट

मुख्यालय से सिर्फ 3.5 किमी की दूरी पर स्थित है। इस स्थल में प्राचीन मन्दिर है। वर्तमान में यह स्थल भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अधिकार एवं अनुरक्षण में है।

3.2 गणेश बाग के महत्वपूर्ण स्थल

3.2.1 बावली

गणेश बाग के मुख्य द्वार के बगल से दायीं ओर लगभग 100 मीटर लम्बी और सात तल वाली बावली है। बावली के मुख्य द्वार के ऊपर गणेश भगवान की एक प्रतिमा बनी हुई है। बावली के अन्दर जाकर हमने देखा कि बावली की ऊपर की छत टूटी हुई है। इस समय बावली का एक ही तल दिखायी देता है। पानी कम होने पर इस बावली के तीन तलों को आसानी से देखा जा सकता है, जबकि नीचे के चार तल आज तक किसी ने नहीं देखे हैं।

बावली के सभी तलों पर ऊपर व नीचे जाने के लिए कुएं के पास से ही सीढ़ियां बनी हुई है। जब भी बावली में पानी की मात्रा कमी होती है तो उन्हीं सीढ़ियों के माध्यम से बावली के तलों पर पहुंचा जा सकता है जिसकी आकृति एवं आकार बिल्कुल ऊपर की आकृति एवं आकार की तरह ही नीचे के तलों में भी देखा जा सकता है



चित्र संख्या 3.2.1 बावली

बावली के अन्दर ही दक्षिण दिशा में एक विशालकाय सात तल वाला कुआँ है, उसी कुएँ के अन्दर 2 नर्तकियों की मूर्तियाँ हैं। कुएँ में पानी होने की वजह से हमें दोनो मूर्तियों के सिर ही दिखाई देते हैं, जबकि पूरा शरीर पानी के अन्दर हैं। कहा जाता है कि पेशवा राजा विनायक राव ने इसे अपने आमोद-प्रमोद के लिए बनवाया था।

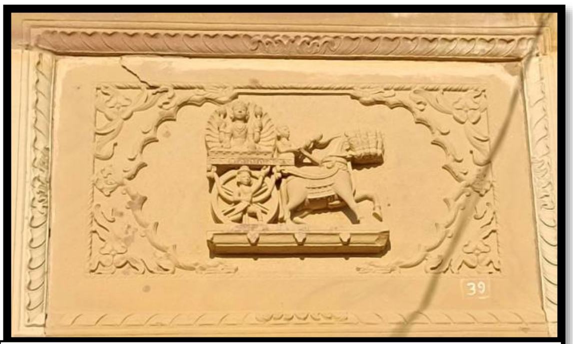
3.2.2 मुख्य मन्दिर

खूबसूरत और विशेष प्रकार की नक्काशी से बना यह मन्दिर गणेश बाग का मुख्य आकर्षण है। मन्दिर की ख्याति विशेष रूप से इसकी दीवारों एवं छत पर की गयी अनुपम भित्ति-चित्रकारी की बदौलत है, यद्यपि इसके साथ ही उच्च कोटि की मूर्ति शिल्प एवं वास्तुकला का चमत्कार भी यहाँ देखने को मिलता है। यहाँ की इमारतों का निर्माण भारतीय स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। बीच में प्राचीन शैली का भव्य षट्कोणीय पञ्चमन्दिर है।



चित्र संख्या 3.2.2. मुख्यमंदिर

इन पञ्चमन्दिरों के समूह को पञ्चायतन कहते हैं। ऊपरी भाग में भित्ति-प्रस्तरों की बारीक कटाई करके खजुराहो की शैली मे असंख्य मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गई हैं। मंदिर की बाहरी दीवारों पर सात अश्वों के रथ पर सवार सूर्यदेव, कहीं विष्णु और अन्य देवी-देवताओं के चित्र बनाये गए हैं। मंदिर के निर्माण में नागर शैली का प्रयोग किया गया है। नागर शैली की विशेषता है कि ऊँची जगह बनाकर ही मूर्ति बनाई जाती है। यहां के मंदिर में बनी मूर्तियां खजुराहों के मंदिर में बनी मूर्तियों की तरह ही है। मन्दिर वैष्णव एवं शैव सम्प्रदाय की एकता का द्योतक है। यहाँ शिव के हरिहर स्वरूप की एक प्रतिमा की दायीं जाँघ पर उमा तथा बाईं जाँघ पर रमा शोभायमान हैं। हरिहर के दायें हाथ में डमरु तथा बायें हाथ में गदा, गणेश के दायें, बायें ऋद्धि सिद्धि भी प्रदर्शित है। शैव, वैष्णव और शाक्तमतों से सम्बन्धित देवी-देवताओं की अलग-अलग भी असंख्य मूर्तियाँ इस मन्दिर में उत्कीर्ण की गयीं हैं। एक प्रतिमा में शिव को नन्दी पर सवार दिखाया गया है। इसके साथ में शिवगण भी दर्शाये गये हैं। विष्णु स्वरूपी प्रतिमाओं में शेषशायी विष्णु, वासुदेव, केशव तथा जनार्दन, राम लक्ष्मण सीता रूपी प्रतिमाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं। (विस्तृत चित्रावली परिशिष्ट IV)



चित्र संख्या 3.2.2.1 सात अश्वों के रथ पर सवार सूर्यदेव

अवतार प्रतिमाओं में गोवर्धन गिरधारी, नृसिंह, कच्छप, मत्स्य को उत्कीर्ण किया गया है।



चित्र संख्या 3.2.2.2 ईश्वर अवतार की मूर्तियां

साक्तमत की महिषासुरमर्दिनी, गजलक्ष्मी, शारदा, दुर्गा, काली की प्रतिमाओं को भी भित्ति पर सुन्दर ढंग से उकेरा गया है।



चित्र संख्या 3.2.2.3 विभिन्न देवियों की मूर्तियां

यहां का खुबसूरत और विशेष तरह की नक्काशी से बना शिव मंदिर इस बाग का मुख्य आकर्षण है। जिसे स्थानीय लोग 'शिव मंदिर' के रूप में जानते हैं। इस मंदिर में कामुक मूर्ति कला देखने

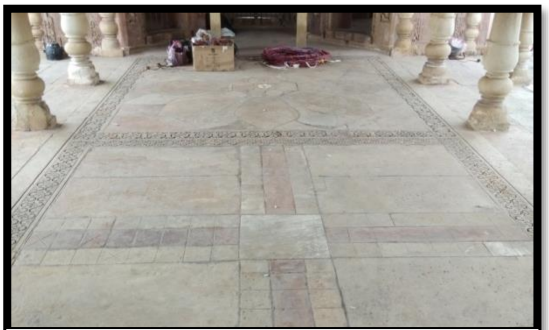
को मिलती है। खास कर इस मंदिर के गुंबदों पर खजुराहो मंदिर की तरह मूर्ति कला उकेरी गई है। मंदिर के बरामदे में चारों ओर से सीढ़ियों से घिरा एक तालाब है जो मंदिर के सौन्दर्य को बढ़ाता है

देवी-देवताओं की मूर्तियों के अतिरिक्त यहाँ नायिकाओं का भी विभिन्न मुद्राओं में अंकन किया गया है।



चित्र संख्या 3.2.2.4 नायक-नायिकाओं की मूर्तियां

मन्दिर के सामने मन्दिर से लगा हुआ 20 खम्भों वाला बरामदा है, जिसे सुन्दर-सुन्दर कलाकृतियों से सजाया गया है। इसी बरामदे की बीच में एक बड़ा-सा चौसड़ बना हुआ है, जिसे राजा व राजा के मंत्री लोग अपना मनोरंजन करने के लिए खेलते थे। इसी बरामदे के दोनों तरफ से ऊपर छत पर



चित्र संख्या 3.2.2.5 चौसड़

जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इन सीढ़ियों के द्वारा मंदिर के ऊपर पहुंचा जा सकता है। यहां मंदिर के गुंबद पर बनी हुई आकृतियों को आसानी से देखा जा सकता है और उनकी बारीकियों को महसूस किया जा सकता है। ऊपर मन्दिर के गुम्बद से लगा हुआ एक छोटा मन्दिर बना हुआ है, जिसमें हनुमान जी की मूर्ति रखी हुई है। जो आस-पासके लोगों द्वारा रखी हुई प्रतीत होती है क्योंकि



चित्र संख्या 3.2.2.6 हनुमान जी



चित्र संख्या 3.2.2.7 कामकला मूर्ति

यह मूर्ति पहले की मूर्तियों से अलग दिखती है। मन्दिर के पाँचों गुम्बदों में मूर्तियाँ बनी हुई हैं, जिनमें धार्मिक (सिंह, रथ ले जाते हुए घोड़े, देवी-देवताओं की मूर्तियाँ) और कुछ कामवासना वाली मूर्तियाँ हैं, जिसके कारण इसे **मिनी खजुराहो** के नाम से भी जाना जाता है। इनमें कुछ मूर्तियाँ खण्डित भी हैं।



चित्र संख्या 3.2.2.8 मंदिर के सामने बनी गणेश मूर्ति

छत की पूर्व दिशा में दीवार पर गणेश भगवान की एक मूर्ति बनी हुई है।

3.2.3 तालाब

मन्दिर के ठीक सामने उत्तर दिशा की ओर लगभग 75X100 मीटर का तालाब है, जिसकी गहराई 25 फुट है। इस तालाब में चारों तरफ से सीढ़ियाँ बनी हुई हैं, इन सीढ़ियों की संख्या 25 है। यह तालाब बहुत ही आकर्षक एवं सुंदर है यहां पर आसपास के लोग नहाने के लिए भी आते हैं इसका पानी हमेशा भरा रहता है क्योंकि इस तालाब का स्रोत बावली से जुड़ा हुआ है।



चित्र संख्या 3.2.3 तालाब



चित्र संख्या 3.2.3.1 नहाने का हौज

तालाब के ऊपर दक्षिण की ओर मन्दिर की तरफ नहाने के लिए एक हौज है, जिसमें दो छिद्रों से पानी आता हैतालाब में पानी आने के लिए एक नाला बना हुआ है, उस नाले के द्वारा खेतों का पानी आता है, जिससे तालाब भरता है। जिसका उपयोग समय-समय पर गांव वालों के द्वारा किया जाता है और यह गांव वालों के लिए पानी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।



चित्र संख्या 3.2.3.2 बैठक स्थल

तालाब के उत्तर की तरफ आठ तरफ से खुला हुआ हवादार मन्दिरनुमा छोटा बैठका बना हुआ है, जहाँ पर बैठकर लोग तालाब के दृश्य को बहुत ही आनन्दित होकर निहारते है। ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि राजा विनायक राव ने इसे अपने बैठने के बनवाया रहा होगा जिससे तालाब के किनारे बैठकर उसकी खूबसूरती का आनंद लिया जा सके। तालाब की पूर्व दिशा में ऊपर खूब सारे पेड़-पौधे लगे हुए हैं। जो उस जगह की सुंदरता को और बढ़ाते हैं।

आज के समय में दीवावली के दिन यहां पर मेले का आयोजन होता है। रक्षाबंधन के दिन आसपास के लोग इस तालाब में नहाने के लिए आते हैं और यहां पर आस्था की डुबकियाँ लगाते हैं।

3.2.4. दीपदान स्तम्भ

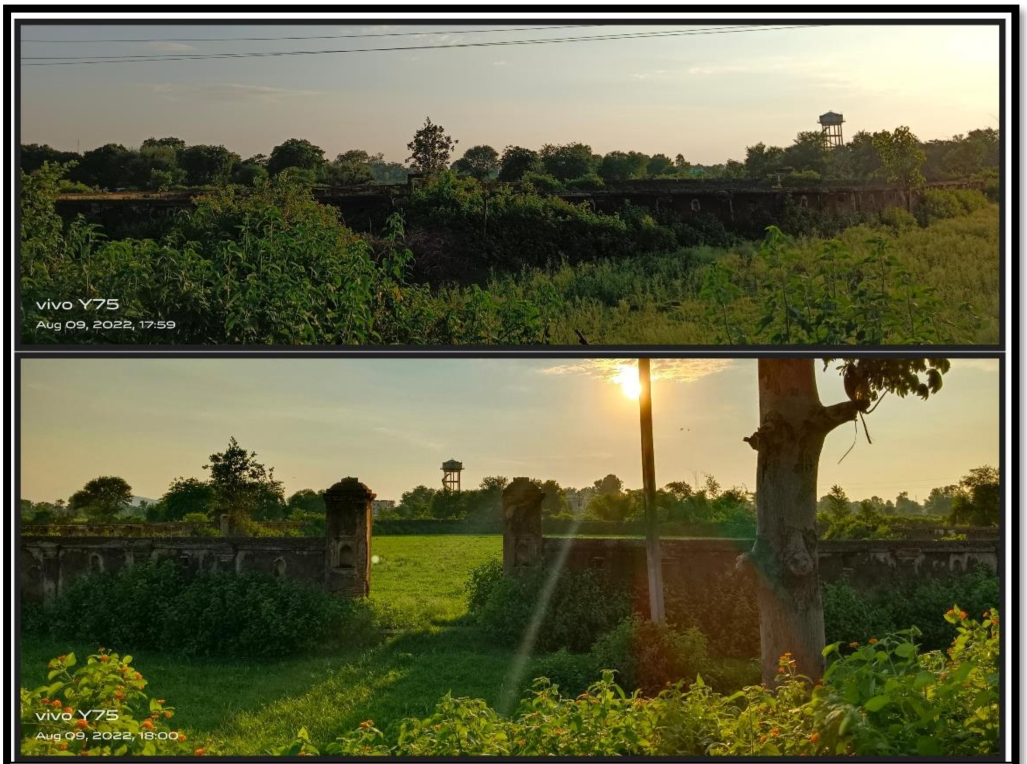
तालाब की पश्चिम दिशा में दीपदान स्तम्भ बना हुआ है, जिसमें 175 दीपक प्रज्ज्वलित किये जाते हैं, इन जलते हुए दीपकों का प्रतिबिम्ब तालाब में अत्यन्त मनोहारी लगता है।



चित्र संख्या 3.2.4 दीपदान स्तम्भ

3.2.5 अस्तबल

धार्मिक स्थल के मुख्य द्वार से पश्चिम की ओर गोलाकार बाउण्ड्री से घिरा हुआ एक अस्तबल है, इसे भी राजा विनायक राव ने बनवाया था। इस अस्तबल में चारो तरफ से चार द्वार बने हुए हैं।



चित्र संख्या 3.2.5 अस्तबल

पेशवा कालीन राजमहल (वर्तमान कोतवाली) से गणेश बाग तक गुप्त रास्ता है जो पेशवाओं के पारिवारिक सदस्यों के आने-जाने के लिए प्रयोग में लाया जाता था।

यह स्थान ऐतिहासिक महत्व की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। चित्रकूट आने वाला हर व्यक्ति इस स्थान पर घूमने के लिए आता है और यहां की ऐतिहासिक विरासत देखता व महसूस करता है। इस स्थान की भव्यता को देखकर लोगों के मन को शांति मिलती है इस स्थान पर पहुंचने के लिए चित्रकूट रेलवे स्टेशन और कर्वी बस स्टॉप से सीधे बैटरी रिक्शा मिलते हैं, जिसके द्वारा आसानी से इस स्थान पर पहुंचा जा सकता है।

अध्याय चतुर्थ

अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया

4.1 प्रस्तावना

जब कोई अनुसन्धानकर्ता अपनी अनुसन्धान समस्या से सम्बन्धित उद्देश्य और परिकल्पनाओं का निरूपण कर लेता है तब वह अपनी परिकल्पनाओं का अनुभवपरक सत्यापन करना चाहता है। अनुभवपरक सत्यापन के लिए परिकल्पनाओं से सम्बन्धित तथ्यों और आँकड़ों की आवश्यकता होती है। यह तथ्य या आँकड़े किस योजना या अनुसन्धान व्यूह नीति के आधार पर एकत्र किए जायें कि परिकल्पनाओं की वैज्ञानिक और अनुभवपरक जाँच की जा सके और विश्वसनीय तथा वैद्य परिणाम प्राप्त किए जा सकें। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि अनुसन्धानकर्ता उपयुक्त रीतिविधान का निर्धारण करे और उपयुक्त अभिकल्प का चयन करे। वैज्ञानिक अनुसन्धानकर्ता को भी अनुसन्धान समस्या के अध्ययन के लिए अनेक साधन जुटाने पड़ते हैं। प्रायः उसे अपनी अनुसन्धान समस्या के लिए अनुसन्धान अभिकल्प की आवश्यकता होती है।

एकॉफ (1953) के अनुसार, "अभिकल्प वह प्रक्रिया है जिससे किसी समस्या समाधान के लिए निर्णयों को क्रियान्वित किया जाता है। किसी अपेक्षित परिस्थिति को नियन्त्रित करने की दिशा में यह एक संकलित पूर्वानुमान की प्रक्रिया है।"

"Design is the process of making decisions before the situation arises in which the decision is to be carried out. It is a process of deliberate anticipation directed towards bringing the expected situation under control."

—R. L. Ackoff

करलिंगर (1978) के अनुसार, "अनुसन्धान अभिकल्प नियोजित अन्वेषण की वह योजना, संरचना तथा अनुसन्धान व्यूह नीति है जिसके आधार पर अनुसन्धान प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये जाते हैं और प्रसरण पर नियन्त्रण किया जाता है।"

"Research design is the plan, structures and strategy of investigation conceived so as to obtain answers to research questions and to control variance."

—F. N. Kerlinger

4.2 शोध विधि

प्रत्येक शोधकर्ता को अधिक विश्वसनीय एवं ठोस परिणामों की प्राप्ति हेतु कई विधियों का चयन करना होता है। शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु सर्वेक्षण विधि सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली विधि है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है क्योंकि यह विधि व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित न होकर पूरे समूह से सम्बन्धित होती है और इसमें अधिक से अधिक व्यक्तियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि को अपनाकर **गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन** करने का प्रयास किया है।

4.2.1 सर्वेक्षण विधि

सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द Survey का हिन्दी रूपान्तरण है। Survey शब्द दो शब्दों (sur + vey) से मिलकर बना है। Sur शब्द का अर्थ ऊपर और Vey का अर्थ देखना है अर्थात सर्वेक्षण का अर्थ ऊपर से देखना या निरीक्षण करना है। विभिन्न विद्वानों के अनुसार सर्वेक्षण को निम्न प्रकार समझा जा सकता है—

मोर्स (1934) के अनुसार, " संक्षेप में सर्वेक्षण किसी सामाजिक स्थिति अथवा समस्या अथवा जनसंख्या के परिभाषित उद्देश्यों हेतु वैज्ञानिक तथा व्यवस्थित रूप में विश्लेषण की एक पद्धति है।"

"The Survey is, in brief, simply a method of analysis in scientific and orderly forms and for defined purposes of a given social situation or problem or population."

—H. N. Morse, The Social Survey in Town and Country Areas,

फेयरचाइल्ड (1944) के अनुसार, " सामान्य शब्दों में एक समुदाय के सम्पूर्ण जीवन अथवा उसके किसी एक पक्ष जैसे– स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरञ्जन के सम्बन्ध में तथ्यों को व्यवस्थित, संकलित और विश्लेषण करने को ही सर्वेक्षण कहते हैं।"

"A term …….. used rather loosely to indicate a more or less orderly and comprehensive gathering and analysis of facts about the total life of a community or some phase of it e.g. health, education, recreation ……. ."

—Fairchild, Dictionary of Sociology

4.3 शोध अभिकल्प

बुन्देलखण्ड विश्विद्यालय, झाँसी द्वारा शोध के प्रारूप सम्बन्धी दिशा-निर्देश के अभाव में शोधर्थी द्वारा प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में APA Style एवं Kumaun University, Nainital द्वारा शोध हेतु निर्गत दिशा-निर्देशों का संयुक्त रूप से प्रयोग किया गया है।

(विस्तृत विवरण परिशिष्ट—V)

4.4 अध्ययन समष्टि

अनुसन्धान का अन्तिम लक्ष्य ऐसे सिद्धान्तों या सामान्यीकरणों का विकास करना है जो व्यक्तियों, घटनाओं या वस्तुओं के किसी समूह पर लागू होता है परन्तु ऐसे सिद्धान्त के विकास के लिए समूह के प्रत्येक सदस्य का अध्ययन करना सम्भव नहीं होता, न ही अक्सर आवश्यक होता है, विशेषकर उस स्थिति में जब समूह के सदस्यों की संख्या बहुत अधिक हो। सामान्यत: जिस समूह पर अनुसन्धान

परिणामों का सामान्यीकरण करना होता है। उसके कुछ सदस्यों को लेकर उन पर अध्ययन किया जाता है, उसे समष्टि कहते हैं।

यह उन सभी प्रेक्षणों का कुलक अथवा समुच्चय है जिनमें एक या एक से अधिक विशेषताएँ उभयनिष्ठ हैं तथा जो किसी अध्ययन का विषय है।

सैद्धान्तिक रूप से समष्टि किन्ही ऐसी इकाइयों या तत्वों का कुलक (सेट) हो सकता है, जिसमें अनुसन्धानकर्ता की रुचि हो।

4.4.1 प्रस्तुत लघु शोध हेतु अध्ययन समष्टि

प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में अध्ययन की मूल जनसंख्या जिनसे वाञ्छित सूचनाएँ संकलित की गयी हैं, वह है— **कर्वी नगर के विभिन्न उच्चतर माध्यामिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी**। इसमें कुल 157 विद्यार्थी लिए गए हैं, जिसमें 122 छात्र एवं 35 छात्राएं हैं।

4.5 प्रतिदर्श चयन

किसी भी शोध कार्य के लिए प्रतिदर्श का चयन करने से पूर्व उसके अर्थ को समझना आवश्यक होता है। प्रतिदर्श को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है—

प्रतिदर्श को न्यादर्श भी कहते हैं। प्रतिदर्श जनसंख्या का वह छोटा भाग है, जिसे अनुसन्धानकर्ता के द्वारा वास्तविक अध्ययन के लिए चयनित किया जाता है। प्रतिदर्श जनसंख्या का प्रतिनिधित्व सूक्ष्म-रूप होता है तथा इससे प्राप्त सूचनाओं का सामान्यीकरण करके जनसंख्या के बारे में अनुमान लगाया जाता है। प्रतिदर्श के अंग्रेजी पर्याय Sample का उद्भव लैटिन भाषा के Exemplum शब्द से हुआ है, जिसका अर्थ है—Example अर्थात उदाहरण इस शाब्दिक अर्थ से भी संकेत मिलता है कि प्रतिदर्श जनसंख्या की कुछ ऐसी इकाइयों का संकलन होता है, जिन्हें जनसंख्या की विशेषताओं को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण स्वरूप चुना जाता है।

गुडे और हाट (1960) के अनुसार, "प्रतिदर्श जैसा की इसके नाम से स्पष्ट है, विस्तृत समूह का छोटा प्रतिनिधि है।"

"A sample as the name applies is a smaller representation of a large whole."

—Methods in Social Research, Goode & Hatt.

यंग (1966) के अनुसार, "एक सांख्यिकीय प्रतिदर्श सम्पूर्ण समूह अथवा योग का ही एक अति छोटे आकार का चित्र है।"

"A statistical sample is a miniature picture or cross-section of the entire group or aggregate from which the sample is taken."

—Scientific Social Survey and Research, P.V. Young

प्रतिचयन, प्रतिदर्श चुनने की विधि है जिसमें पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाइयों का चुनाव किया जाता है। प्रतिदर्श की इकाइयों को चुनते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि चुना गया प्रतिदर्श उस सम्पूर्ण जनसंख्या या समष्टि (Universe) का प्रतिनिधित्व करे, जिससे वह प्रतिदर्श चुना गया है।

बोगार्ड्स के अनुसार, "पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाइयों का चुनाव ही प्रतिचयन कहलाता है।"

"Sampling is the selection of a certain percentage of a group of items according to a predetermined plan."

—Bogardus

4.5.1 प्रतिदर्श चयन की विधियाँ

प्रतिदर्श का चयन किसी न किसी प्रतिचयन विधि द्वारा किया जाता है। प्रतिचयन प्रक्रिया के लिये तकनीकी जानकारी और प्रशिक्षण आवश्यक है। प्रत्येक अध्ययनकर्ता प्रतिचयन नहीं कर सकता है।

वह प्रतिचयन तभी कर सकता है जब उसे प्रतिचयन पद्धतियों का आवश्यक ज्ञान हो या इस क्षेत्र में उसे प्रशिक्षण प्राप्त हो।

प्रतिदर्श चयन की विधियों को मुख्यतः दो समूहों में विभक्त किया जा सकता है—

(I) यादृच्छिक प्रतिचयन विधियाँ—यादृच्छिक प्रतिचयन विधियों में वे सारी विधियाँ आती हैं जिसमें किसी न किसी प्रकार का यादृच्छिकरण शामिल होता है। ऐसी विधियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है—

- संयोगिक प्रतिचयन
- वर्गबद्ध प्रतिचयन
- गुच्छ प्रतिचयन
- द्विस्तर प्रतिचयन

(II) गैर यादृच्छिक प्रतिचयन विधियाँ—गैर यादृच्छिक विधि में प्रतिदर्श के सदस्यों का चुनाव उनकी उपलब्धता और शोधकर्ता की सुविधा पर निर्भर करता है अर्थात् शोधकर्ता प्रतिदर्श में उन्हीं सदस्यों को रखता है जिन्हें वह आसानी से प्राप्त कर सकता है। इससे प्रतिदर्श में अधिक सदस्य लिए जा सकते हैं। इन विधियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है—

- उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन
- अंश प्रतिचयन
- आकस्मिक प्रतिचयन
- **सुविधानुसार प्रतिचयन**
- स्वेच्छानुसार प्रतिचयन

4.5.1.1 सुविधानुसार प्रतिचयन

सुविधानुसार प्रतिचयन का प्रयोग सर्वेक्षणात्मक शोध में किया जाता है जहाँ शोधकर्ता को तथ्य का सस्ता सन्निकटन प्राप्त करना हो। जैसा कि इस विधि के नाम से पता चलता है, इसमें प्रतिदर्श का चयन इसलिए किया जाता है क्योंकि यह सुविधाजनक होता है। इसे **अव्यवस्थित या आकस्मिक प्रतिचयन** भी कहा जाता है, क्योंकि यह विधि उन लोगों पर लागू होती है जो टहलते हुए अचानक मिल

जायें या उन लोगों पर लागू होती है जिसकी शोध में विशेष रुचि हो स्वयंसेवकों का उपयोग सुविधानुसार प्रतिचयन का एक उदाहरण है। इस विधि का प्रयोग परिणामों का सकल आकलन प्राप्त करने के लिए प्राथमिक अनुसन्धान प्रयासों के दौरान किया जाता है। इस विधि से प्रतिदर्श का चयन करने में कोई खर्च या समय व्यर्थ नहीं जाता।

प्रदत्त संकलन हेतु **सुविधानुसार प्रतिचयन विधि** का प्रयोग इसलिए किया गया क्योंकि कोरोना काल होने के कारण विद्यालयों/महाविद्यालयों का खुलना तथा उनमें शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का भौतिक रूप से आना-जाना अनिश्चित था। अधिकांश अध्ययन-अध्यापन ऑनलाइन माध्यम से हो रहा था। अतः शोधकर्ता द्वारा प्रदत्त संकलन गूगल फॉर्म के माध्यम से करने का निश्चय किया गया, इस हेतु महाविद्यालयों के शिक्षकों द्वारा अध्ययन-अध्यापन के लिए विद्यार्थियों के WhatsApp ग्रुप में गूगल फॉर्म का लिंक प्रेषित कर तथा मोबाइल रखने वाले कुछ विद्यार्थियों से सीधा सम्पर्क कर विद्यार्थियों का न्यादर्श रूप में चयन किया गया।

4.6 लक्षित प्रतिदर्श का चयन

लक्षित न्यादर्श के चयन हेतु निम्नांकित प्रक्रिया का अनुकरण किया गया—

4.6.1 जनपद का चयन एवं न्यायोचितता

जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है कि वर्तमान शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जनपद का चयन किया गया। चित्रकूट जनपद के अन्तर्गत कर्वी नगर, मऊ, मानिकपुर तथा राजापुर तहसीलें आती हैं जिसमें से न्यादर्श के चयन के लिए कर्वी नगर का चुनाव किया गया।

बुन्देलखण्ड के चित्रकूट जनपद की गिनती पिछड़े जिलों में होती है। इस जिले को विकास की मुख्यधारा में लाने हेतु अधिकाधिक शोध कार्य किये जाने की आवश्यकता है, इस आवश्यकता को समझते हुए शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य हेतु चित्रकूट जनपद का चुनाव किया। साथ ही शोधकर्ता जन्म से ही कर्वी नगर का निवासी है एवं यहीं रहकर अध्ययन कार्य कर रहा है, जिस कारण शोधकर्ता का इस नगर से भावनात्मक जुड़ाव भी है। अतः शोधकर्ता द्वारा अध्ययन हेतु न्यादर्श चयन में सुविधानुसार प्रतिदर्श विधि को अंगीकृत कर कर्वी नगर को चयनित किया गया।

4.6.2 संस्थाओं का चयन

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध गणेश बाग के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता द्वारा कर्वी नगर के विभिन्न उच्चतर माध्यामिक विद्यालयों में अध्ययनरत 157 विद्यार्थियों का चयन सुविधानुसार प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया (परिशिष्ट—VI) तथा उन्हें विभिन्न समूहों—छात्र-छात्राएँ, राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों में विभाजित किया गया, जिसका विवरण निम्नवत है–

तालिका संख्या 4.6.2.1
न्यादर्श वितरण तालिका

चर	वर्ग	संख्या	कुल संख्या
लिंग	छात्र	122	157
	छात्राएं	35	
विद्यार्थी स्तर	राजकीय/सहायता प्राप्त विद्यालय	100	157
	निजी विद्यालय	57	

तालिका संख्या 4.6.2.2
लिंग वार प्रतिदर्श को प्रदर्शित करती तालिका

क्रम संख्या	विद्यालय का नाम	छात्र	छात्राएं
1	केंद्रीय विद्यालय संगठन, कर्वी, चित्रकूट	24	15
2	राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, कर्वी, चित्रकूट		04
3	चित्रकूट इण्टर कॉलेज, कर्वी, चित्रकूट	45	07
4	जनसेवा इण्टर कॉलेज, कर्वी, चित्रकूट	07	
5	ज्ञान भारती इण्टर कॉलेज, कर्वी, चित्रकूट	19	05
6	बैजनाथ भारद्वाज सरस्वती विद्या मंदिर, कर्वी, चित्रकूट	15	
7	जे० एम ० सिंह बालिका इण्टर कॉलेज, कर्वी, चित्रकूट		02
8	श्री जी इंटरनेशनल हायर सेकेण्डरी स्कूल, कर्वी, चित्रकूट	03	
9	अशोक पब्लिक स्कूल, कर्वी, चित्रकूट	05	
10	बुइया बाई इण्टर कॉलेज, कर्वी, चित्रकूट	04	
11	सरस्वती बालिका विद्या मंदिर, कर्वी, चित्रकूट		02

योग	122	35
	157	

तालिका संख्या 4.6.2.3

राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के आधार पर विभाजन को प्रदर्शित करती तालिका

क्रम संख्या	विद्यालय का नाम	राजकीय/सहायता प्राप्त विद्यालय	निजी विद्यालय
1	केंद्रीय विद्यालय संगठन, कर्वी, चित्रकूट	39	
2	राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, कर्वी, चित्रकूट	04	
3	चित्रकूट इण्टर कॉलेज, कर्वी, चित्रकूट	50	
4	जनसेवा इण्टर कॉलेज, कर्वी, चित्रकूट	07	
5	ज्ञान भारती इण्टर कॉलेज, कर्वी, चित्रकूट		25
6	बैजनाथ भारद्वाज सरस्वती विद्या मंदिर, कर्वी, चित्रकूट		16
7	जे० एम ० सिंह बालिका इण्टर कॉलेज, कर्वी, चित्रकूट		02
8	श्री जी इंटरनेशनल हायर सेकेण्डरी स्कूल, कर्वी, चित्रकूट		03
9	अशोक पब्लिक स्कूल, कर्वी, चित्रकूट		05
10	श्री मती बुइया बाई इण्टर कॉलेज, कर्वी(चित्रकूट)		04
11	सरस्वती बालिका विद्या मंदिर, कर्वी, चित्रकूट		02
योग		**100**	**57**

4.7 प्रदत्तों की प्रकृति

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के रूप में विद्यार्थियों की जागरूकता जानने हेतु ' गणेश बाग के प्रति जागरूकता मापनी' का प्रयोग कर अनुक्रियायें प्राप्त की गयी हैं, जिसमे 30 प्रश्न हैं। तत्पश्चात उपकरण से प्राप्त अनुक्रियाओं का अंकन किया गया, अतः प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक है।

4.8 शोध उपकरण

उपकरण वे उपकरण हैं जिनका उपयोग करके अनुसन्धान में डाटा एकत्र किया जाता है। यह अध्ययन के लिए डाटा संग्रह का साधन बन जाता है। यह विश्वसनीय और सटीक होना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में तथ्यों के संकलन के लिये प्रायोगिक विधि में किसी उपकरण/यन्त्र का उपयोग होता है। इसके साथ-साथ निरीक्षणों का भी सहारा लिया जाता है। लेकिन जब अध्ययन प्रयोगात्मक विधि के अतिरिक्त अन्य वैज्ञानिक विधियों द्वारा किये जाते हैं तो तथ्यों के संकलन में मुख्यतः निम्न उपकरणों का उपयोग करते हैं—

- प्रेक्षण
- साक्षात्कार
- अनुसूची
- **प्रश्नावली**
- समाजमिति
- वैयक्तिक अध्ययन
- व्यक्तिवृत विधि
- वस्तुपरक मापनियाँ
    - (i) निर्धारण मापनी
    - (ii) पदांकन मापनी
    - (iii) चिह्नांकन सूची
- मनोवैज्ञानिक परीक्षण
    - (i) बुद्धि परीक्षण
    - (ii) अभियोग्यता परीक्षण

(iii) अभिरुचि सूची

(iv) व्यक्तित्व परीक्षण

- अभिवृत्ति मापनियाँ

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में प्रदत्त संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा शोध उपकरण के रूप में **स्वनिर्मित प्रश्नावली** का प्रयोग किया गया है।

4.8.1 प्रश्नावली

प्रश्नावली प्रश्नों की वह सूची है जो शोध समस्या के सम्बन्ध में बनायी जाती है और जिसकी सहायता से अध्ययन इकाइयों से तथ्यों का संकलन करके शोध समस्या का अध्ययन पूर्ण किया जाता है।

गुड और हॉट (1952) के अनुसार, "सामान्य रूप से प्रश्नावली का अर्थ, प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की उस प्रणाली से है जिसमें एक पत्रक, प्रारूप या प्रपत्र का उपयोग किया जाता है जिसे उत्तर दाता स्वयं भरता है।"

"In general the word questionnaire refers to a device for securing answers to questions by using a form which the respondent fills in himself."

— Goode and Hatt

लुण्डबर्ग (1957) के अनुसार, "मौलिक रूप से प्रश्नावली उद्दीपकों का वह समूह होता है जिसे शिक्षित लोगों के सामने, इन उद्दीपकों के अन्तर्गत उनके मौखिक व्यवहारों का निरीक्षण करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है।"

"Fundamentally, the questionnaire is a set of stimuli to which literate people are exposed in order to observe their verbal behaviour under these stimuli."

—Lundberg

4.8.2 स्वनिर्मित प्रश्नावली की आवश्यकता

शोधकर्ता के समक्ष उच्चतर माध्यमिक विद्यालयीन स्तर के विद्यार्थियों में गणेश बाग के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने के लिए कोई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध न होने के कारण स्व-निर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया। इसका निर्माण अध्ययन के लिए आवश्यक है। इस उपकरण का निर्माण अनुसन्धानकर्ता ने शोध समस्या के उद्देश्यों एवं समस्या के घटकों को ध्यान में रखकर किया है।

4.8.3 स्वनिर्मित प्रश्नावली निर्माण के सोपान

प्रस्तुत शोध हेतु गणेश बाग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया। प्रश्नावली निर्माण के सोपान निम्नवत हैं—

(i) प्रथम सोपान: सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

अनुसन्धानकर्ता द्वारा प्रश्नावली निर्माण से पूर्व सम्बन्धित साहित्य का व्यापक एवं गहन अध्ययन किया गया।

(ii) द्वितीय सोपान: विषय विशेषज्ञों से परामर्श

शोधकर्ता ने प्रश्नावली निर्माण हेतु विषय से सम्बन्धित विशेषज्ञों की राय ली तथा उनके परामर्श से प्रश्नावली के निर्माण के लिए क्षेत्र निर्धारित किये।

(iii) तृतीय सोपान: प्रश्नों का निर्माण

गणेश बाग से सम्बन्धित जागरूकता के अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा 31 प्रश्नों का निर्माण किया गया (परिशिष्ट—VII)। समस्या के उद्देश्य एवं न्यादर्श के स्तर के आधार पर संकलन हेतु बन्द प्रश्नावली का चयन किया गया। इनमें कथनों को विकल्पात्मक बनाया गया जिसमें चार विकल्प दिए गये; इन चार में से एक विकल्प को चुनना था।

(iv) चतुर्थ सोपान: विशेषज्ञों की राय

प्रश्नावली निर्माण के पश्चात इसे विशेषज्ञों को दिखाया गया। उनके द्वारा निरर्थक एवं दोहराव वाले प्रश्नों को हटाया गया तथा कुछ नवीन प्रश्न जोड़े गये। अतः सुझावों के पश्चात प्रश्नावली में प्रश्नों को क्रमवार रखा गया तथा अन्तिम रूप से कुल 30प्रश्न बने (परिशिष्ट–VIII)।

4.9 परीक्षण का प्रशासन

परीक्षण का प्रशासन गूगल फॉर्म के माध्यम से ऑनलाइन रूप में किया जाना था। इस हेतु सर्वप्रथम शोधकर्ता ने केन्द्रीय विद्यालय, चित्रकूट के प्रधानाचार्य डॉ० विनोद कुमार से मिलकर उन्हें इस जागरूकता प्रश्नावली के विषय में बताया। उन्होंने इसे प्रशासित करने की अनुमति दी तथा प्रश्नावली के लिंक को अपने व्हाट्स एप नम्बर पर भेजने के लिए कहा। उन्होंने इसको अपने विद्यालय के विद्यार्थियों के ग्रुप में भेज दिया।

इसी प्रकार शोधकर्ता चित्रकूट इण्टर कॉलेज, कर्वी, चित्रकूट में गया तथा प्रधानाचार्य से मिलकर उनसे प्रश्नावली को प्रशासित करने की अनुमति प्राप्त की। उनकी अनुमति से शोधकर्ता ने स्वयं कक्षाओं में जाकर प्रशिक्षुओं को इस प्रश्नावली के विषय में समझाया तथा अपने समक्ष ही प्रश्नावली को छात्रों के ग्रुप में भेजकर ऑनलाइन भरवाया।

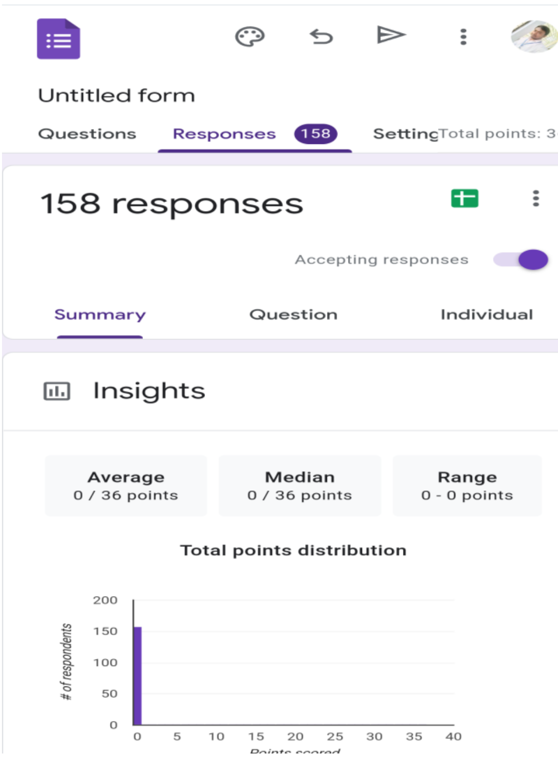
इसी प्रकार शोधकर्ता ज्ञान भारती इण्टर कॉलेज तथा बैजनाथ भारद्वाज सरस्वती विद्या मंदिर, कर्वी के प्रधानाचार्यो से मिला तथा उनकी सहायता से प्रश्नावली को विद्यार्थियों के व्हाट्सएप ग्रुप में भेजकर प्रश्नावली को भरवाया।

शोधकर्ता ने विद्यालयों में स्वयं जाकर वहाँ के अध्यापकों की सहायता से प्रश्नावली को छात्रों को ऑनलाइन भेजकर भरवाया।

गूगल फॉर्म के माध्यम से विद्यार्थियों के प्रत्युत्तर शोधार्थी को Gmail द्वारा प्राप्त हुए। कुछ विद्यार्थियों ने गूगल फॉर्म को एक से अधिक बार भर दिया। अतः उनके द्वारा भरे गये प्रथम गूगल फॉर्म को ही न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे विद्यार्थियों ने भी गूगल फॉर्म भरा जो शोध हेतु चयनित विद्यालयों में अध्ययनरत् नहीं थे। ऐसे विद्यार्थियों को पहचानकर शोधकर्ता द्वारा उन्हें न्यादर्श में सम्मिलित नहीं किया गया। न्यादर्श में दिनांक 25/08/2022 तक प्राप्त विद्यार्थियों की अनुक्रियाओं को ही न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। इस प्रकार अन्तिम रूप से कुल 157 विद्यार्थियों की न्यादर्श के रूप में अनुक्रियायें प्राप्त हुई।

4.10 परीक्षण का फलांकन

शोधकर्ता ने प्रश्नावली का निर्माण गूगल फॉर्म के माध्यम से क्विज के रूप में किया था जिसमें प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 अंक निर्धारित था। सही उत्तर के लिए 1 अंक तथा गलत उत्तर देने पर 0 अंक प्रदान किया गया। गूगल फॉर्म में response पर क्लिक करने पर वह स्वतः ही उसका फलांकन करके परिणाम प्रस्तुत कर देता है।



4.11 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

सांख्यिकी, गणित की वह शाखा है, जिसमें आँकड़ों का संग्रहण, प्रदर्शन, वर्गीकरण और उसके गुणों का आकलन तथा अध्ययन किया जाता है। सांख्यिकी एक गणितीय विज्ञान है, जिसमें किसी वस्तु/अवयव/तन्त्र/समुदाय से सम्बन्धित आँकड़ों का संग्रह, विश्लेषण, व्याख्या या स्पष्टीकरण और प्रस्तुति की जाती है।

एम० जी० कैण्डाल के अनुसार—" सांख्यिकी प्रदत्तों के संकलन तथा विश्लेषण और निष्कर्ष निकालने का विज्ञान है।"

"Statistics is the science of collecting, analyzing and interpreting numerical data."

—M.G. Kendall.

स्लिगमैन के अनुसार—"सांख्यिकी वह विज्ञान है जिसमें किसी क्षेत्र विशेष की जानकारी हेतु संख्यात्मक आँकड़ों के संकलन, वर्गीकरण, प्रस्तुतीकरण, तुलना और व्याख्या करने की विधियों का वर्णन होता है।"

"Statistics is the science which deals with the methods of collecting, classifying, presenting, comparing and interpreting numerical data collected to throw some light on any sphere of inquiry."

—Sligman.

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध में प्रश्नावली की सहायता से संग्रहित किए गये आँकड़ों से प्राप्त सूचनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन करने से पहले इनको एक निश्चित रूप प्रदान करना था। इसके लिए शोधकर्ता ने सामान्य सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया।

शोध के उद्देश्य तथा आँकड़ों की प्रकृति के आधार पर निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया—

- प्रतिशत
- मध्यमान
- प्रमाप विचलन
- वैषम्यता तथा कुकुदता
- सामान्य सम्भावना वक्र
- क्रान्तिक अनुपात
- दण्ड आरेख

4.11.1 प्रतिशत (Percentage)

प्रतिशत गणित में किसी अनुपात को व्यक्त करने का एक तरीका है। इसे (%) द्वारा व्यक्त किया जाता है। प्रतिशत को ज्ञात करने का सूत्र निम्नवत है—

प्रतिशत(%) = (प्राप्तांक/ पूर्णांक)×100

4.11.2 मध्यमान (Mean)

मध्यमान को समान्तर माध्य या अंकगणितीय माध्य भी कहा जाता है।

किंग के अनुसार—"समंक माला के पदों के योग में उनकी संख्या से भाग देने पर जो अंक प्राप्त होता है उसी को अंकगणितीय माध्य या मध्यमान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

"The arithmetic average may be defined as the sum of aggregate of a series of items, divided by their number."

—W. I. King

मध्यमान प्राप्तांकों का केन्द्रीय मान होता है जो सभी आँकड़ों का प्रतिनिधित्व करता है। मध्यमान के आधार पर एक समूह की दूसरे समूह से तुलना की जाती है।

मध्यमान की गणना निम्नलिखित सूत्र के द्वारा की जाती है—

$$\overline{X} = \frac{\sum X}{N}$$

यहाँ—

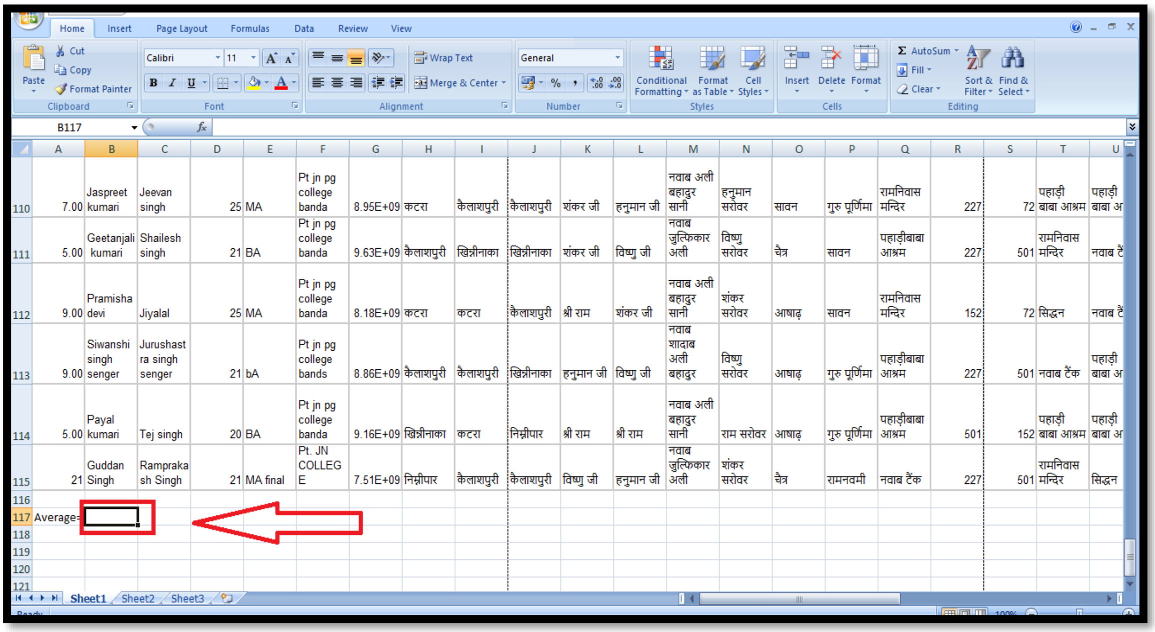
$\bar{x}$ = मध्यमान

$\sum x$ = प्राप्तांकों का योग

N = विद्यार्थियों की कुल संख्या

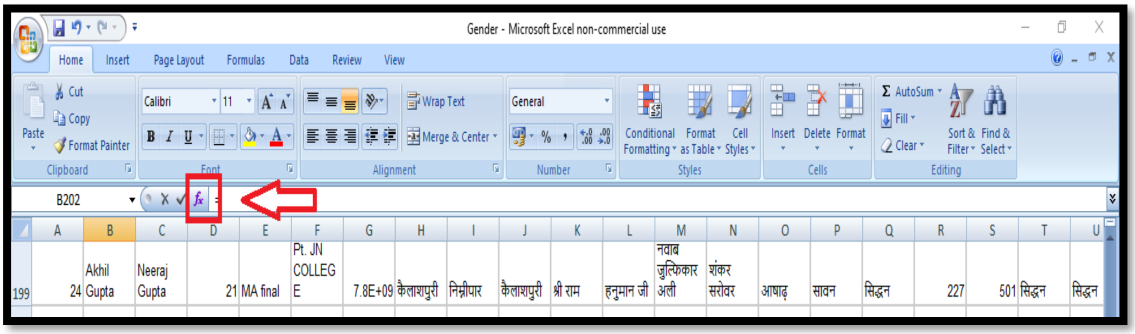
मध्यमान की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण—

(i) किसी भी संख्या समूह का मध्यमान निकालने के लिए एक्सेल के **AVERAGE** Function का प्रयोग करते हैं। एक्सेल स्प्रेडशीट में संख्याओं को प्रविष्ट करके जहाँ पर एवरेज जानना चाहते हैं, वहाँ पर क्लिक करें।

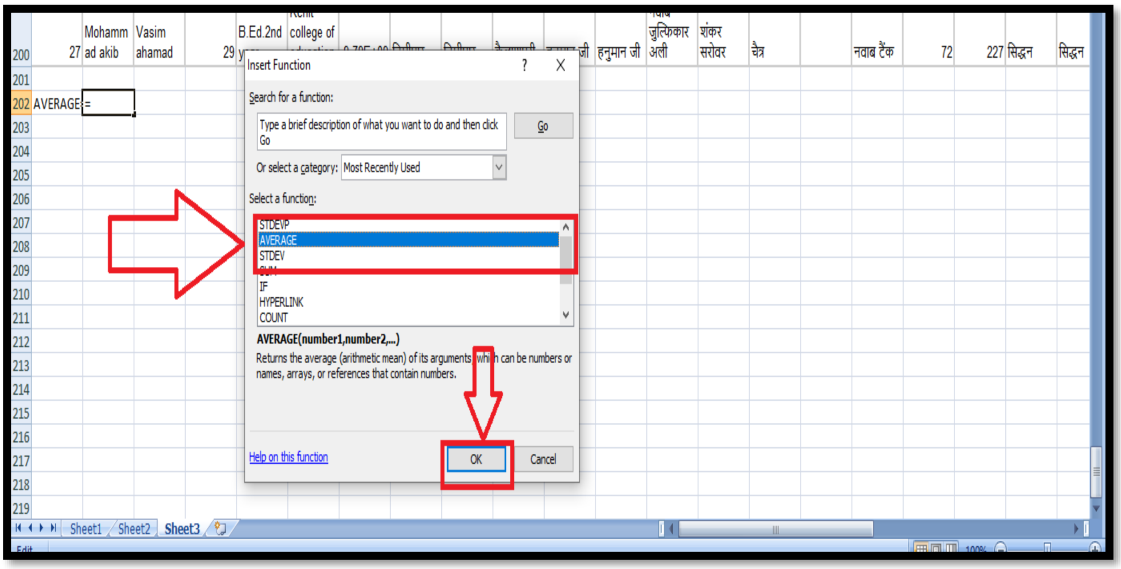


(ii) Formulas में क्लिक करें और 'Insert Function' tab को चुनें।

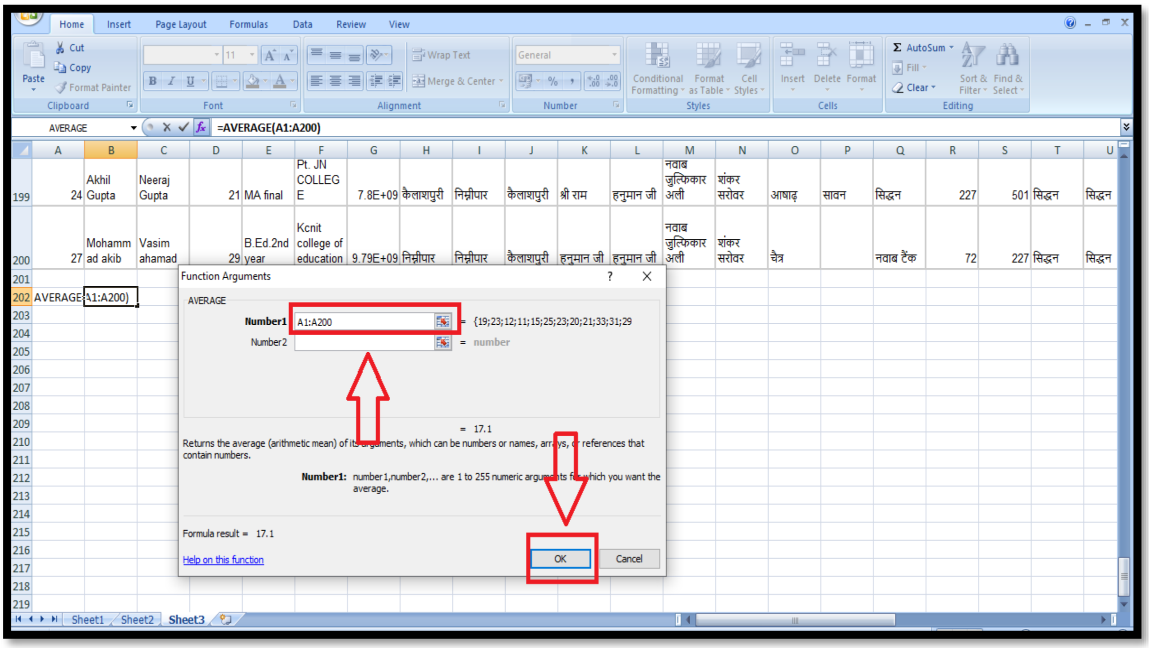
एक्सेल स्प्रेडशीट की row या column में enter करें।



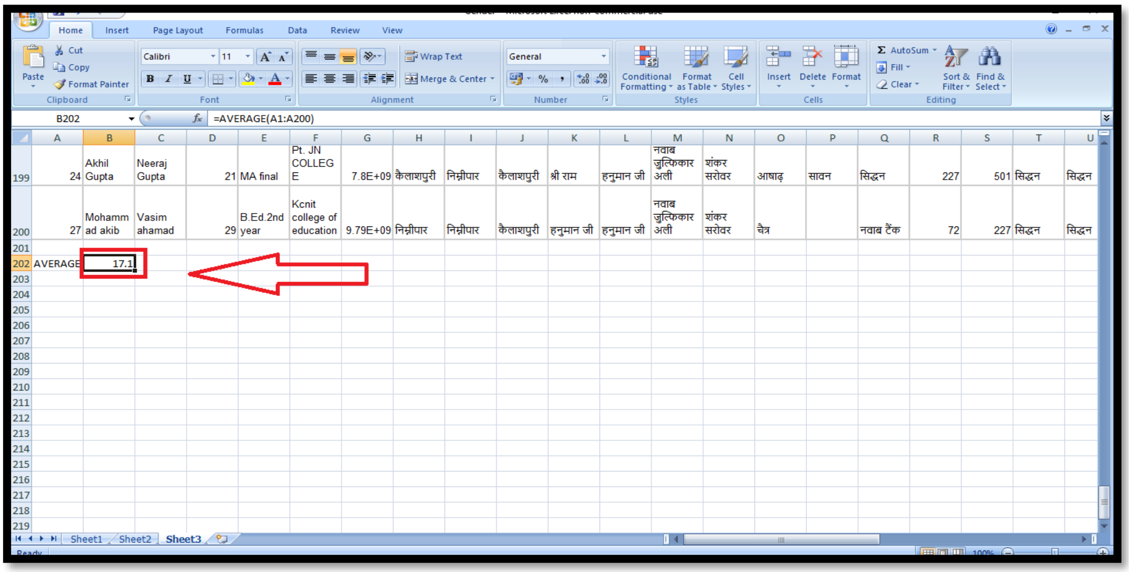
(iii) नीचे स्क्रॉल करें और **AVERAGE** Function चुनें।



(iv) नम्बर 1 box में आपके नम्बर की लिस्ट के लिए, एक cell range (जैसे—A1:A200) enter करें और ok क्लिक करें।



(v). अब आपके द्वारा चुनी हुई cell में उस लिस्ट का मध्यमान (average) नजर आयेगा।



जब आपको इस फंक्शन का प्रयोग करने की आदत हो जायेगी फिर आप 'Insert Function' feature process का इस्तेमाल करना बन्द कर सकते हैं और इसकी जगह पर cell में सीधे इस सूत्र को type कर सकते हैं—

- Mean- "=AVERAGE (cell range)"

  e.g. "AVERAGE (A1:A200)"

4.11.3 प्रमाप विचलन (Standard Deviation)

प्रमाप विचलन समंक माला के विभिन्न पदों के समान्तर माध्य से लिए गये विचलनों के वर्गो के समान्तर माध्य का वर्गमूल होता है।

एलहान्स के अनुसार— "मानक विचलन अंकगणितीय माध्य से मापे गये विचलनों के वर्गों के माध्य का वर्गमूल होता है।"

"Standard deviation is the square root of the arithmetic average of the squares of deviations measured from the mean."

—Elhance.

प्रमाप विचलन को मानक विचलन या प्रामाणिक विचलन भी कहा जाता है। इसका संकेताक्षर **σ** है।

प्रमाप विचलन की गणना करने का सूत्र निम्नलिखित है—

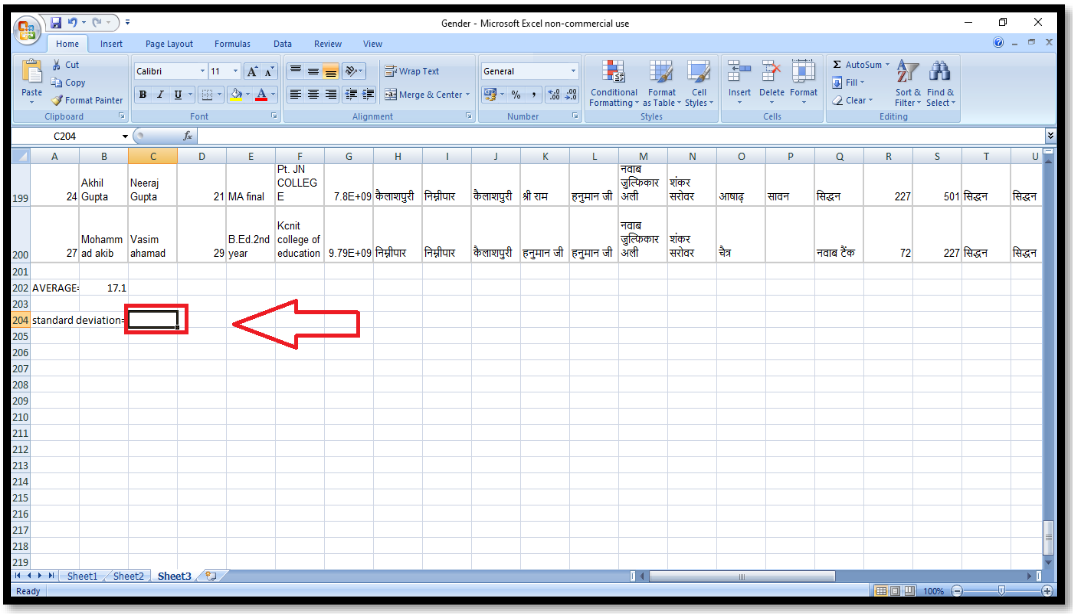
$$\sigma = \sqrt{\frac{\sum (x - \text{mean})^2}{n}}$$

- x is a set of numbers
- mean is the average of the set of numbers
- n is the size of the set
- σ is the standard deviation

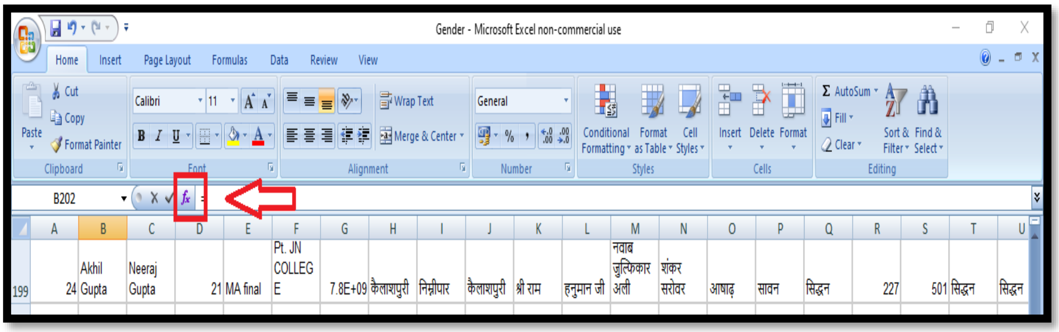
प्रमाप विचलन की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण—

(i) प्रमाप विचलन की गणना के लिए **STDEVP** Function का प्रयोग करें।

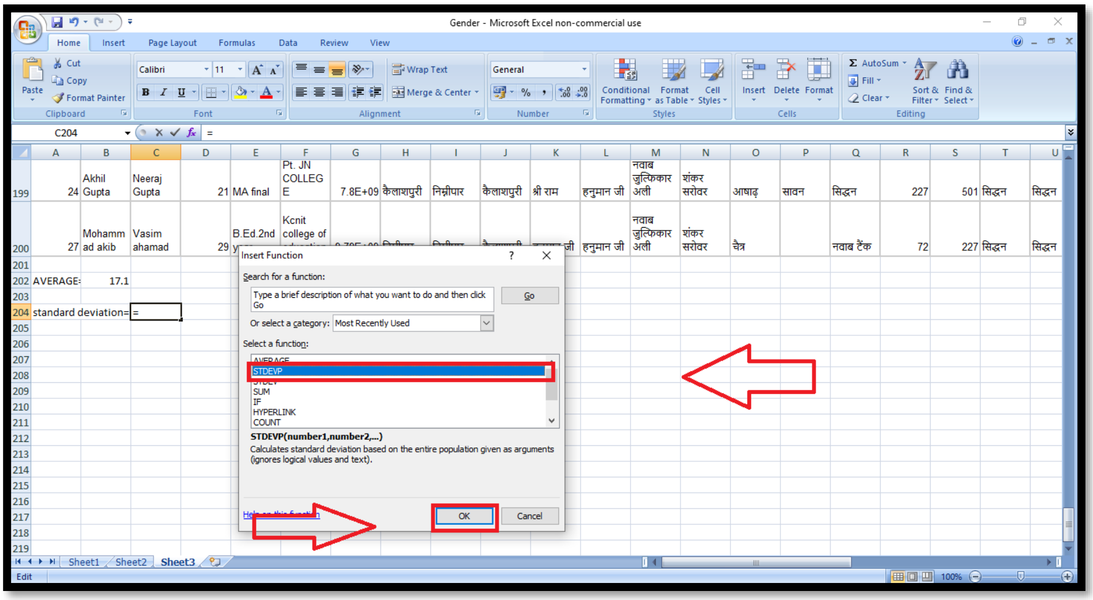
आपके कर्सर को उस जगह पर रखें, आप जहाँ इसे देखना चाहते हैं।



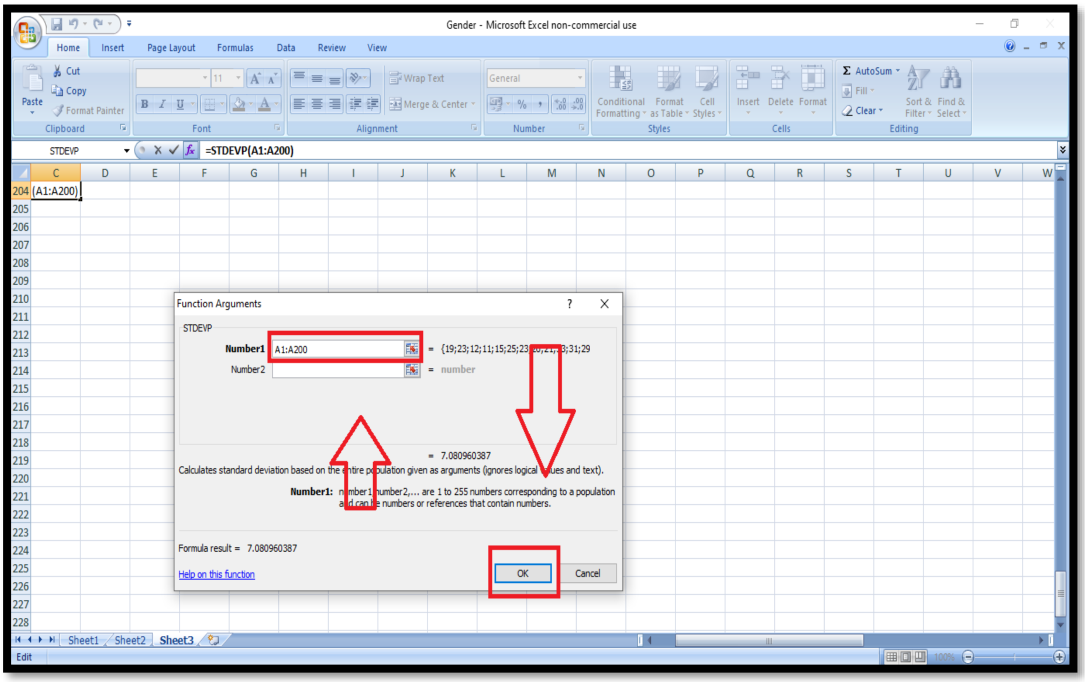
(ii). FORMULAS पर क्लिक करें और एक बार फिर से **Insert Function tab** चुनें।



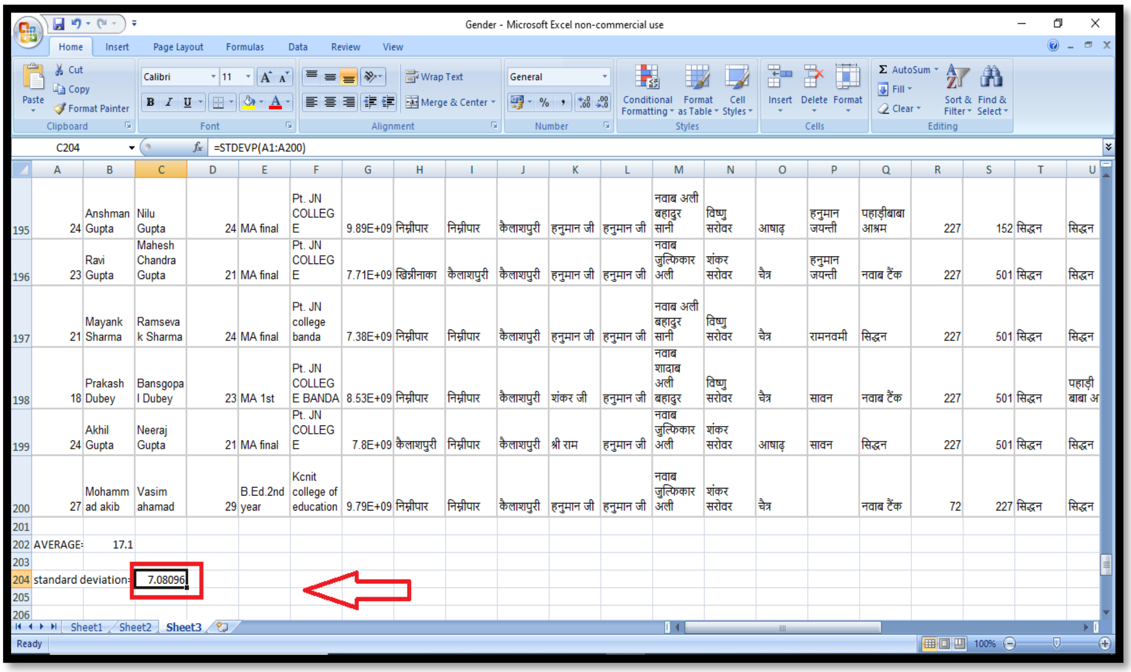
(iii). Dialog box पर scroll down करें और **STDEVP** Function चुनें।



(iv) नम्बर 1 box में आपके नम्बर की लिस्ट के लिए cell range enter करें और ok करें।



(v) अब आपके द्वारा चुनी हुई cell में उस लिस्ट का प्रमाप विचलन नजर आयेगा।



जब आपको इस फंक्शन का प्रयोग करने की आदत हो जायेगी फिर आप Insert Function feature process का प्रयोग करना बन्द कर सकते हैं और इसकी जगह पर cell में सीधे सूत्र को type कर सकते हैं।

- Standard Deviation- "STDEVP (Cell range)

  e.g. "STDEVP (A1:A200)"

4.11.4 वैषम्यता तथा कुकुदता (Skewness and Kurtosis)

वैषम्यता से तात्पर्य सामान्य वक्र में होने वाले अपसरण से है, जो किसी जनसंख्या के माध्य और माध्यिका में होने वाले अंतर से उत्पन्न होता है। सामान्य वक्र में माध्य, माध्यिका तथा बहुलांक वक्र की आधार रेखा के मध्य एक ही बिन्दु पर पड़ते हैं तथा इन तीनों का मान भी संख्यात्मक रूप से भी बराबर होता है। इसके फलस्वरूप सामान्य वक्र का चित्र काफी सन्तुलित दिखाई पड़ता है क्योंकि इसका दायाँ और बायाँ भाग समान ढाल वाला और एक दूसरे के बराबर होता है। परन्तु जब वितरण सामान्य न होकर विषम होता है तो माध्य तथा माध्यिका एक ही बिन्दु पर न पड़कर अलग-अलग पड़ते हैं और प्राप्तांकों का केन्द्रीकरण वितरण के बायीं या दायीं ओर हो जाता है। सामान्य वक्र में माध्य और माध्यिका दोनों बराबर होते हैं इसलिए विषमता शून्य होती है, परन्तु विषम वितरण में माध्य और माध्यिका में अन्तर होता है, यह अन्तर जितना ज्यादा होता है; विषमता उतनी अधिक होती है।

'विषमता' को इन दो 'सूत्रों' द्वारा ज्ञात किया जा सकता है–

(क) $$Sk = \frac{3\,(\text{माध्य} - \text{मध्यिका})}{\sigma}$$

यहाँ – Sk = विषमता, σ = मानक विचलन।

(ख) $$Sk = \frac{(P_{99} + P_{10})}{2} - P_{50}$$

जहां, SK = विषमता

P_{90} = प्रतिशतता 90

P_{10} = प्रतिशतता 10

P_{50} = प्रतिशतता 50 या मध्यिका

सामान्य वैषम्यता प्रसार

- If skewness is less than -1 or greater than 1, the distribution is highly skewed.
- If skewness is between -1 and -0.5 or between 0.5 and 1, the distribution is moderately skewed.
- If skewness is between -0.5 and 0.5, the distribution is approximately symmetric.

एक 'आवृत्ति वितरण वक्र', प्रसामान्य वक्र की तुलना में कितना **चपटा** अथवा **शिखरीय** है, इसकी जानकारी **कुकुदता** से मिलती है।

'ककुदता या 'कुर्टोसिस' को नीचे दिये गये 'सूत्र' द्वारा निकाला जा सकता है।

$$Ku = \frac{Q}{(P_{90} + P_{10})}$$ (प्रतिशत के आधार पर वक्रता को निकालना।)

जहां, Ku = ककुदता

Q = चतुर्थक विचलन

P_{90} = प्रतिशतता 90

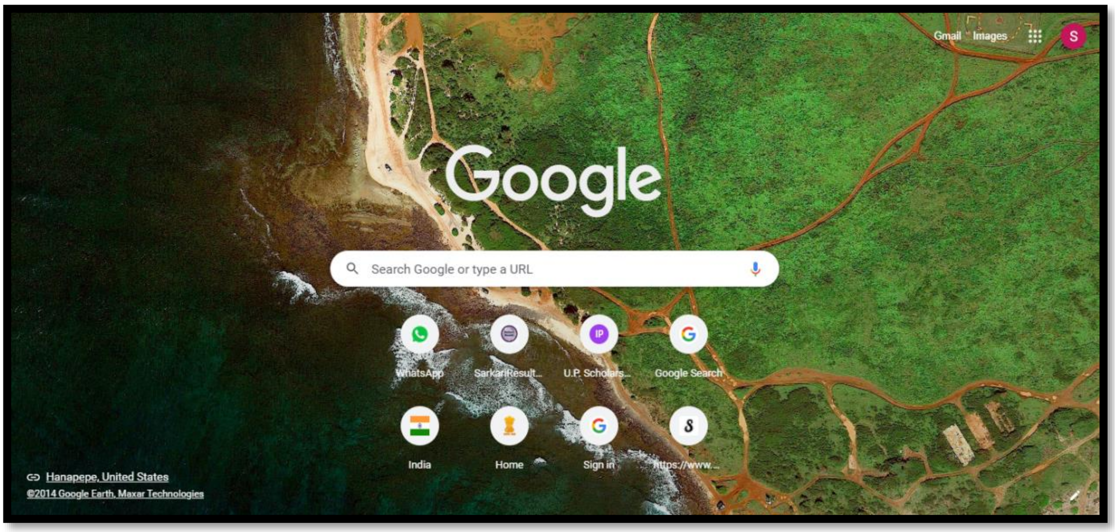
P_{100} = प्रतिशतता 10

सामान्य कुकुदता प्रसार

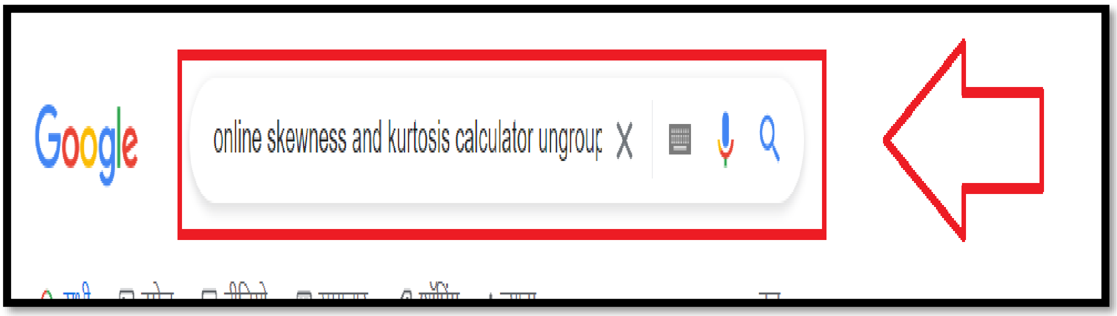
A standard normal distribution has kurtosis of 3 and is recognized as mesokurtic. An increased kurtosis (>3) can be visualized as a thin "bell" with a high peak whereas a decreased kurtosis corresponds to a broadening of the peak and "thickening" of the tails.

ऑनलाइन वैषम्यता और कुकुदता ज़ात करने के चरण—

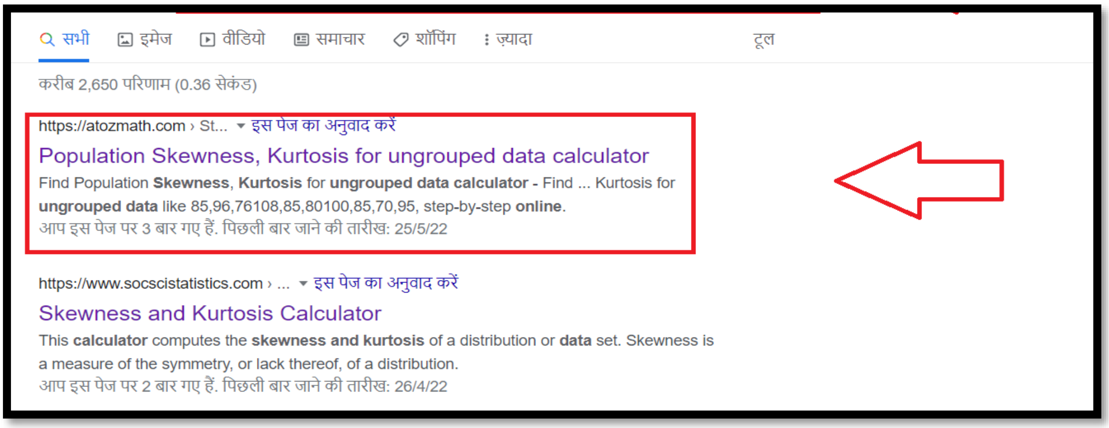
Step 1: सबसे पहले गूगल क्रोम ब्राउज़र को खोलें।



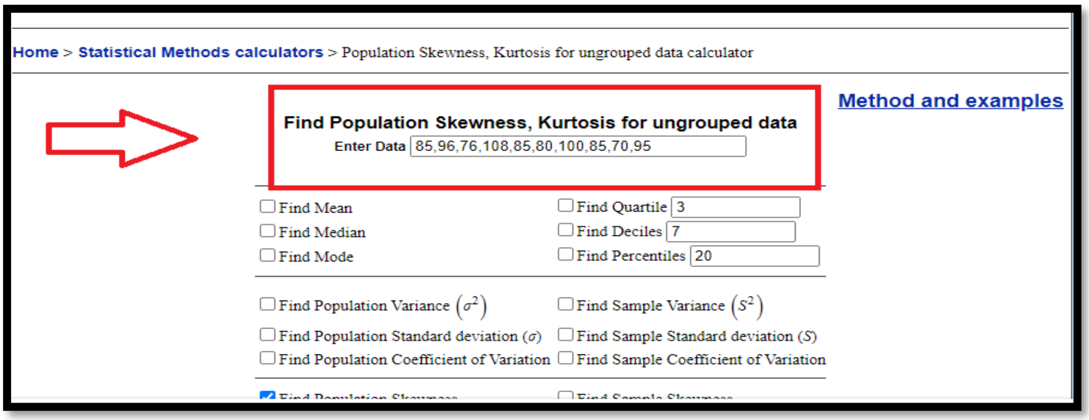
Step 2: Online Skewness and Kurtosis ungrouped data खोजें।



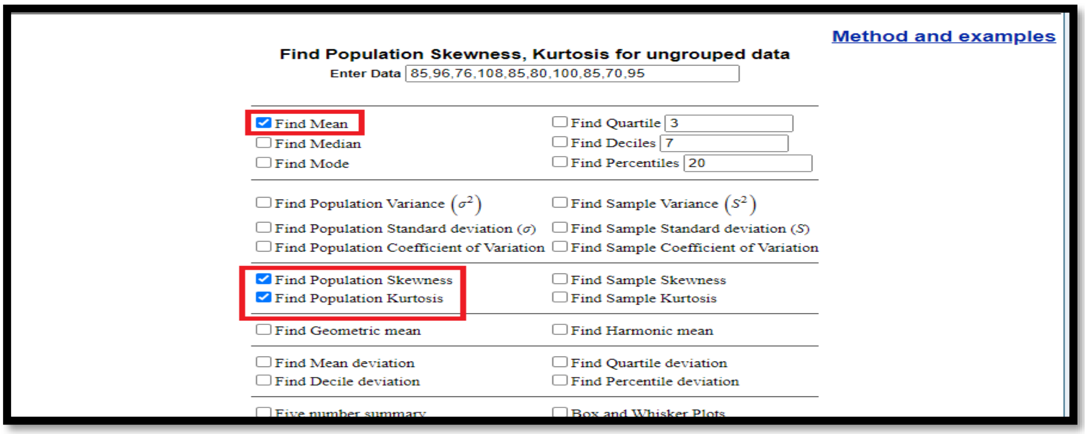
Step 3: पहले सर्च रिजल्ट (A to Z math) को खोलें।



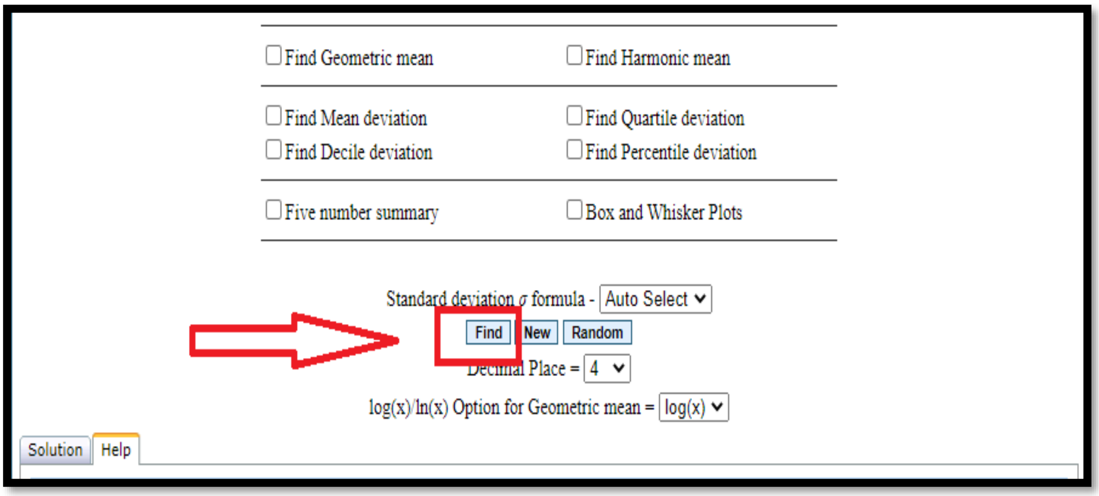
Step 4: Data enter करें।



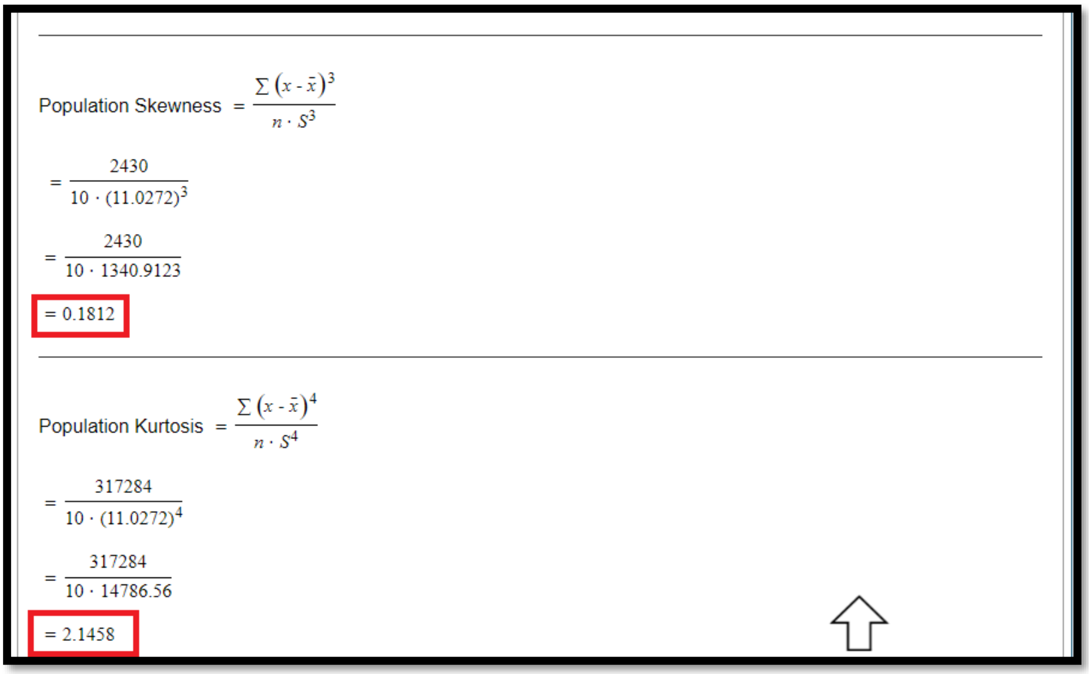
Step 5: Mean, Skewness तथा Kurtosis option को select करें।



Step 6: Find पर click करें।



Step 7: आपका Result आपके सामने Open हो जायेगा।



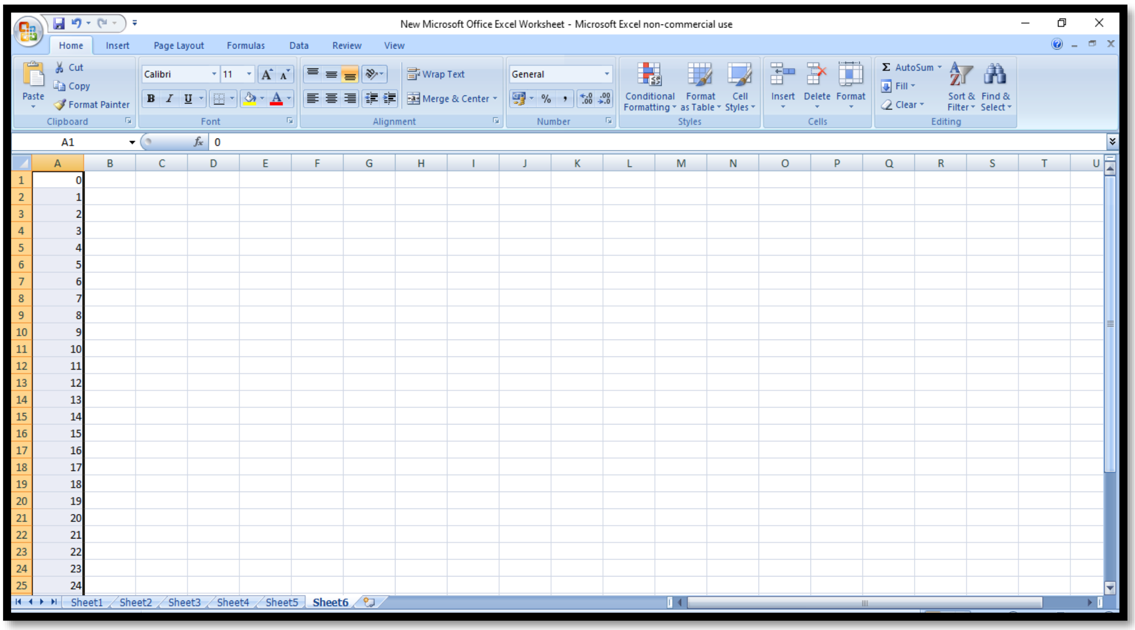
4.11.5 सामान्य सम्भाव्यता वक्र (Normal Probability Curve)

सामान्य सम्भाव्यता वक्र को सामान्य वक्र भी कहते हैं। इसका विकास 'त्रुटि के नियम' के आधार पर हुआ है। इस वक्र के जन्मदाता **ए० डी० मोरे** कहे जाते हैं। वे एक फ्रेंच गणितज्ञ थे और उन्होंने जुएं के खेल में संयोग की घटना की व्याख्या सामान्य सम्भाव्यता के आधार पर की। खगोलविद **कार्ल फ्रेडरिक गॉस** ने भी भौतिक विज्ञान में निरीक्षण सम्बन्धित त्रुटियों की व्याख्या सामान्यता के आधार पर की तथा त्रुटियों का सामान्य वक्र बनाया।

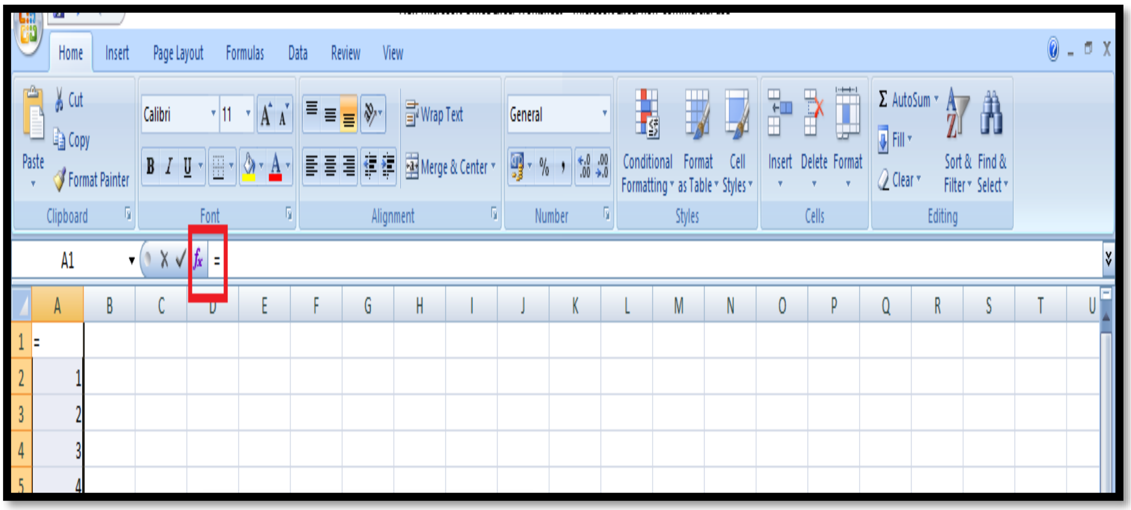
सामान्य वितरण की विशेषता यह होती है कि वितरण के मध्य में सर्वाधिक प्राप्तांक होते हैं तथा क्रमशः दोनों किनारों पर घटते जाते हैं। इसी सामान्य वितरण के आधार पर जो वक्र बनता है, उसे सामान्य वितरण वक्र या सामान्य सम्भाव्यता वक्र या सामान्य वक्र कहते हैं। यह वक्र सममित होता है तथा इसकी ऊँचाई मध्य में सर्वाधिक होती है। दोनों किनारों की ओर इसकी ऊँचाई घटती जाती है परन्तु आधार रेखा को स्पर्श नहीं करती है।

सामान्य सम्भाव्यता वक्र की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण—

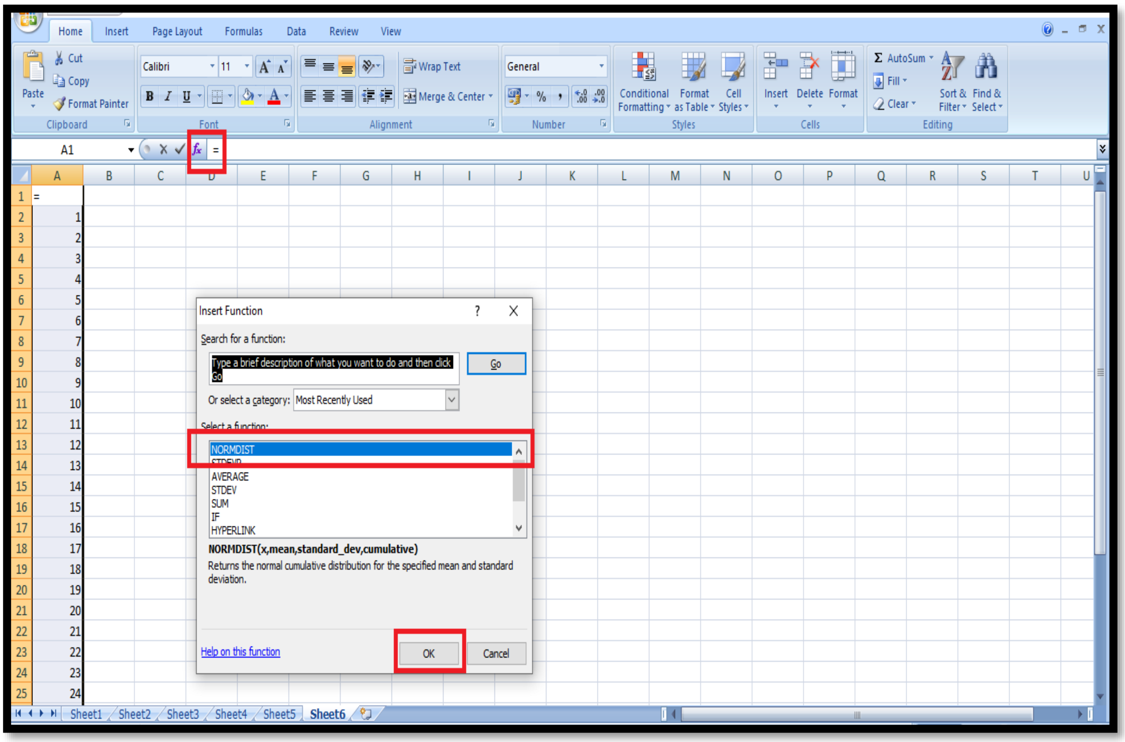
Step 1: Ms Excel में first cell lowest range से लेकर highest range तक data enter करें।



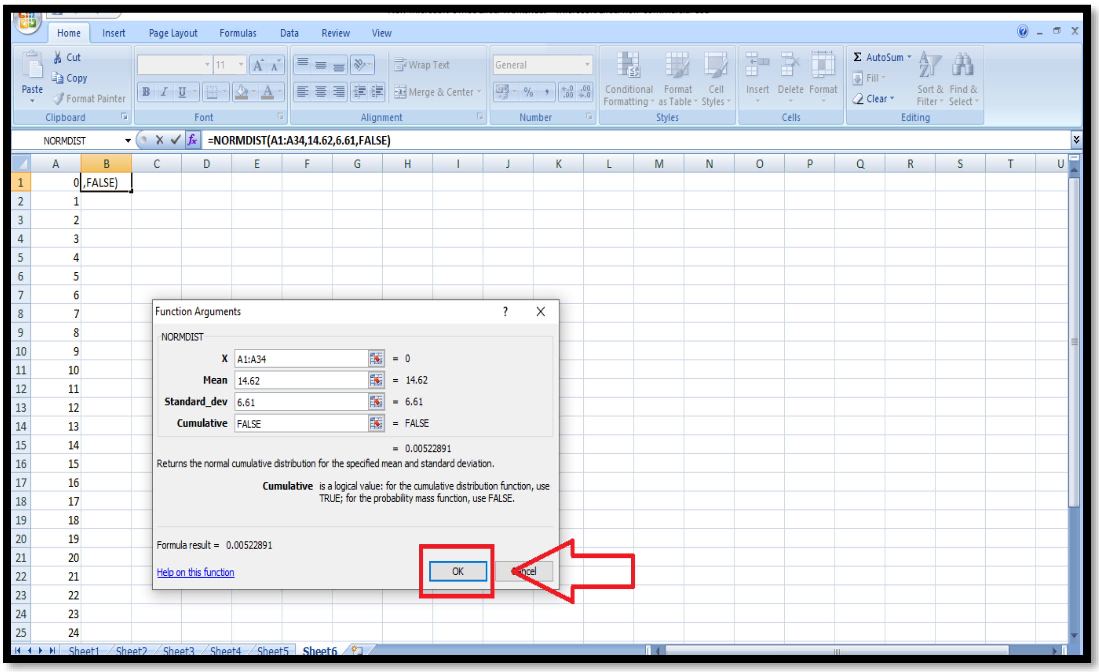
Step 2: Function option पर click करें।



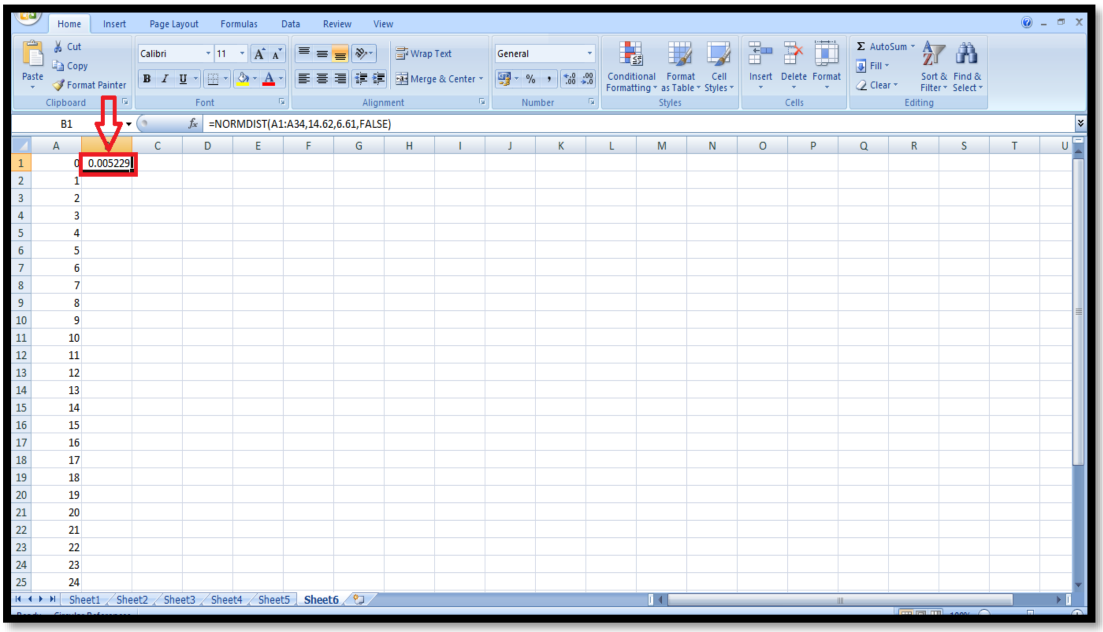
Step 3: NORMDIST को सेलेक्ट करें।



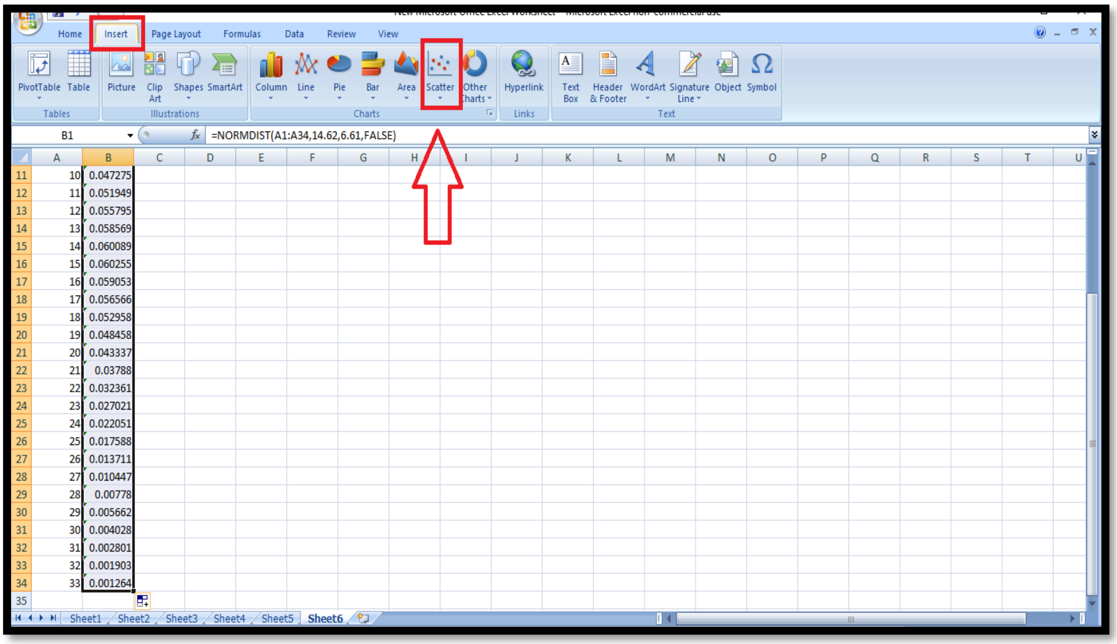
Step 4: Cell range, Mean, Standard deviation तथा Cumulative Frequency को भरें।



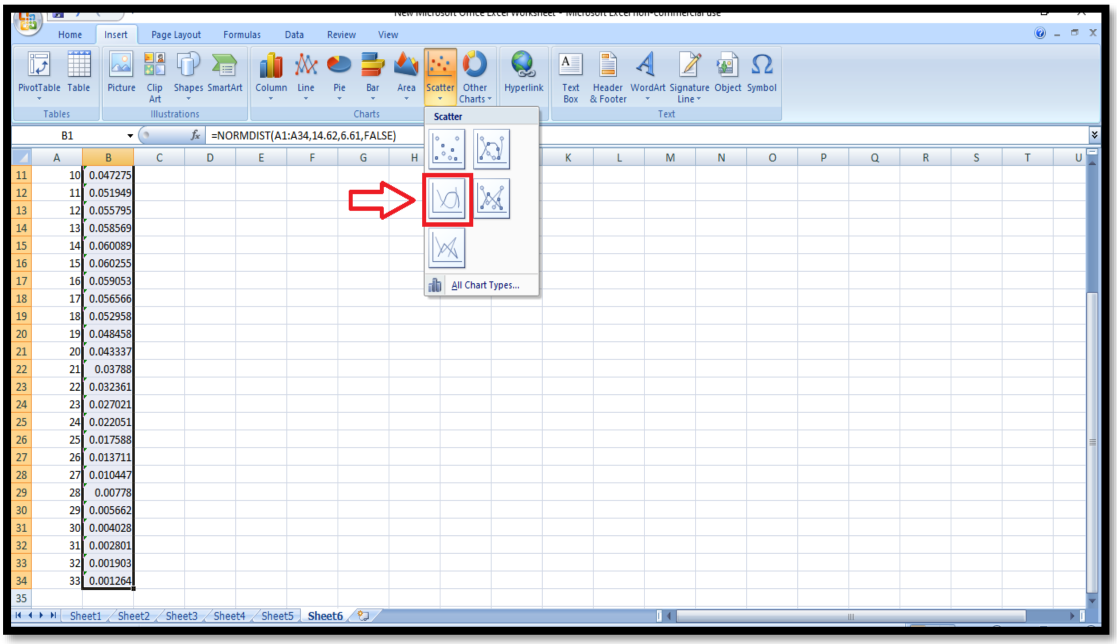
Step 5: चयनित cell तक Drag करें।



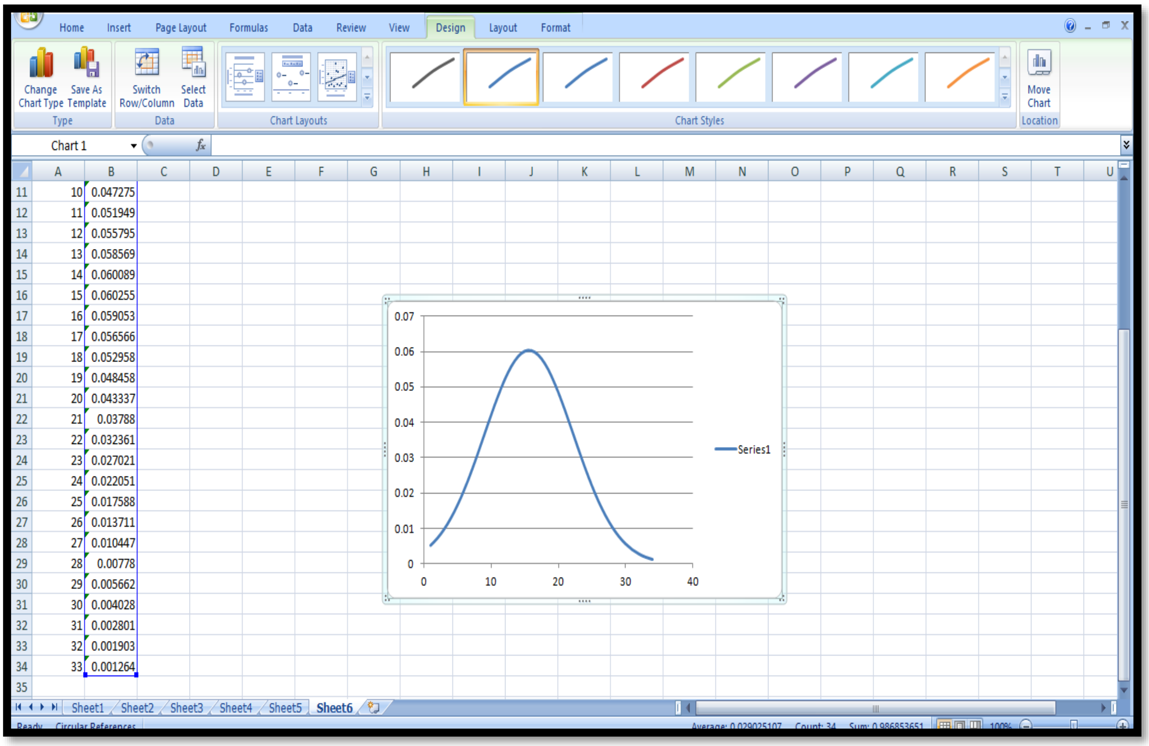
Step 6: Insert option पर जाकर Scatter को select करें।



Step 7: Scatter with smooth lines select करें।



Step 8: अब आपको NPC नजर आएगा।



4.11.6 क्रान्तिक अनुपात (Critical Ratio)

दो समूहों के मध्यमानों के मध्य अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग तब किया जाता है जब समूह के प्राप्तांकों की संख्या 30 या 30 से अधिक होती है। क्रान्तिक अनुपात की गणना निम्नलिखित सूत्र के द्वारा की जाती है—

$$t = \frac{(X_1 - X_2)}{\sqrt{\frac{(S_1)^2}{n_1} + \frac{(S_2)^2}{n_2}}}$$

जहाँ–

X_1 = पहले समूह का मध्यमान

X_2 = दूसरे समूह का मध्यमान

n_1 = पहले समूह का आकार

n_2 = दूसरे समूह का आकार

S_1 = पहले समूह का प्रमाप विचलन

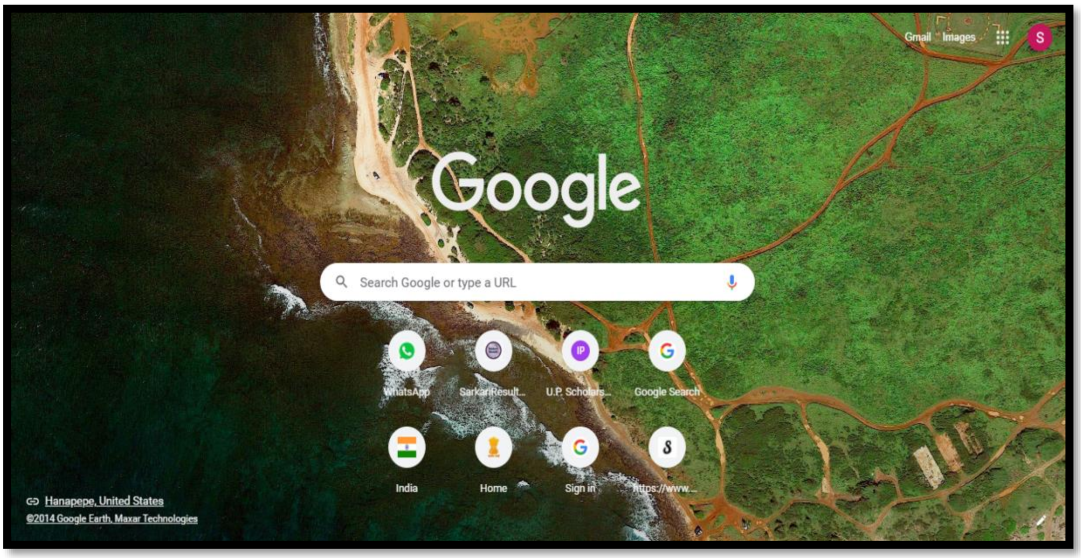
S_2 = दूसरे समूह का प्रमाप विचलन

स्वतन्त्रता की कोटि (df) को सूत्र– $df = (N_1+N_2) - 2$ द्वारा ज्ञात किया गया है। क्रान्तिक अनुपात गणना मान की सार्थकता टी- तालिका में .05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान से तुलना करके ज्ञात किया जाता है।

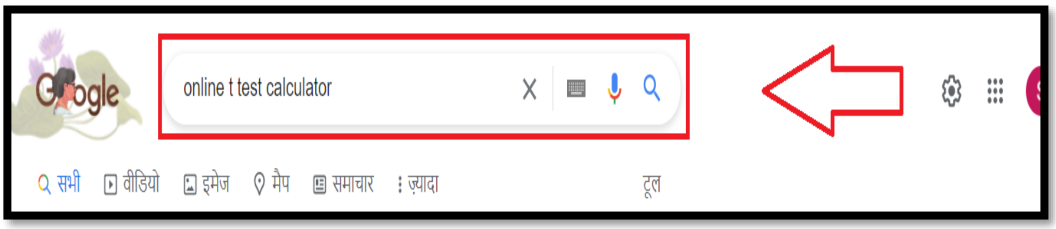
क्रान्तिक अनुपात की online गणना के चरण—

Online माध्यम से क्रान्तिक अनुपात की गणना निम्नलिखित चरणों में करते हैं—

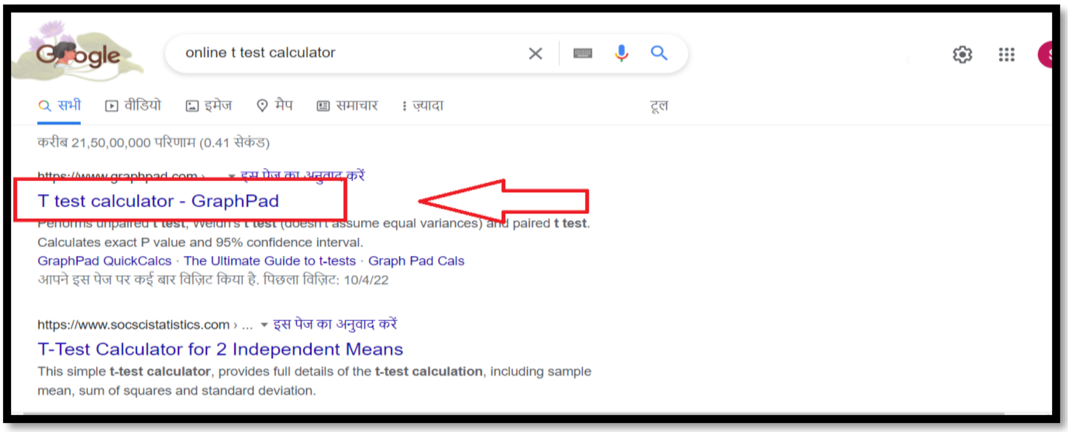
Step 1: सर्वप्रथम Google chrome browser को open करते हैं।



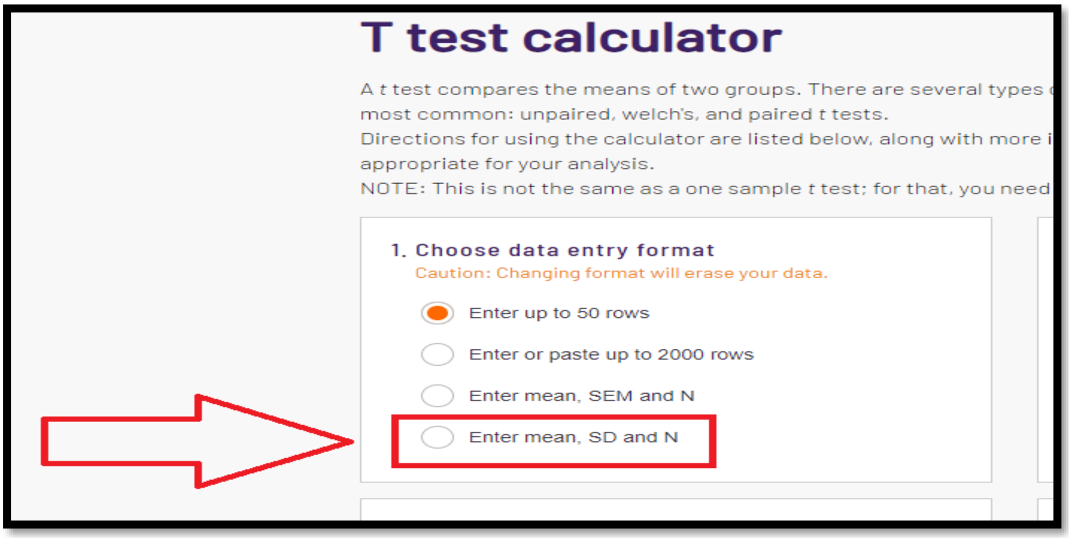
Step 2: Chrome में online t-test calculator search करते हैं।



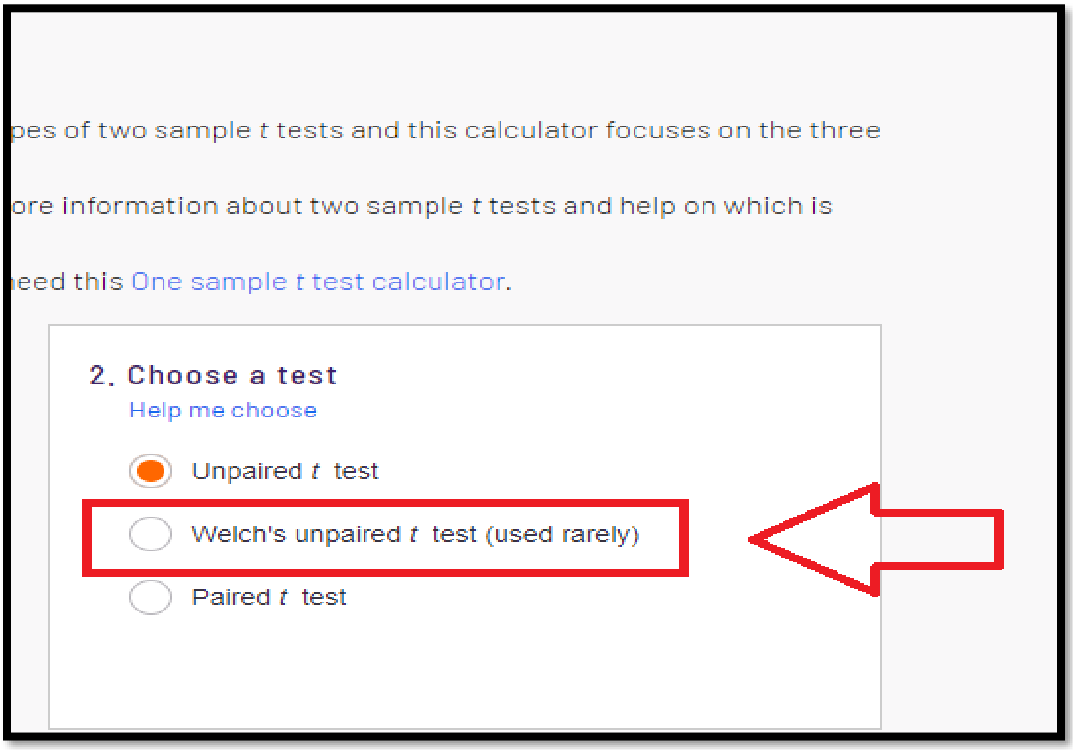
Step 3: विभिन्न search results में से प्रथम calculator (graph pad) को open करते हैं।



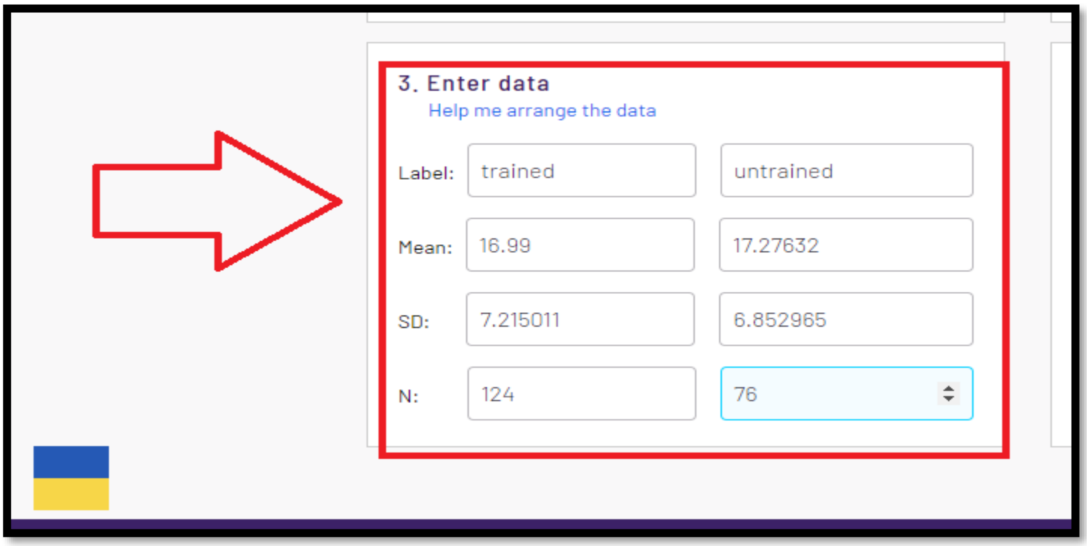
Step 4: Mean, S.D. तथा N Data fill करने वाले option पर क्लिक करते हैं।



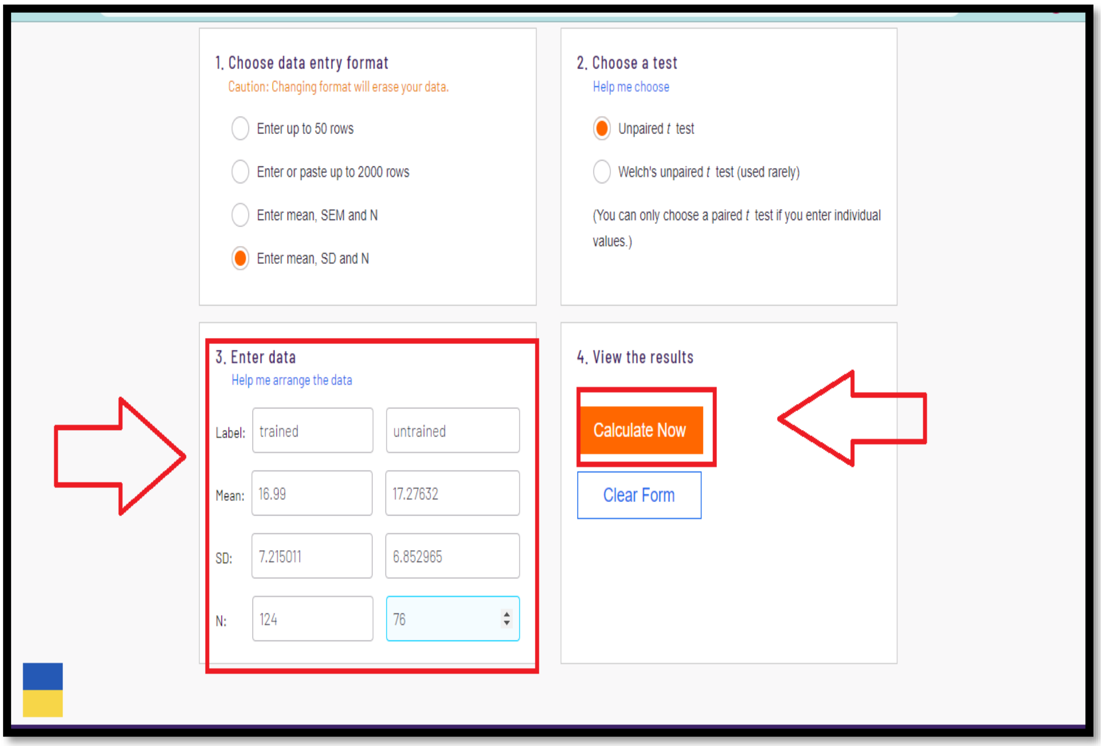
Step 5: Welch's unpaired t-test को चुनते हैं।



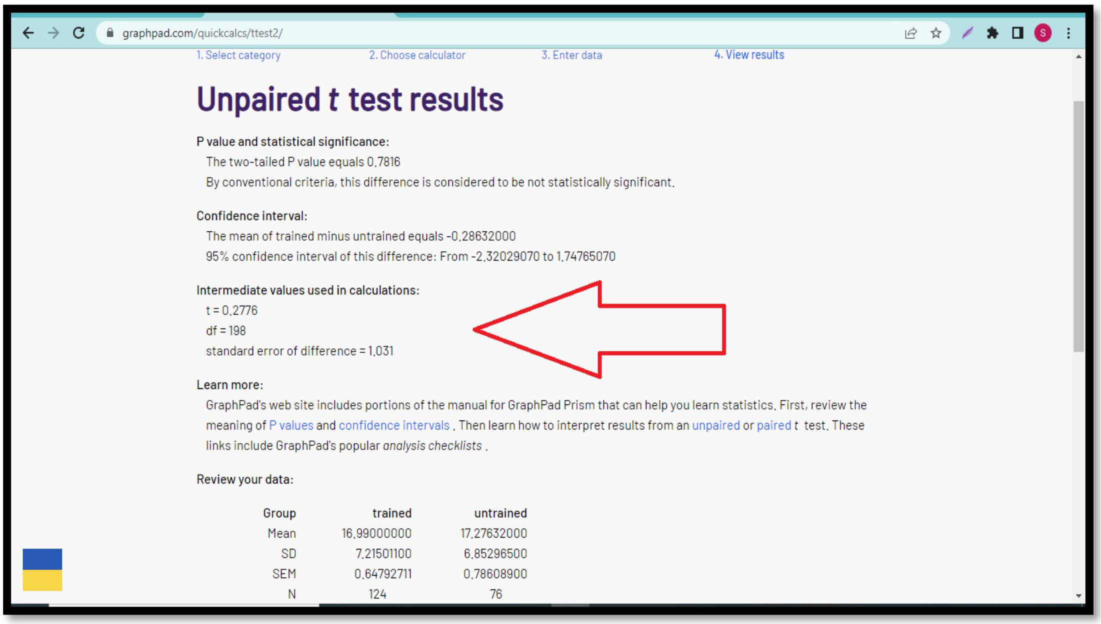
Step 6—आपके सामने data enter करने वाला option आयेगा। यहाँ पर प्रश्न में उपलब्ध data enter करते हैं। Group one में पहले समूह का data तथा Group two में दूसरे समूह का data enter करते हैं।



Step 7— परिणाम देखने के लिए calculate now पर क्लिक करते हैं।



आपका परिणाम निम्न प्रकार दिखायी देगा—

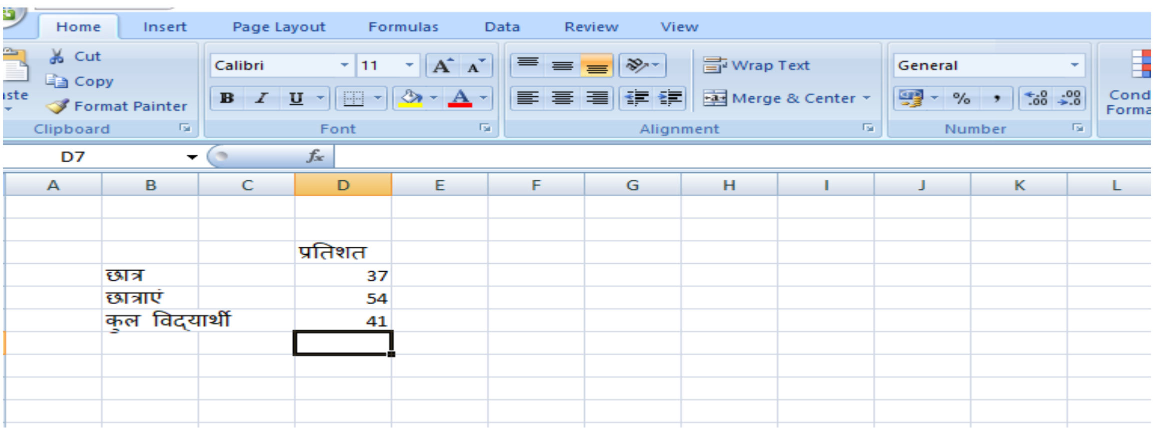


4.11.7 दण्ड आरेख (Bar Graph)

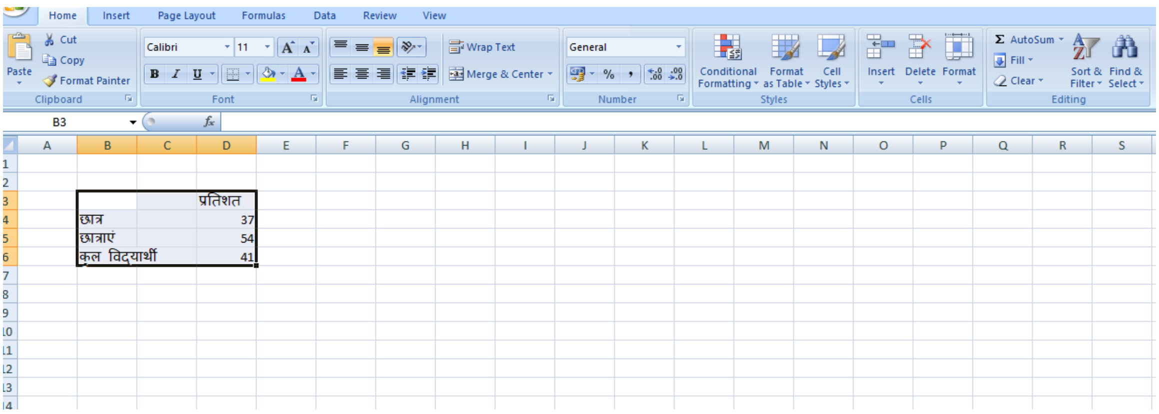
जब प्राप्त आँकड़ों को ग्राफ पेपर पर खड़े स्तम्भों के रूप में प्रदर्शित किया जाता है तो उसे दण्ड आरेख या स्तम्भ आरेख कहते हैं। इसका प्रयोग सामान्यतः स्कूलों में छात्रों और शिक्षकों की संख्या और साक्षर-निरक्षरों की संख्या आदि स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। दण्ड आरेख के द्वारा दो या दो से अधिक समूहों की मध्यमान योग्यता को भी स्पष्ट किया जा सकता है। दण्ड आरेख लम्बवत या क्षैतिज किसी भी दिशा में बनाए जा सकते हैं परन्तु सामान्यतः इन्हें लम्बवत ही बनाया जाता है।

दंड आरेख की गणना हेतु एम एस एक्सेल के चरण:

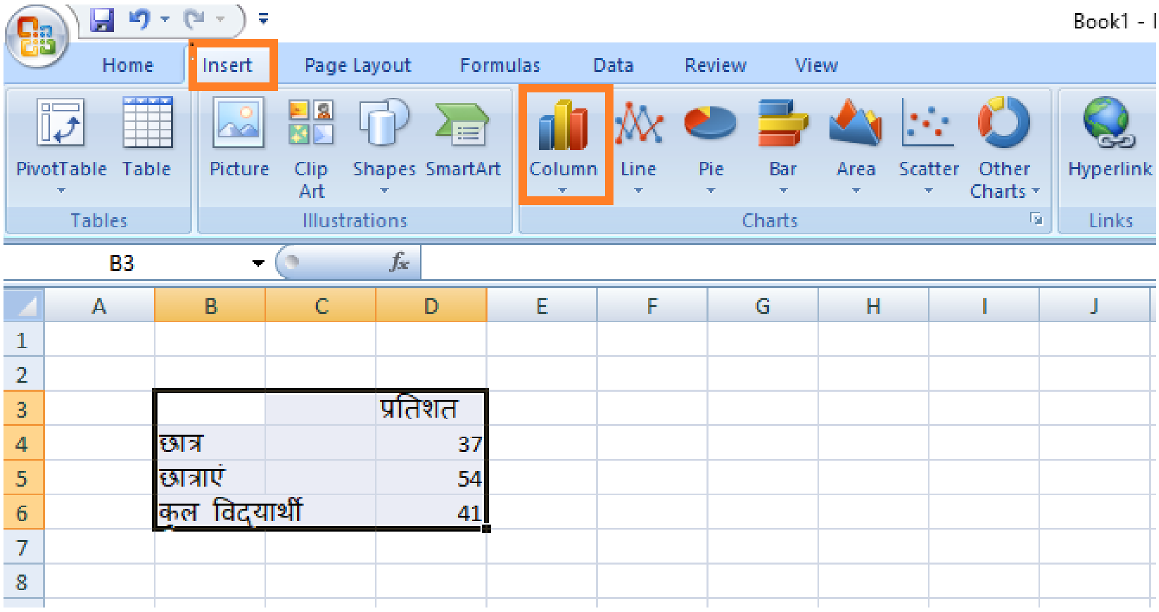
Step 1: एम एस एक्सेल में सेल में डाटा को भरें।



Step 2: चयनित सेल तक ड्रैग करें।

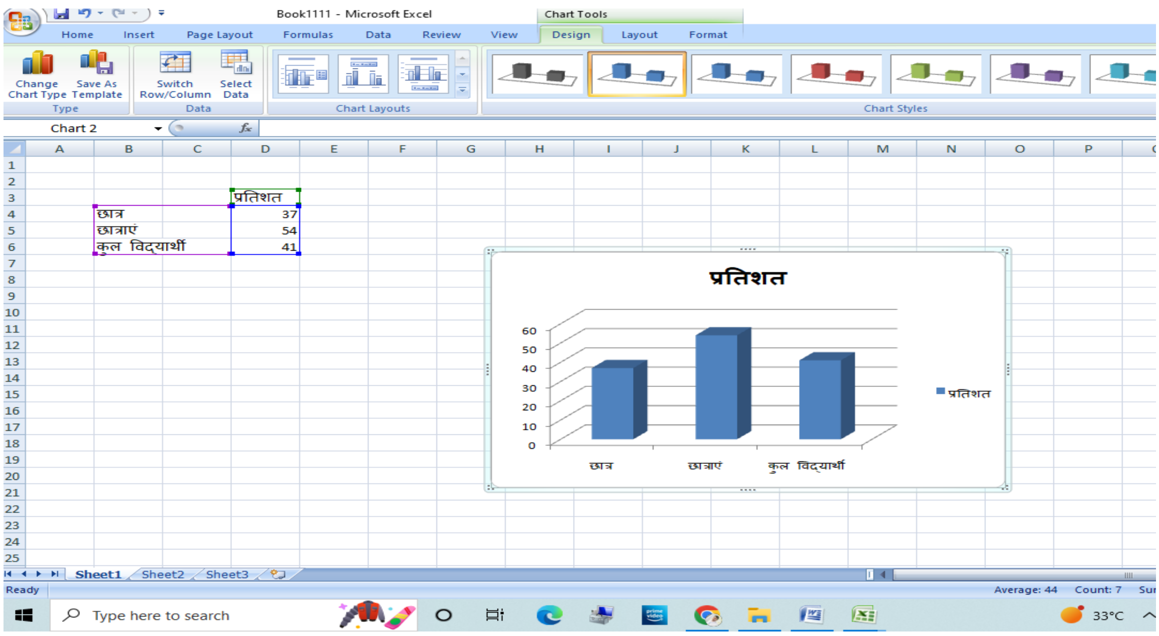


Step 3: Insert Option पर जाकर column को select करें।



Step 4: अब किसी भी design के option को चुनें।

Step 5: अब आपको दंड आरेख नजर आएगा।



अध्याय पंचम

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

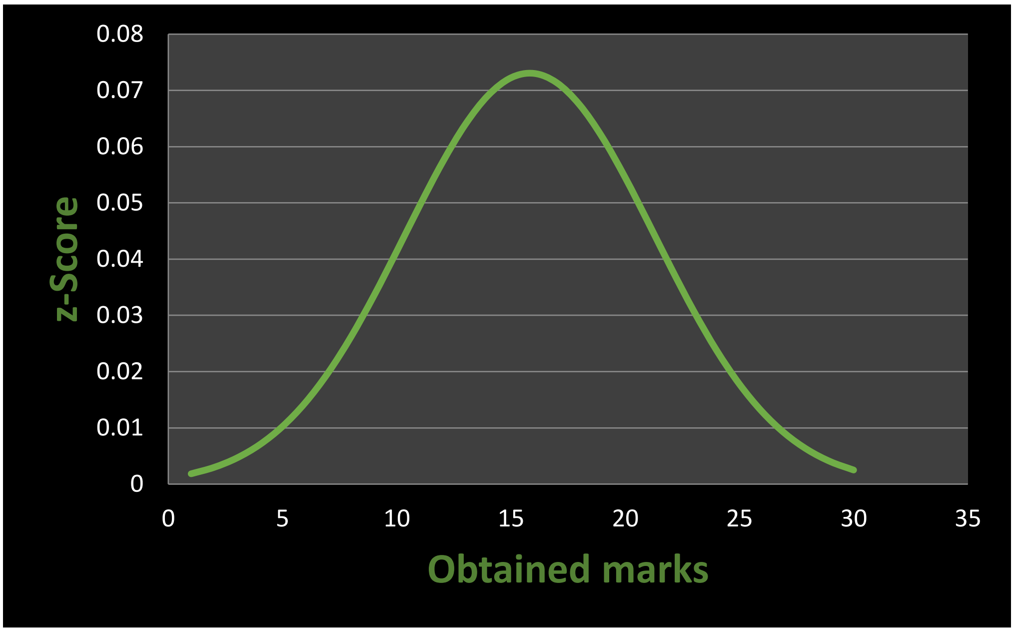
प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य वर्णित शोध-विधि द्वारा एकत्रित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तथा विवेचन करना है। प्रस्तुत अध्याय में सांख्यिकी गणना से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण किया गया है।

5.1 गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता का अध्ययन करना।

तालिका संख्या 5.1

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्र छात्राओं की जागरूकता विश्लेषण तालिका

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	माध्यिका (Md)	प्रमाण विचलन (S.D.)	वैषम्यता (Sk)	कुकुदता (Ku)
छात्र	122	16.07	15	5.71	0.2874	0.2335
छात्राएं	35	15	15	4.28	0.5222	0.9005
कुल विद्यार्थी	157	15.82	15	5.46	0.3712	0.6693

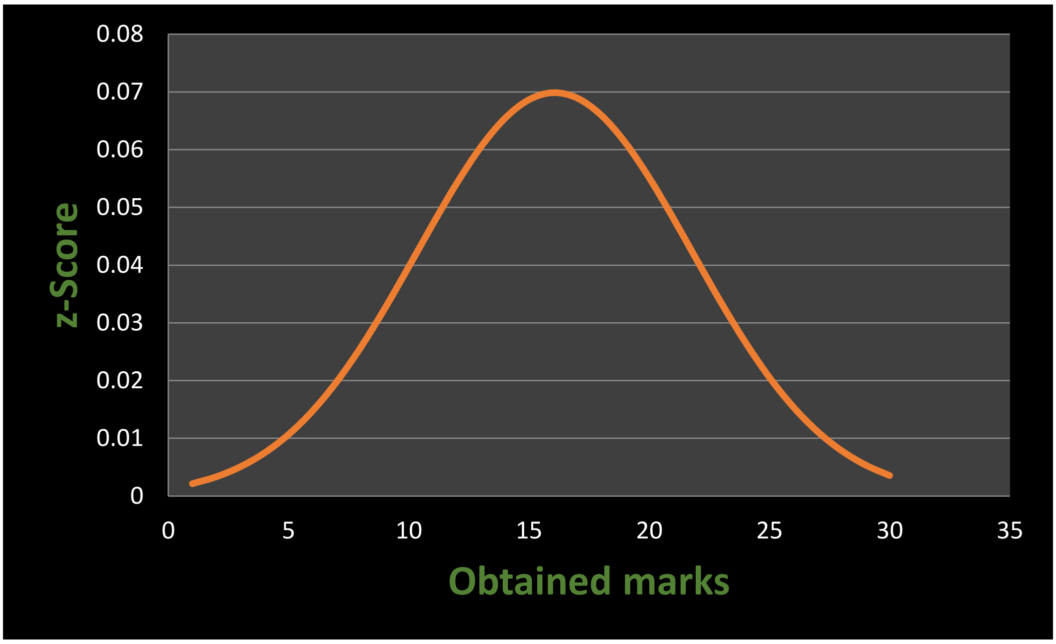


चित्र संख्या 5.1.1

कुल विद्यार्थियों की जागरूकता से संबंधित सामान्य संभावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—छात्र-छात्राओं की जागरूकता का अध्ययन करने के सम्बन्ध में शोधकर्ता ने जागरूकता प्रश्नावली पर प्राप्त अंको के वितरण की प्रकृति का विश्लेषण किया। तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता का मान 0.37 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 0.669 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में कुल विद्यार्थियों की संख्या पर्याप्त होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.1.1 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।

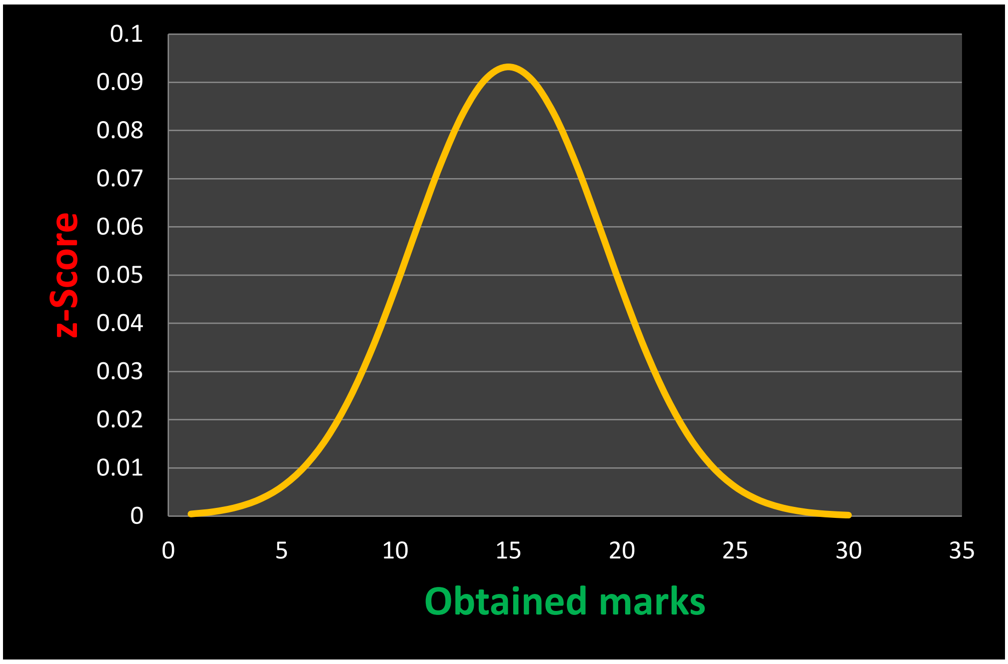


चित्र संख्या 5.1.2

छात्रों की जागरूकता से संबंधित सामान्य संभावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि छात्रों का मध्यमान 16.06 तथा प्रमाप विचलन 5.71 है। छात्रों के लिए वैषम्यता का मान 0.287 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 0.233 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में छात्रों की संख्या पर्याप्त होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.1.2 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।



चित्र संख्या 5.1.3

छात्राओं की जागरूकता से संबंधित सामान्य संभावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि छात्राओं का मध्यमान 15 तथा प्रमाप विचलन 4.28 है। छात्राओं के लिए वैषम्यता का मान 0.50 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 0.90 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

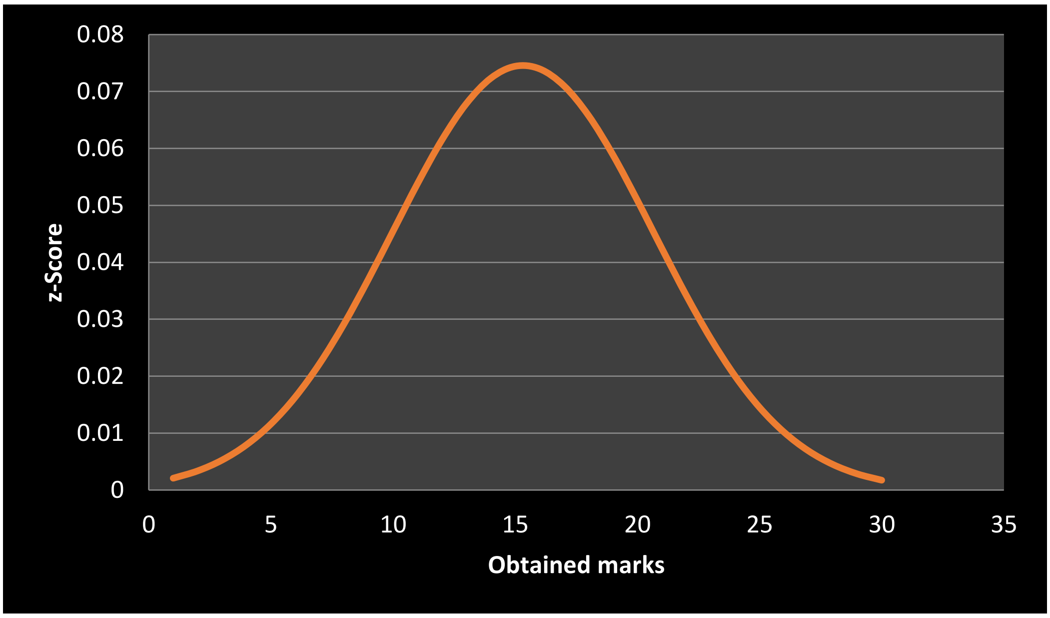
विवेचना—न्यादर्श में छात्राओं की संख्या पर्याप्त होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.1.3 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।

5.2 गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त और निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

तालिका संख्या 5.2

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/ सहायता प्राप्त और निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता विश्लेषण

विद्यालय स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	माध्यिका (Md)	प्रमाप विचलन (S.D.)	वैषम्यता (Sk)	कुकुदता (Ku)
राजकीय/ सहायता प्राप्त विद्यालय के विद्यार्थी	100	15.32	15	5.35	0.348	0.656
निजी विद्यालय के विद्यार्थी	57	16.54	15	5.93	0.389	0.440



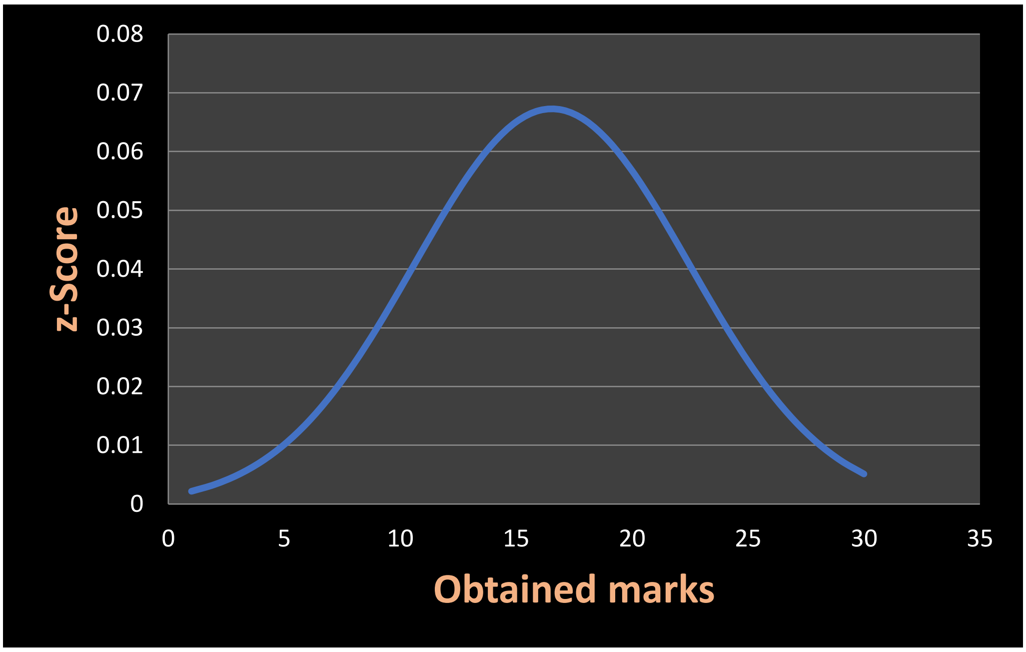
चित्र संख्या 5.2.1

राजकीय/ सहायता प्राप्त विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता से संबंधित सामान्य संभावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि राजकीय/ सहायता प्राप्त विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 15.32 तथा प्रमाप विचलन 5.35 है। राजकीय/ सहायता प्राप्त विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता का मान 0.348 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है

तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 0.656 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में राजकीय/ सहायता प्राप्त विद्यालय के विद्यार्थियों का चयन असम्भाव्य विधि से होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.2.1 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।



चित्र संख्या 5.2.2

निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता से संबंधित सामान्य संभावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि निजी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 16.54 तथा प्रमाप विचलन 5.93 है। निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता का मान 0.389 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 0.44 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में निजी विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों का चयन असम्भाव्य विधि से होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.2.2 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।

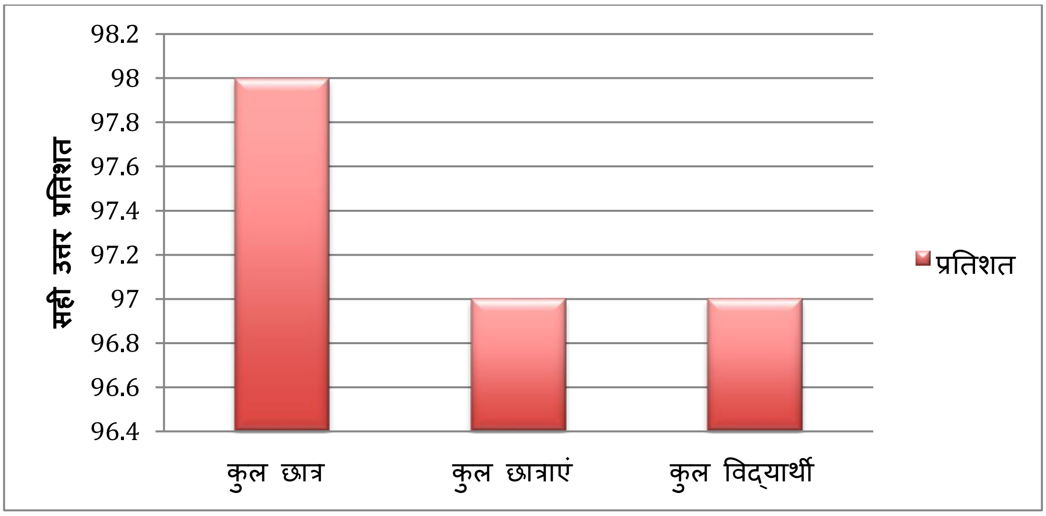
5.3 गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण

प्रश्न 1. गणेश बाग किस जनपद में स्थित है?

सही उत्तर- चित्रकूट

तालिका संख्या 5.3.1
प्रश्न 1 के सम्बंध में विद्यार्थियों की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	119	98
छात्राएं	35	34	97
कुल विद्यार्थी	157	153	97



चित्र संख्या - 5.3.1
प्रश्न संख्या 1 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.1 एवं चित्र संख्या 5.3.1 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग चित्रकूट जनपद में स्थित है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 98 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 97 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 97 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अधिकांश विद्यार्थी "गणेश बाग के चित्रकूट जनपद में स्थित" होने से परिचित हैं।

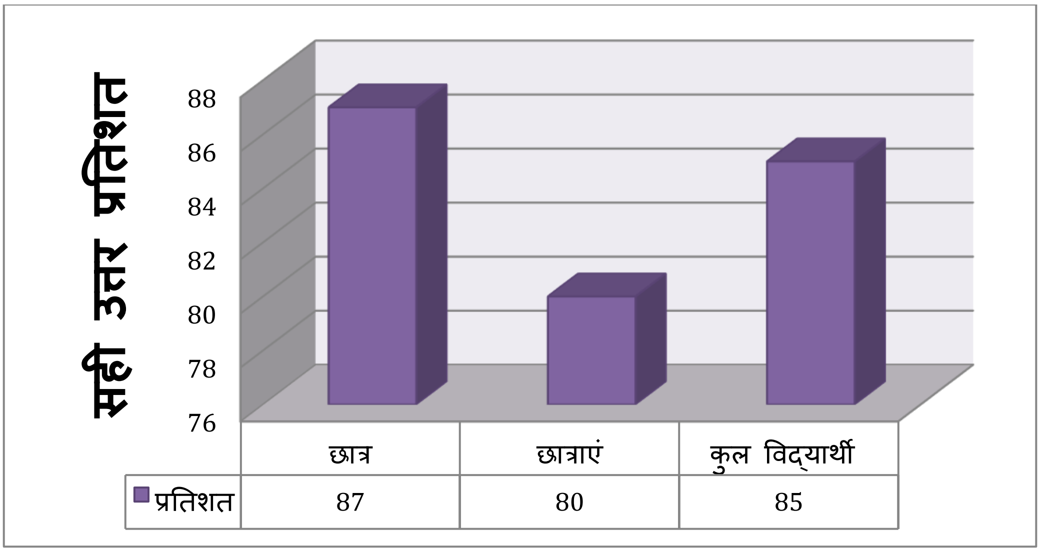
प्रश्न 2. कर्वी नगर सीमांतर्गत स्थित है–

सही उत्तर - गणेश बाग

तालिका संख्या 5.3.2

प्रश्न 2 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	106	87
छात्राएं	35	28	80
कुल विद्यार्थी	157	134	85



चित्र संख्या – 5.3.2

प्रश्न संख्या 2 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:-उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.2 एवं चित्र संख्या 5.3.2 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "कर्वी नगर की सीमांतर्गत गणेश बाग स्थित है।" के प्रति सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 87 पाया गया, वहीं छात्राओं का प्रतिशत 80 पाया गया तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 85 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थी "कर्वी नगर सीमांतर्गत गणेश बाग के स्थित होने" से परिचित हैं।

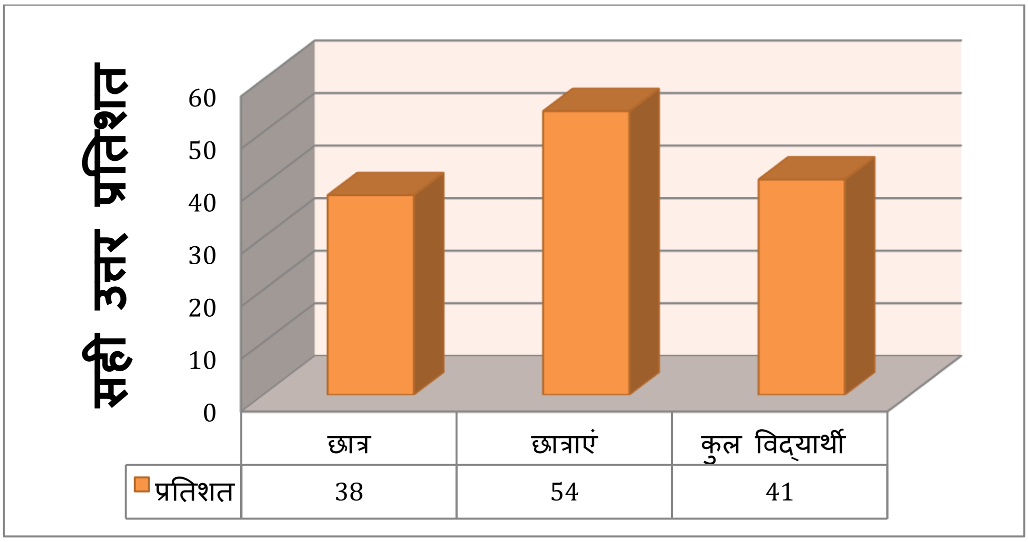
प्रश्न 3. गणेश बाग में स्थित मुख्य मंदिर किसे समर्पित है?

सही उत्तर - शिव

तालिका संख्या 5.3.3

प्रश्न 3 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	सही उत्तर		
	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	46	38
छात्राएं	35	19	54
कुल विद्यार्थी	157	65	41



चित्र संख्या - 5.3.3

प्रश्न संख्या 3 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:-उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.3 एवं चित्र संख्या 5.3.3 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग में स्थित मुख्य मंदिर भगवान शिव को समर्पित है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 38 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 54 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 41 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधे से भी कम विद्यार्थी " गणेश बाग में स्थित मुख्य मंदिर के भगवान शिव को समर्पित" होने से परिचित हैं। एक तिहाई से कुछ अधिक छात्र इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि छात्राएँ आधे से अधिक परिचित हैं।

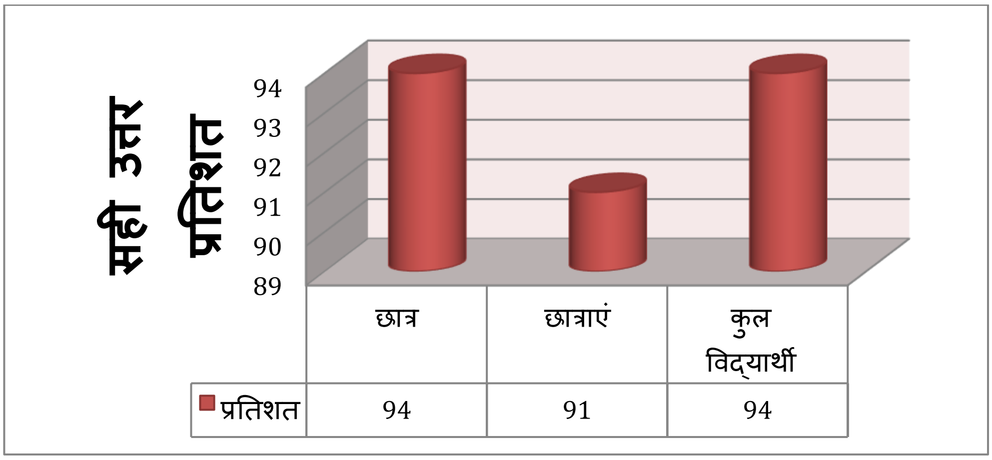
प्रश्न 4. गणेश बाग को दूसरे किस नाम से जाना जाता है?

सही उत्तर - मिनी खजुराहो

तालिका संख्या 5.3.4

प्रश्न 4 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	115	94
छात्राएं	35	32	91
कुल विद्यार्थी	157	147	94



चित्र संख्या - 5.3.4

प्रश्न संख्या 4 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.4 एवं चित्र संख्या 5.3.4 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग को दूसरे नाम मिनी खजुराहो के नाम से जाना जाता है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 94 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 91 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 94 पाया गया।

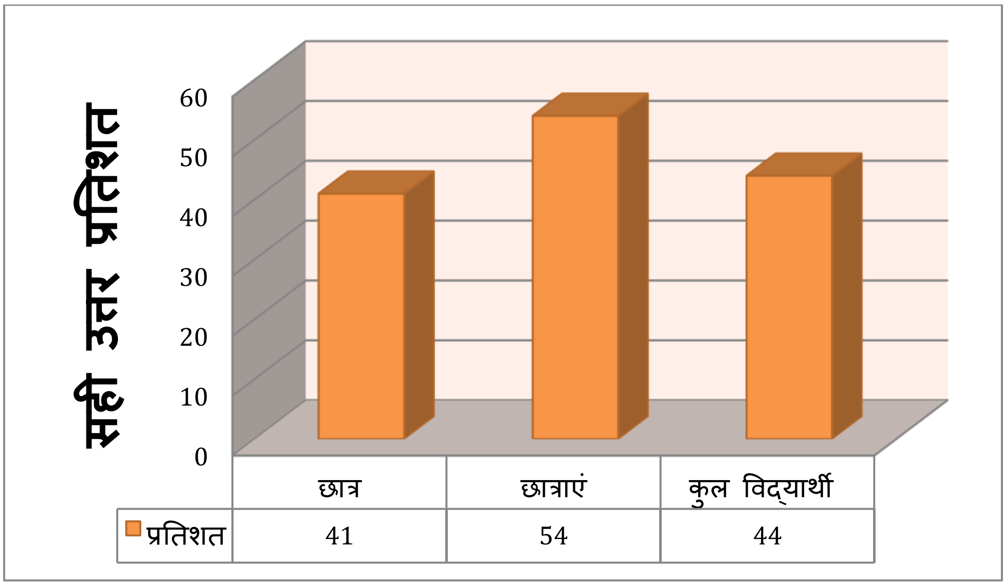
विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थी " गणेश बाग का दूसरा नाम मिनी खजुराहो" होने से परिचित हैं।

प्रश्न 5. गणेश बाग का निर्माण किस शताब्दी में हुआ था?
सही उत्तर– 19 वीं

तालिका संख्या 5.3.5

प्रश्न 5 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	50	41
छात्राएं	35	19	54
कुल विद्यार्थी	157	69	44



चित्र संख्या – 5.3.5

प्रश्न संख्या 5 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.5 एवं चित्र संख्या 5.3.5 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग का निर्माण 19 वीं शताब्दी में हुआ था" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 41 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 54 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 44 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधे से भी कम विद्यार्थी "गणेश बाग का निर्माण 19 वीं शताब्दी में होने से" परिचित हैं। आधे से अधिक छात्र परिचित हैं, जबकि आधे से कम छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं।

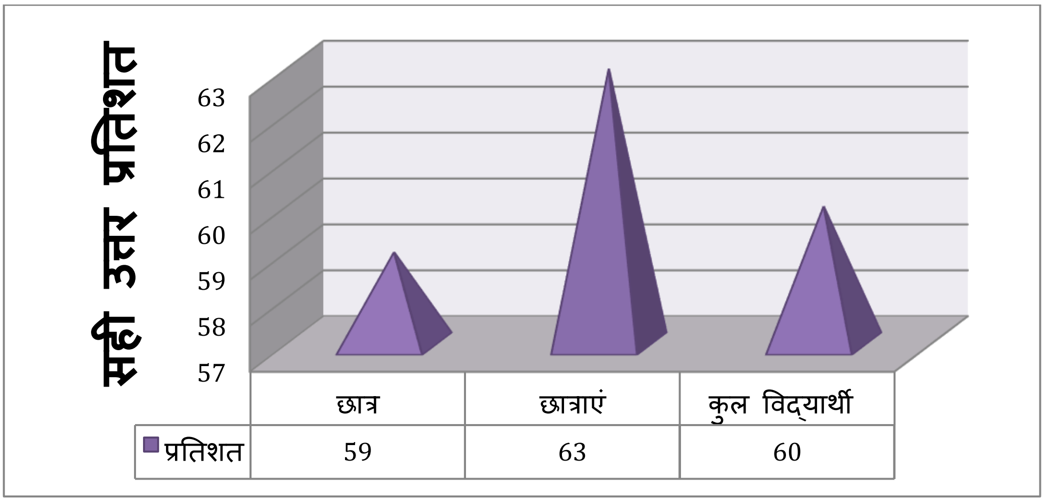
प्रश्न 6. गणेश बाग का निर्माण किस शासक के द्वारा कराया गया–

सही उत्तर– मराठा

तालिका संख्या 5.3.6

प्रश्न 6 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	72	59
छात्राएं	35	22	63
कुल विद्यार्थी	157	94	60



चित्र संख्या - 5.3.6

प्रश्न संख्या 6 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.6 एवं चित्र संख्या 5.3.6 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग का निर्माण मराठा शासक के द्वारा कराया गया था।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 59 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 63 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 60 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि दो तिहाई से कम विद्यार्थी " गणेश बाग का निर्माण मराठा शासक के द्वारा करवाए जाने से परिचित हैं।" दो तिहाई छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि आधे से अधिक छात्र इस तथ्य से परिचित हैं।

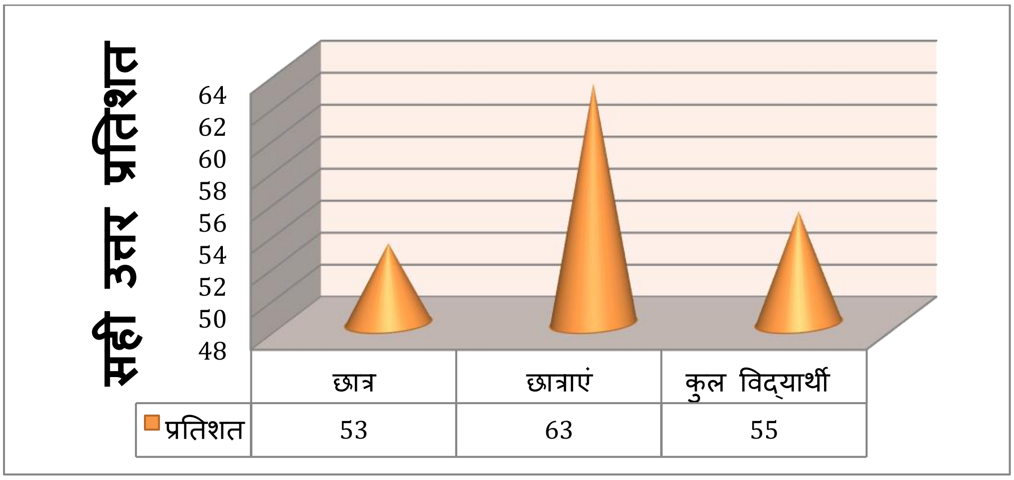
प्रश्न 7. गणेश बाग का निर्माण किस राजा द्वारा करवाया गया था?

सही उत्तर– पेशवा विनायक राव

तालिका संख्या 5.3.7

प्रश्न 7 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	65	53
छात्राएं	35	22	63
कुल विद्यार्थी	157	87	55



चित्र संख्या – 5.3.7

प्रश्न संख्या 7 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:-उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.7 एवं चित्र संख्या 5.3.7 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग का निर्माण राजा पेशवा विनायक राव द्वारा करवाया गया था।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 53 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 63 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 55 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधे से कुछ अधिक विद्यार्थी "गणेश बाग का निर्माण राजा पेशवा विनायक राव द्वारा करवाए जाने" से परिचित हैं। दो तिहाई छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि आधे से कुछ अधिक छात्र इस तथ्य से परिचित हैं, इसका कारण यह हो सकता है कि लड़कियां ऐतिहासिक स्थलों में धूमते समय वहां की चीजों पर ध्यान देती हैं जबकि लड़कों की रूचि सिर्फ घूमने फिरने में होती हैं।

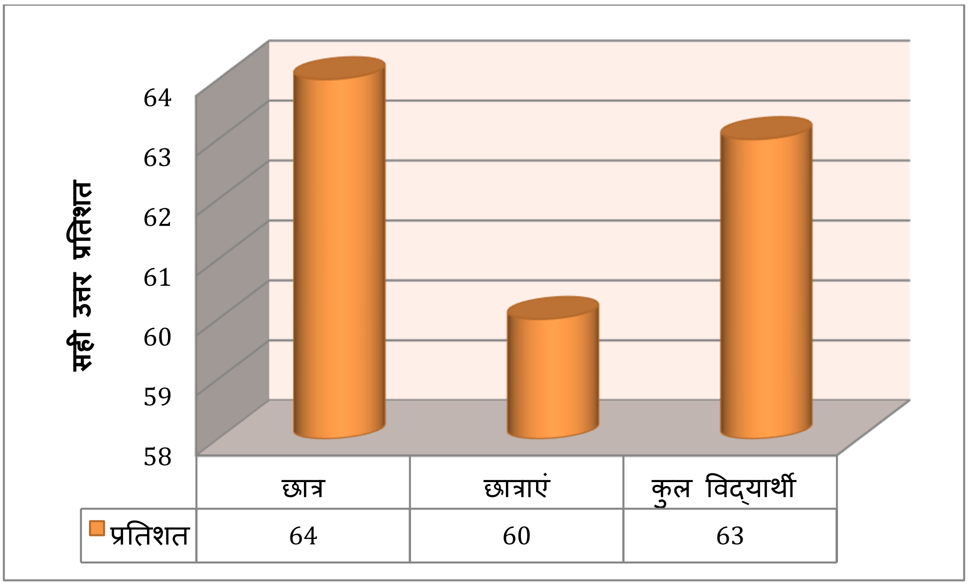
प्रश्न 8. गणेश बाग किन प्रस्तरों से निर्मित है?

सही उत्तर– लाल पत्थर

तालिका संख्या 5.3.8

प्रश्न 8 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	78	64
छात्राएं	35	21	60
कुल विद्यार्थी	157	99	63



चित्र संख्या – 5.3.8

प्रश्न संख्या 8 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.8 एवं चित्र संख्या 5.3.8 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग लाल पत्थरों से निर्मित है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 64 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 60 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 63 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि दो तिहाई विद्यार्थी ही "गणेश बाग के लाल पत्थरों से निर्मित" होने से परिचित हैं।

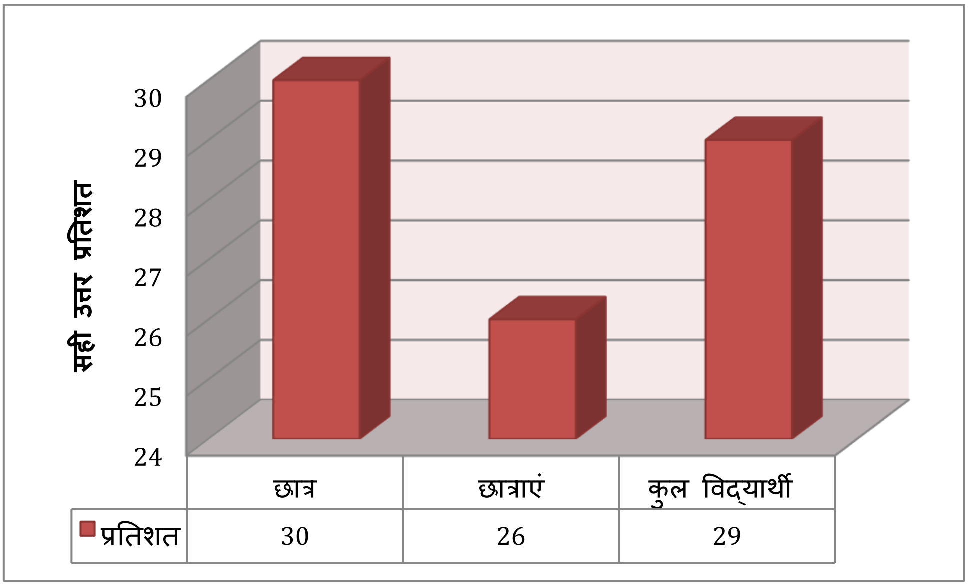
प्रश्न 9. गणेश बाग स्थित सुरंग कहां जाती है?

सही उत्तर– राजा का महल

तालिका संख्या 5.3.9

प्रश्न संख्या 9 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	36	30
छात्राएं	35	09	26
कुल विद्यार्थी	157	45	29



चित्र संख्या - 5.3.9

प्रश्न संख्या 9 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.9 एवं चित्र संख्या 5.3.9 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग में स्थित मुख्य मंदिर भगवान शिव को समर्पित है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 30 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 26 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 29 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि एक तिहाई से कम विद्यार्थी " गणेश बाग मे स्थित मुख्य मंदिर भगवान शिव को समर्पित" होने से परिचित हैं। इसका कारण यह हो सकता हैं कि वर्तमान में मुख्य मंदिर में कोई मूर्ती नहीं हैं तथा पूजा पाठ भी बंद हैं।

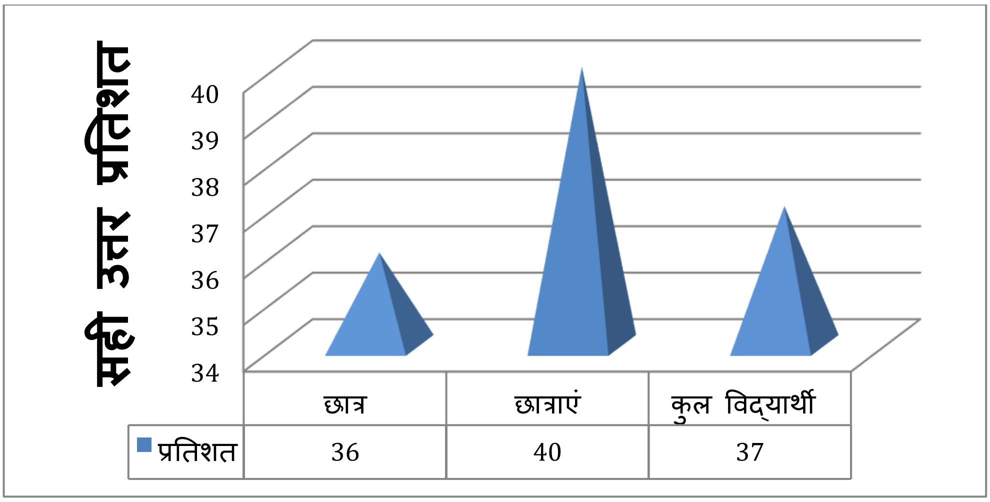
प्रश्न 10. गणेश बाग में स्थित मंदिर का आकार कैसा है?

सही उत्तर– षट्कोणीय

तालिका संख्या 5.3.10

प्रश्न 10 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	44	36
छात्राएं	35	14	40
कुल विद्यार्थी	157	58	37



चित्र संख्या – 5.3.10

प्रश्न संख्या 10 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:-उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.10 एवं चित्र संख्या 5.3.10 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग में स्थित मंदिर का आकार षट्कोणीय है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 36 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 40 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 37 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि एक तिहाई से कुछ अधिक विद्यार्थी " गणेश बाग में स्थित मंदिर का आकार षट्कोणीय" होने से परिचित हैं। एक तिहाई से कुछ अधिक छात्र इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि एक तिहाई से अधिक छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं। इसका कारण यह हो सकता हैं कि छात्र-छात्राओं ने घूमते समय उसके आकार पर ध्यान नहीं दिया होगा।

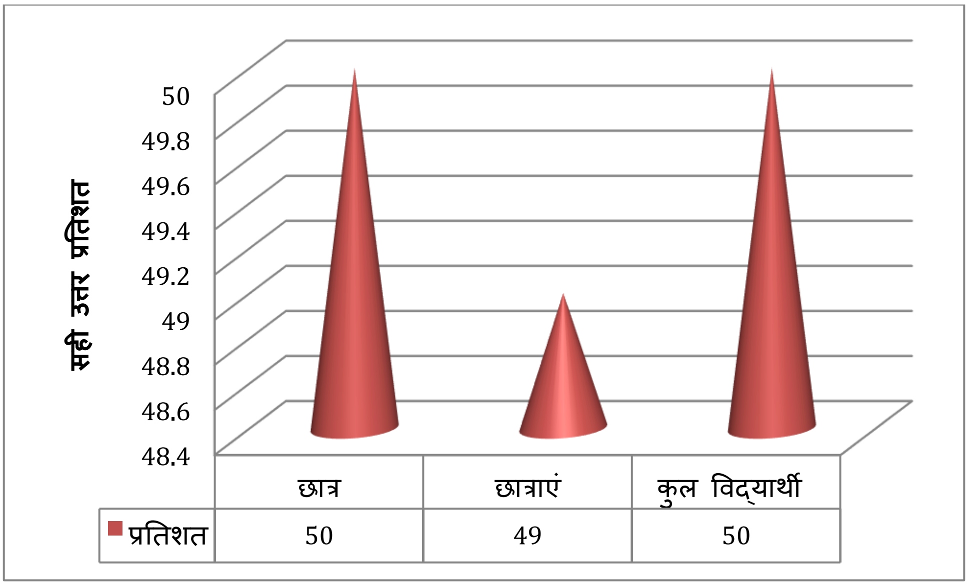
प्रश्न 11. गणेश बाग के निर्माण का उद्देश्य था?

सही उत्तर– मनोरंजन

तालिका संख्या 5.3.11

प्रश्न 11 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	61	50
छात्राएं	35	17	49
कुल विद्यार्थी	157	78	50



चित्र संख्या - 5.3.11

प्रश्न संख्या 11 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.11 एवं चित्र संख्या 5.3.11 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग के निर्माण का उद्देश्य मनोरंजन था।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 50 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 49 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 50 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधे विद्यार्थी "गणेश बाग के निर्माण का उद्देश्य मनोरंजन" होने से परिचित हैं।

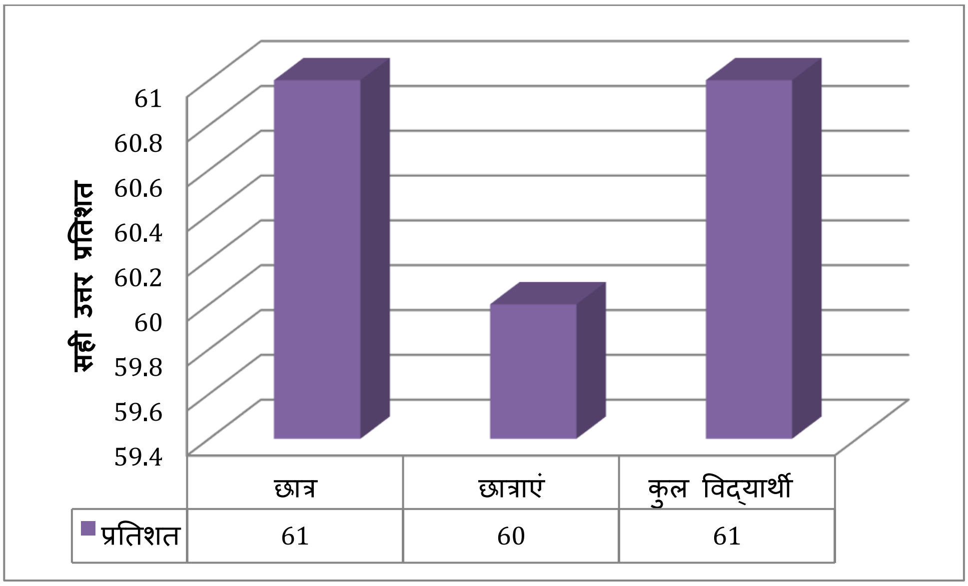
प्रश्न 12. गणेश बाग स्थित बावली के कितने तल हैं?

सही उत्तर– सात

तालिका संख्या 5.3.12

प्रश्न 12 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	74	61
छात्राएं	35	21	60
कुल विद्यार्थी	157	95	61



चित्र संख्या - 5.3.12

प्रश्न संख्या 12 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.12 एवं चित्र संख्या 5.3.12 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग में स्थित बावली के सात तल हैं।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 61 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 60 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 61 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि दो तिहाई से कुछ कम विद्यार्थी " गणेश बाग में स्थित बावली के सात तल" होने से परिचित हैं।

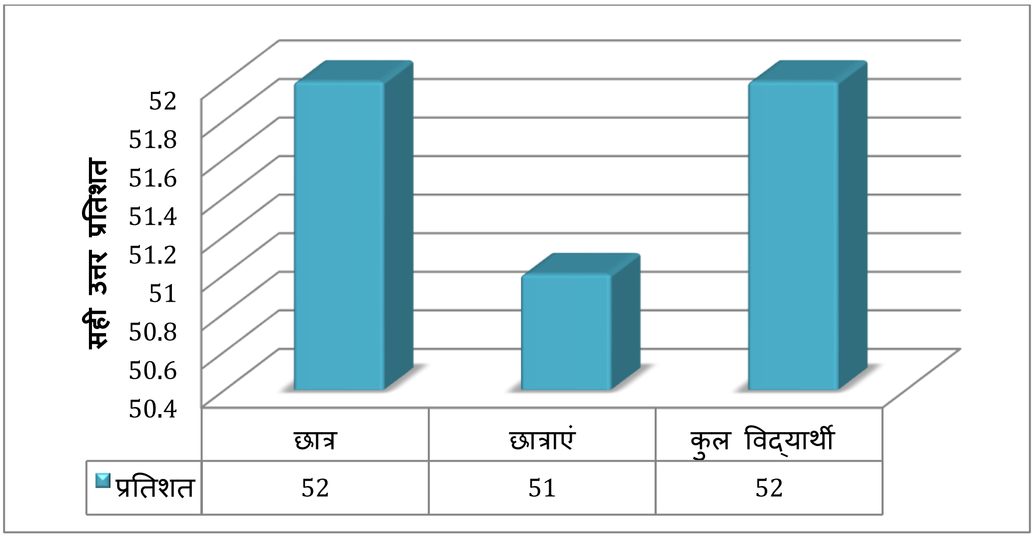
प्रश्न 13. गणेश बाग में स्थित है–

सही उत्तर– पंचमन्दिर

तालिका संख्या 5.3.13

प्रश्न 13 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	63	52
छात्राएं	35	18	51
कुल विद्यार्थी	157	81	52



चित्र संख्या - 5.3.13

प्रश्न संख्या 13 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.13 एवं चित्र संख्या 5.3.13 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग में पंच मंदिर स्थित है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 52 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 51 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 52 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधे ही विद्यार्थी "गणेश बाग में पंच मंदिर स्थित है।" इस तथ्य से परिचित हैं।

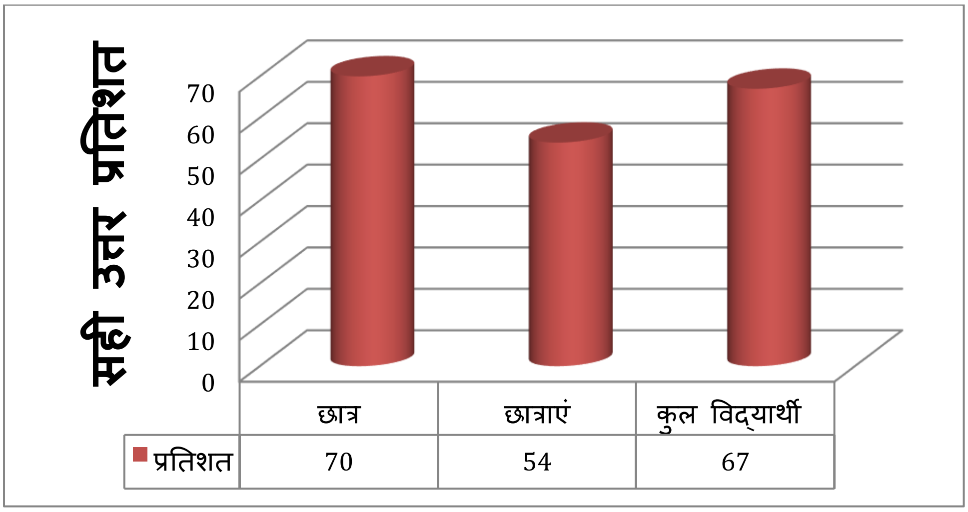
प्रश्न 14. गणेश बाग स्थित बावली के मुख्य द्वार पर विराजमान हैं–

सही उत्तर– गणेश

तालिका संख्या 5.3.14

प्रश्न 14 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	86	70
छात्राएं	35	19	54
कुल विद्यार्थी	157	105	67



चित्र संख्या - 5.3.14

प्रश्न संख्या 14 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.14 एवं चित्र संख्या 5.3.14 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग में स्थित बावली के मुख्य द्वार पर भगवान गणेश विराजमान हैं।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 70 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 54 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 67 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि दो तिहाई विद्यार्थी "गणेश भाग में स्थित बावली के मुख्य द्वार पर भगवान गणेश विराजमान हैं।" इस तथ्य से परिचित हैं। दो तिहाई से अधिक छात्र इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि आधे से कुछ अधिक छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं।

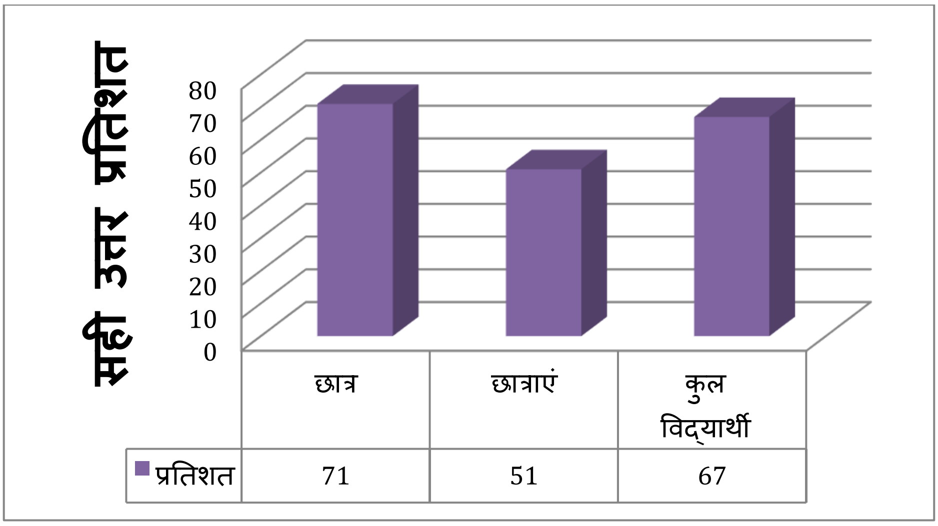
प्रश्न 15. चित्रकूट धाम रेलवे स्टेशन से गणेश बाग की दूरी कितनी है?

सही उत्तर– 3.5 किमी

तालिका संख्या 5.3.15

प्रश्न 15 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	87	71
छात्राएं	35	18	51
कुल विद्यार्थी	157	105	67



चित्र संख्या – 5.3.15

प्रश्न संख्या 15 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.15 एवं चित्र संख्या 5.3.15 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "चित्रकूट धाम रेलवे स्टेशन से गणेश बाग की दूरी 3.5 किलोमीटर है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 71 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 51 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 67 पाया गया।

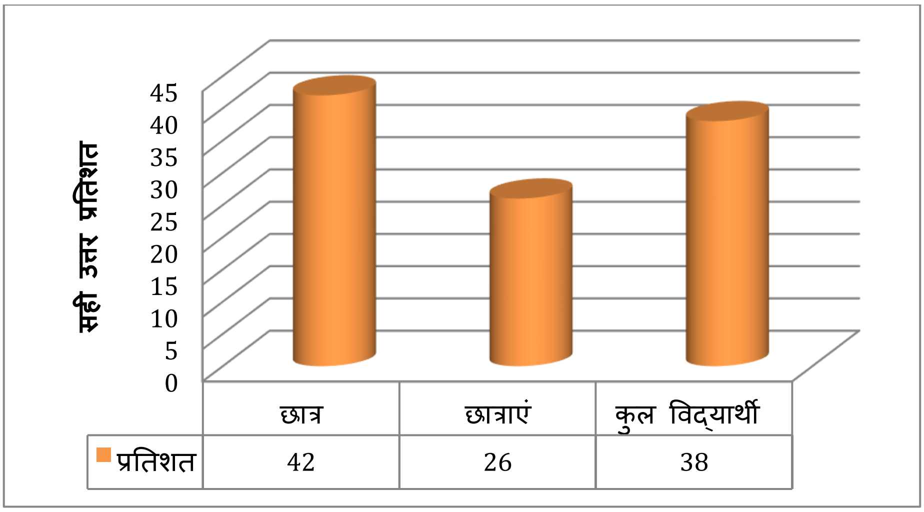
विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि दो तिहाई विद्यार्थी "चित्रकूट धाम रेलवे स्टेशन से गणेश बाग की दूरी 3.5 किलोमीटर" होने से परिचित हैं। दो तिहाई से अधिक छात्र इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि आधी छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं। इसका कारण यह हो सकता हैं कि लडके खुद ही अकेले घूमने

जाते रहते हैं, जबकि छात्राएं अपने पारिवारिक सदस्यों के साथ ही जाती हैं जिससे दूरी पर उनका ध्यान नहीं जाता।

प्रश्न 16. गणेश बाग में मेला आयोजित किया जाता है–
सही उत्तर– दीपावली

तालिका संख्या 5.3.16
प्रश्न 16 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	51	42
छात्राएं	35	9	26
कुल विद्यार्थी	157	60	38



चित्र संख्या - 5.3.16
प्रश्न संख्या 16 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

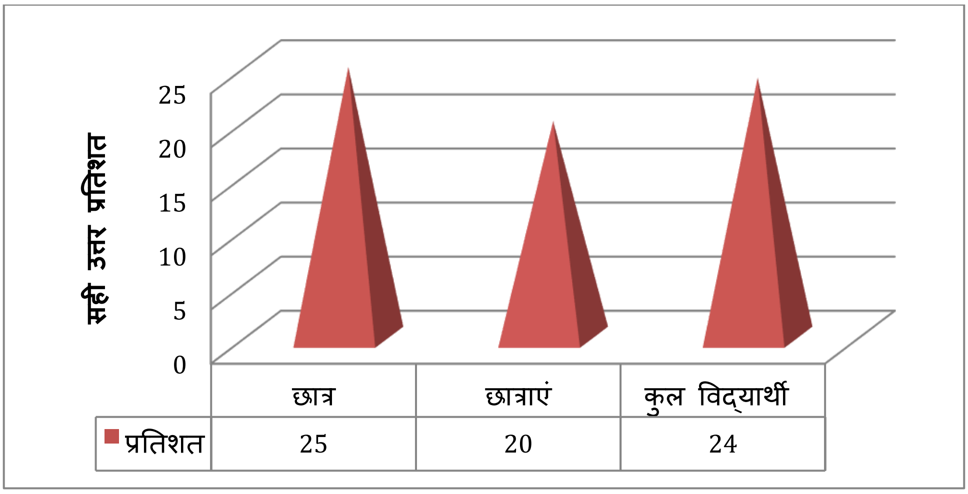
विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.16 एवं चित्र संख्या 5.3.16 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग में मेला दीपावली को आयोजित किया जाता है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 42 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 26 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 38 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि एक तिहाई से कुछ अधिक विद्यार्थी "गणेश बाग में मेला दीपावली को लगता है" इस तथ्य से परिचित हैं। आधे से कुछ कम **छात्र** इस तथ्य से परिचित हैं। जबकि लगभग एक चौथाई छात्राएं ही इस तथ्य से परिचित हैं यह स्थिति चिंताजनक है स्थानीय मेलों के विषय में सभी को जानकारी होना अपेक्षित है।

प्रश्न 17. मुख्य मंदिर के बरामदे में स्तंभों की संख्या है–
सही उत्तर– 20

तालिका संख्या 5.3.17
प्रश्न 17 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	31	25
छात्राएं	35	7	20
कुल विद्यार्थी	157	38	24



चित्र संख्या - 5.3.17
प्रश्न संख्या 17 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.17 एवं चित्र संख्या 5.3.17 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग में स्थित मुख्य मंदिर के बरामदे में स्तंभों की संख्या 20 है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 25 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 20 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 24 पाया गया।

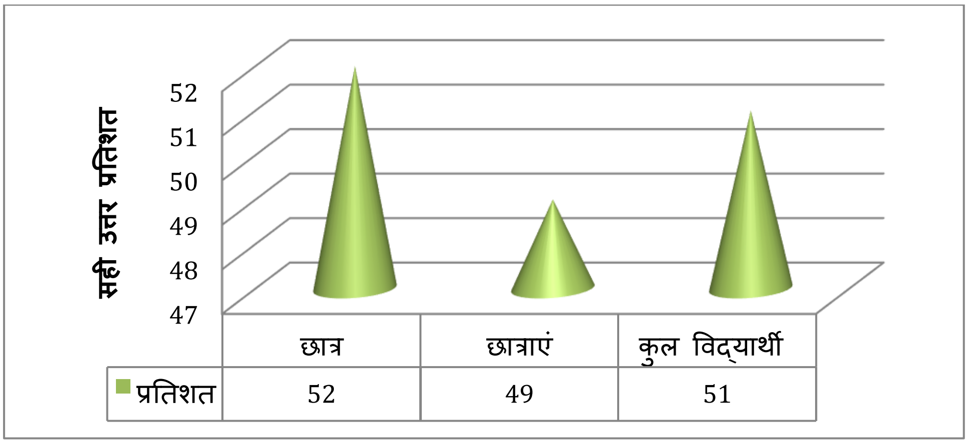
विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि एक चौथाई से कम विद्यार्थी " गणेश बाग में स्थित मुख्य मंदिर के बरामदे में स्तंभों की संख्या 20" होने से परिचित हैं। हैं। एक चौथाई छात्र इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि एक चौथाई से कम छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं। इससे यह प्रतीत होता है कि विद्यार्थी/ लोग गणेश बाग सिर्फ घूमने- फिरने/ मनोरंजन की दृष्टि से जाते हैं। स्थल की विशिष्टताओं पर प्रायः ध्यान नहीं देते।

प्रश्न 18. मुख्य मंदिर के सामने स्थित बरामदे के बीच में बना है-

सही उत्तर– चौसड़

तालिका संख्या 5.3.18
प्रश्न 18 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	63	52
छात्राएं	35	17	49
कुल विद्यार्थी	157	80	51



चित्र संख्या - 5.3.18
प्रश्न संख्या 18 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.18 एवं चित्र संख्या 5.3.18 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग में स्थित मुख्य मंदिर के सामने स्थित बरामदे के बीच में चौसड़ बना है।" ऐसा सही उत्तर देने

वाले छात्रों का प्रतिशत 52 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 49 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 51 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि लगभग आधे विद्यार्थी " गणेश बाग में स्थित मुख्य मंदिर के सामने स्थित बरामदे के बीच में चौसड़" बने होने से परिचित हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि मंदिर की विशेषताओं के बारे में परिसर स्थित बोर्ड में अंकन नहीं है, साथ ही वहां किसी गाइड की भी कोई व्यवस्था नहीं है।

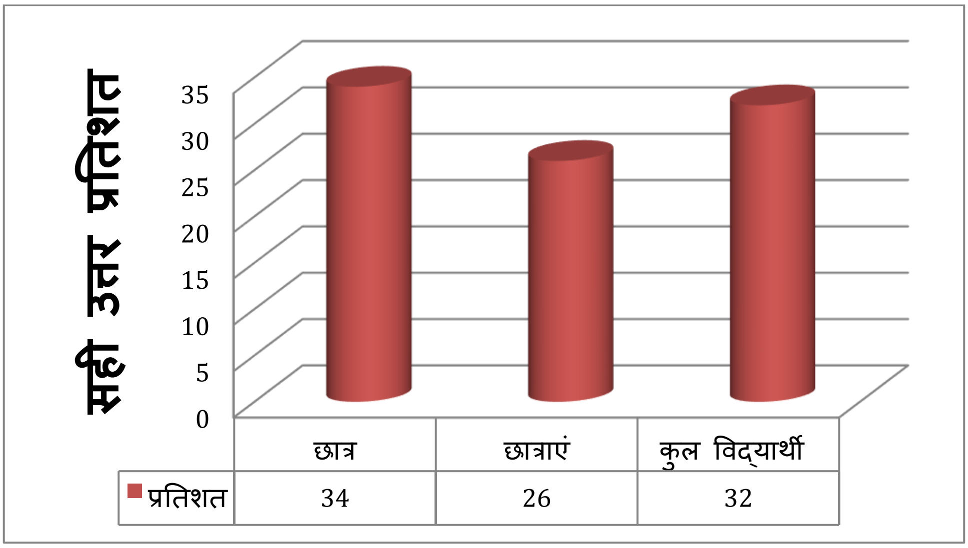
प्रश्न 19. बावली स्थित कुएं के अंदर नर्तकी की मूर्तियां है–

सही उत्तर– दो

तालिका संख्या 5.3.19

प्रश्न 19 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	41	34
छात्राएं	35	9	26
कुल विद्यार्थी	157	50	32



चित्र संख्या - 5.3.19

प्रश्न संख्या 19 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.19 एवं चित्र संख्या 5.3.19 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "बावली स्थित कुएं के अंदर नर्तकी की दो मूर्तियां हैं।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 34 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 26 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 32 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि एक तिहाई से कुछ कम विद्यार्थी "बावली स्थित कुएं के अंदर नर्तकी की दो मूर्तियां" होने से परिचित हैं। एक चौथाई छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि एक तिहाई छात्र इस तथ्य से परिचित हैं।

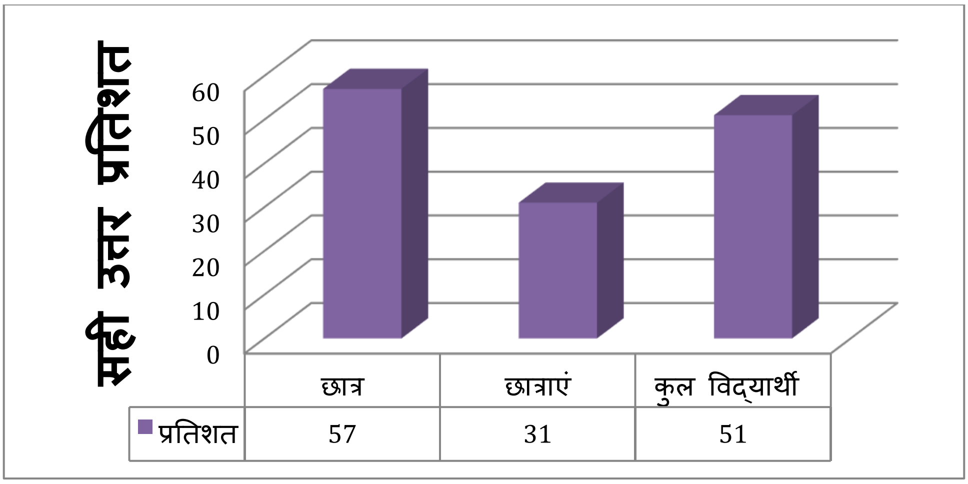
प्रश्न 20. कामकला संबंधी आकृतियों का चित्रण है–

सही उत्तर– मन्दिर के गुंबद पर

तालिका संख्या 5.3.20

प्रश्न 20 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	69	57
छात्राएं	35	11	31
कुल विद्यार्थी	157	80	51



चित्र संख्या - 5.3.20

प्रश्न संख्या 20 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.20 एवं चित्र संख्या 5.3.20 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "कामकला संबंधी आकृतियों का चित्रण मंदिर के गुंबद पर है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का

प्रतिशत 57 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 31 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 51 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि लगभग आधे विद्यार्थी "कामकला संबंधी आकृतियों का चित्रण मंदिर के गुंबद पर" होने से परिचित हैं। एक तिहाई से कुछ कम छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं। जबकि आधे से ज्यादा छात्र इस तथ्य से परिचित हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि गुंबद अधिक ऊंचाई पर होने के कारण कोई उस पर ज्यादा ध्यान नहीं देता है।

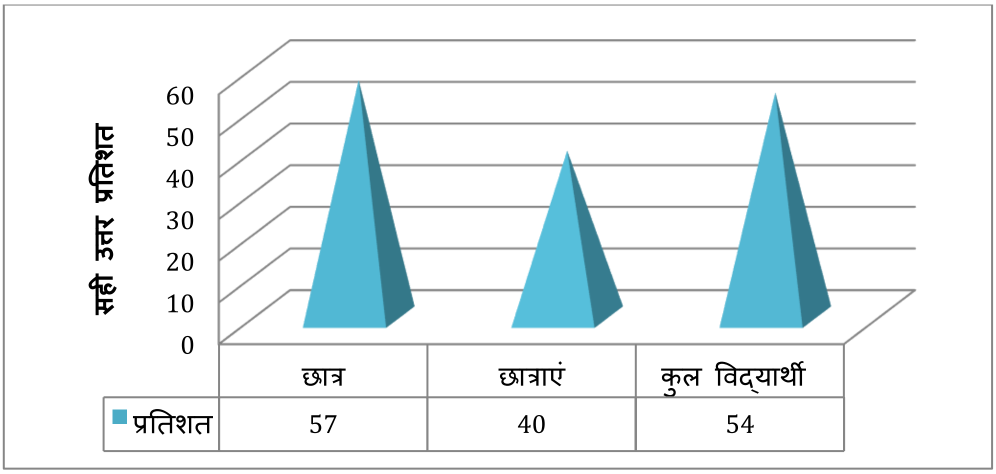
प्रश्न 21. गणेश बाग स्थित मंदिरों का समूह कहलाता है–

सही उत्तर– पंचायतन

तालिका संख्या 5.3.21

प्रश्न 21के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	70	57
छात्राएं	35	14	40
कुल विद्यार्थी	157	84	54



चित्र संख्या - 5.3.21

प्रश्न संख्या 21 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

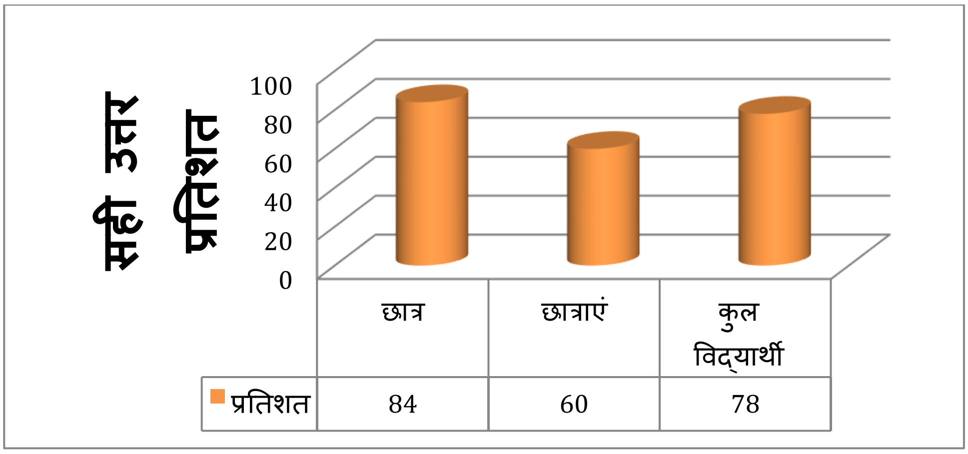
विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.21 एवं चित्र संख्या 5.3.21 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग स्थित मंदिरों का समूह पंचायतन कहलाता है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 57 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 40 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 54 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि लगभग आधे विद्यार्थी " गणेश बाग स्थित मंदिरों का समूह पंचायतन कहलाता है" इस तथ्य से परिचित हैं। एक तिहाई से अधिक छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि आधे से अधिक छात्र इस तथ्य से परिचित हैं।

प्रश्न 22. मुख्य मंदिर के बरामदे से ऊपर छत पर जाने के सीढ़ी मार्ग है–
सही उत्तर– दो

तालिका संख्या 5.3.22
प्रश्न 22 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	दो	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	102	84
छात्राएं	35	21	60
कुल विद्यार्थी	157	123	78



चित्र संख्या - 5.3.22
प्रश्न संख्या 22 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:-उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.22 एवं चित्र संख्या 5.3.22 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "मुख्य मंदिर के बरामदे से ऊपर छत पर जाने के दो सीढ़ी मार्ग है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 84 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 60 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 78 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थी " गणेश बाग में स्थित मुख्य मंदिर के बरामदे से ऊपर छत पर जाने के दो सीढ़ी मार्ग" बने होने से परिचित हैं। अधिकांश छात्र इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि दो तिहाई से कम छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि छात्र स्वभाव से खोजी प्रवृत्ति के होते हैं और उनमें हर स्थान पर जाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है।

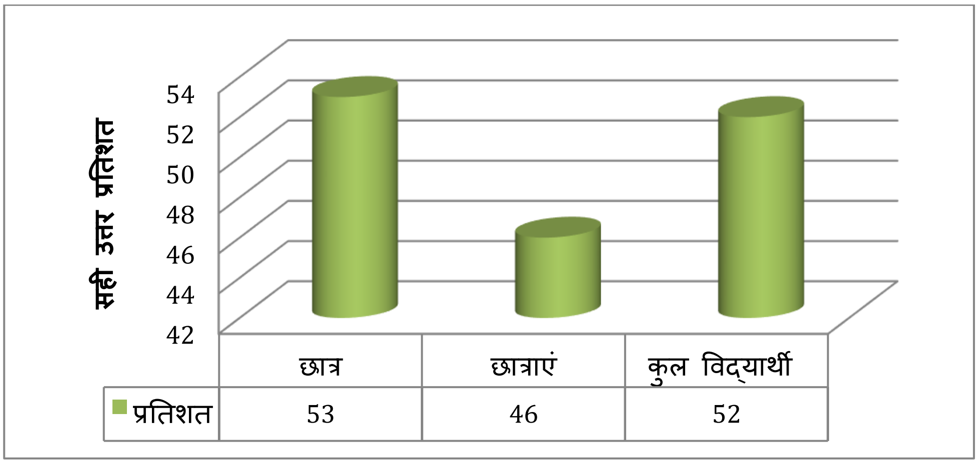
प्रश्न 23. गणेश बाग की बावली में नीचे उतरने के लिए सीढ़ी मार्ग हैं–

सही उत्तर– एक

तालिका संख्या 5.3.23

प्रश्न 23 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	65	53
छात्राएं	35	16	46
कुल विद्यार्थी	157	81	52



चित्र संख्या - 5.3.23

प्रश्न संख्या 23 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

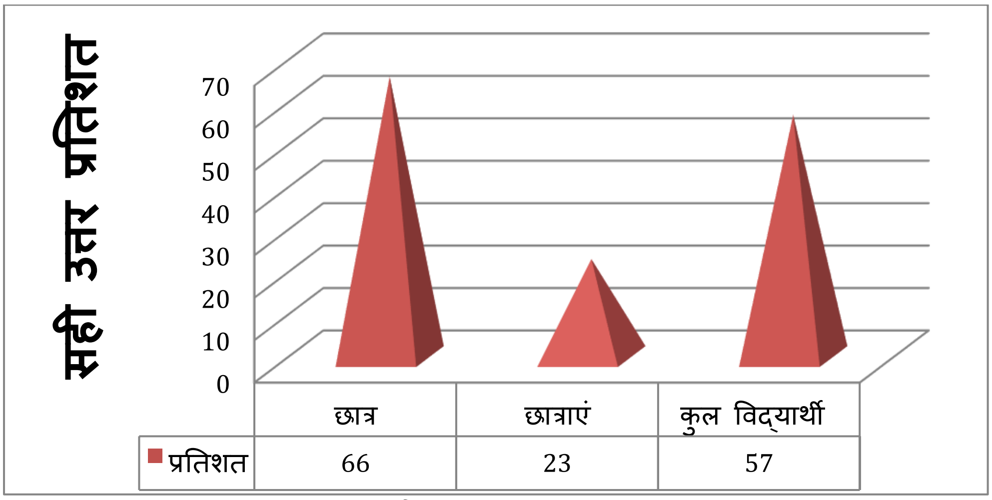
विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.23 एवं चित्र संख्या 5.3.23 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग की बावली में नीचे उतरने के लिए एक सीढ़ी मार्ग है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 53 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 46 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 52 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि लगभग आधे विद्यार्थी " गणेश बाग में स्थित मुख्य मंदिर के सामने स्थित बरामदे के बीच में चौसड़" बने होने से परिचित हैं। आधे से कम छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि आधे से अधिक छात्र इस तथ्य से परिचित हैं।

24. गणेश बाग निकट स्थित प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है–
सही उत्तर– बांके सिद्ध

तालिका संख्या 5.3.24
प्रश्न 24 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	81	66
छात्राएं	35	8	23
कुल विद्यार्थी	157	89	57



चित्र संख्या - 5.3.24
प्रश्न संख्या 24 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.24 एवं चित्र संख्या 5.3.24 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "गणेश बाग निकट स्थित प्रसिद्ध धार्मिक स्थल बांके सिद्ध है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 66 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 23 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 57 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधे कुछ ही अधिक विद्यार्थी " गणेश बाग निकट स्थित प्रसिद्ध धार्मिक स्थल बांके सिद्ध" से परिचित हैं। एक चौथाई से कुछ कम छात्राएँ इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि दो तिहाई छात्र इस तथ्य से परिचित हैं। यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है क्योंकि बांके सिद्ध चित्रकूट का एक प्रसिद्ध है धार्मिक स्थल है जो चित्रकूट की पंचकोशी यात्रा के पड़ाव में से एक है इससे यह प्रतीत होता है की पंचकोसी परिक्रमा की परंपरा वर्तमान में समाप्त प्रायः है।

प्रश्न 25. चित्र में प्रदर्शित स्थल है–

सही उत्तर: बैठक स्थल

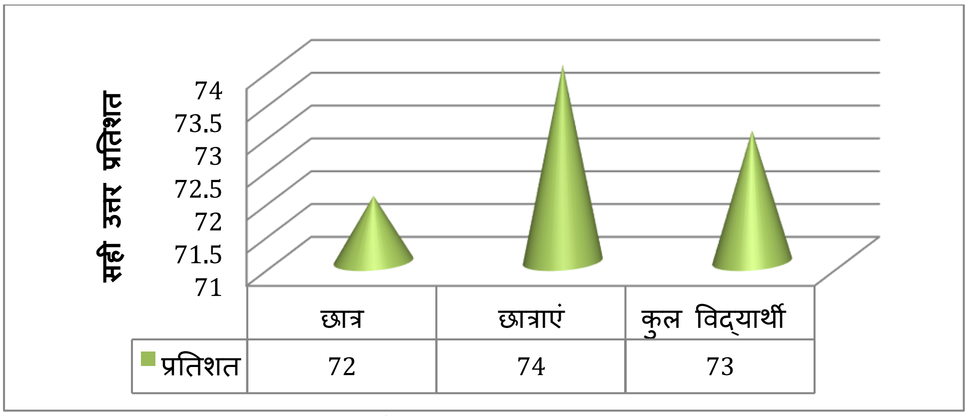


प्रश्न चित्र संख्या 5.3.25

तालिका संख्या 5.3.25

प्रश्न 25 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	88	72
छात्राएं	35	26	74
कुल विद्यार्थी	157	114	73



चित्र संख्या – 5.3.25

प्रश्न संख्या 25 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.25 एवं चित्र संख्या 5.3.25 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "चित्र में बैठक स्थल प्रदर्शित है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 72 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 74 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 73 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि लगभग तीन चौथाई विद्यार्थी "चित्र में प्रदर्शित बैठक स्थल" से परिचित हैं।

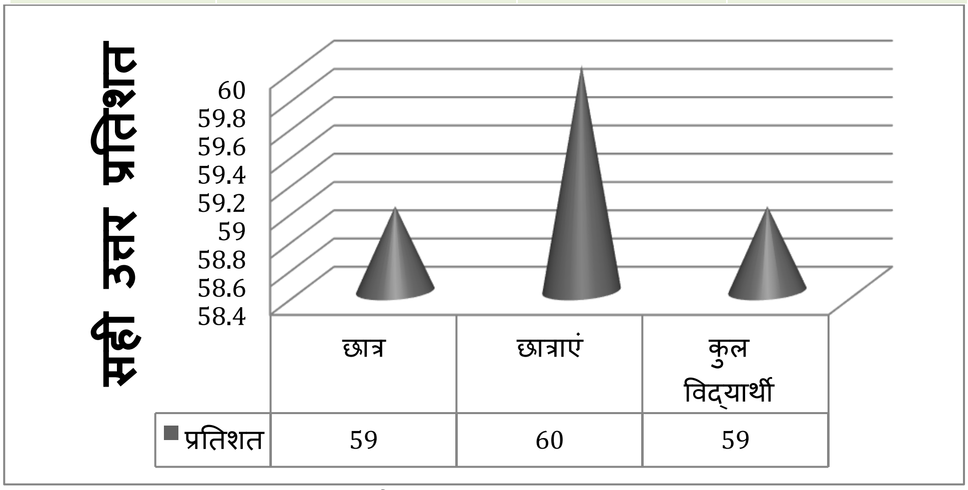
प्रश्न 26. चित्र में प्रदर्शित स्थल है–
सही उत्तर– दीपदान स्तंभ



प्रश्न चित्र संख्या 5.3.26

तालिका संख्या 5.3.26
प्रश्न 26 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	72	59
छात्राएं	35	21	60
कुल विद्यार्थी	157	93	59



चित्र संख्या - 5.3.26
प्रश्न संख्या 26 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.26 एवं चित्र संख्या 5.3.26 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "चित्र में दीपदान स्थल प्रदर्शित है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 59 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 60 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 59 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि दो तिहाई से कम विद्यार्थी "चित्र में प्रदर्शित दीपदान स्थल" से परिचित हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि वर्तमान में दीपदान स्तंभ का उपयोग नहीं किया जा रहा है और यह रखरखाव के अभाव में खंडहर होता जा रहा है।

प्रश्न 27. चित्र में प्रदर्शित स्थल है–

सही उत्तर– नहाने का हौज

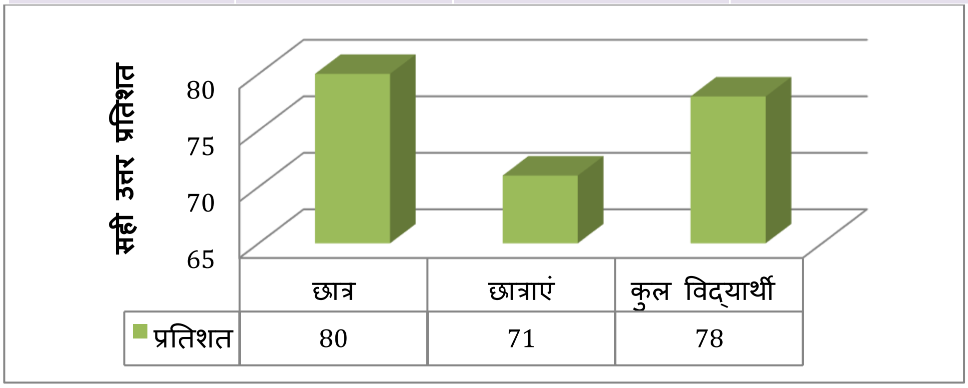


प्रश्न चित्र संख्या 5.3.27

तालिका संख्या 5.3.27

प्रश्न 27 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	97	80
छात्राएं	35	25	71
कुल विद्यार्थी	157	122	78



चित्र संख्या - 5.3.27

प्रश्न संख्या 27 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:-उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.27 एवं चित्र संख्या 5.3.27 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "चित्र में प्रदर्शित स्थल नहाने का हौज है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 80 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 71 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 78 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थी "चित्र में प्रदर्शित स्थल नहाने के हौज" से परिचित हैं।

प्रश्न 28. चित्र में प्रदर्शित स्थल है–

सही उत्तर– बावली

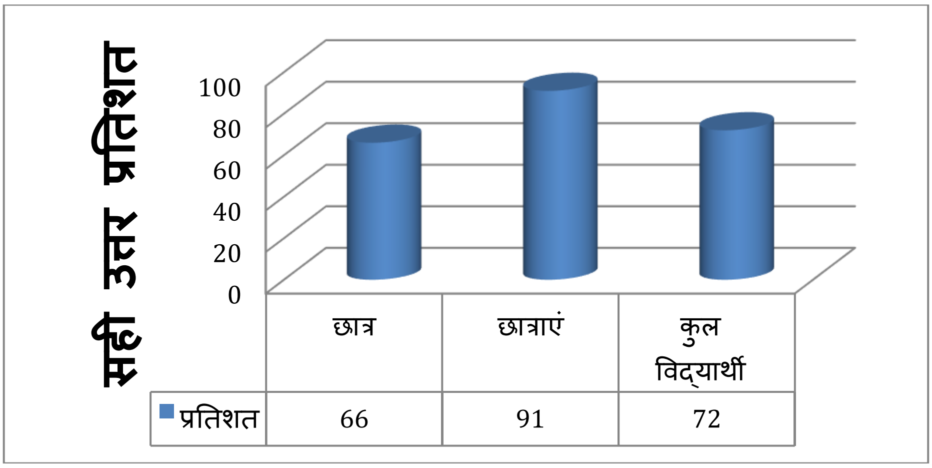


प्रश्न चित्र संख्या 5.3.28

तालिका संख्या 5.3.28

प्रश्न 28 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	81	66
छात्राएं	35	32	91
कुल विद्यार्थी	157	113	72



चित्र संख्या - 5.3.28

प्रश्न संख्या 28 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:-उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.28 एवं चित्र संख्या 5.3.28 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "चित्र में बावली प्रदर्शित है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 66 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 91 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 72 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि तीन चौथाई से कुछ कम विद्यार्थी "चित्र में प्रदर्शित बावली" से परिचित हैं। अधिकांश छात्राएँ इस तथ्य से परिचित हैं, परिचित हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि छात्राओं का जल स्रोतों से निकट का संपर्क अधिक रहता है इसके अतिरिक्त उनके द्वारा अनेक पूजा पाठ भी जल स्रोतों के सानिध्य में संपन्न किए जाते हैं।

प्रश्न 29. चित्र में प्रदर्शित आकृति किससे संबंधित है?

सही उत्तर– गज -ग्राह कथा

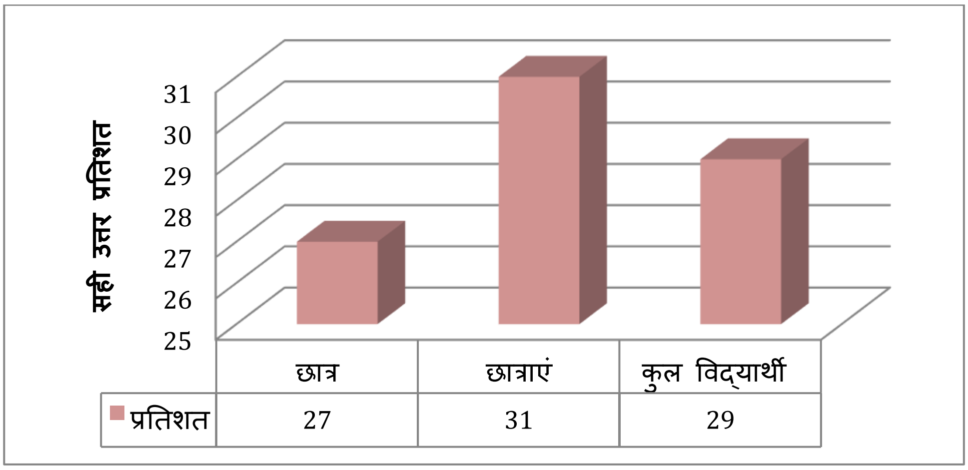


प्रश्न चित्र संख्या 5.3.29

तालिका संख्या 5.3.29

प्रश्न 29 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	33	27
छात्राएं	35	11	31
कुल विद्यार्थी	157	44	29



चित्र संख्या - 5.3.29

प्रश्न संख्या 29 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.29 एवं चित्र संख्या 5.3.29 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "चित्र में प्रदर्शित आकृति गज-ग्राह कथा से संबंधित है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 27 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 31 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 29 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि एक तिहाई से कम विद्यार्थी "चित्र में प्रदर्शित आकृति गज-ग्राह कथा से संबंधित" होने से परिचित हैं। यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। अधिकांश विद्यार्थी पौराणिक कथाओं से परिचित नहीं है इसका कारण यह हो सकता है की पौराणिक कथाएं ना तो वर्तमान में पाठ्यक्रम का अंग है और ना ही इनके बारे में घर परिवार में जानकारी दी जा रही है।

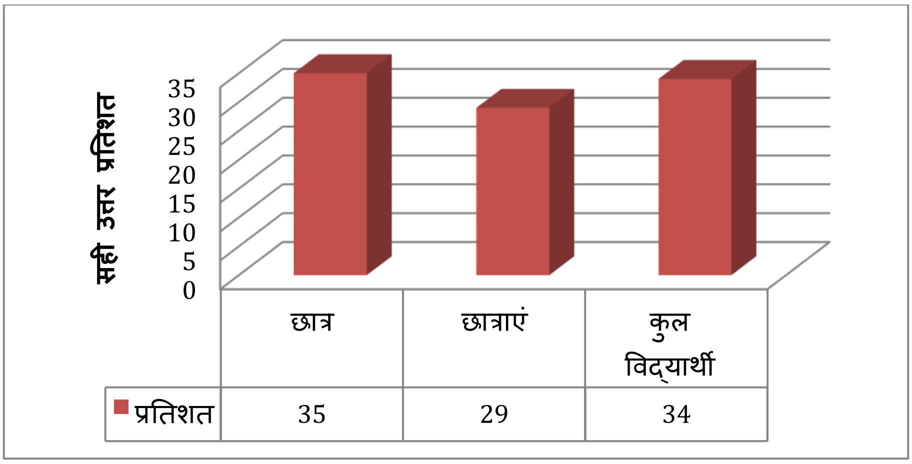
प्रश्न 30. चित्र में प्रदर्शित आकृति किससे संबंधित है?
सही उत्तर– कच्छपावतार



प्रश्न चित्र संख्या 5.3.30

तालिका संख्या 5.3.30
प्रश्न 30 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	122	43	35
छात्राएं	35	10	29
कुल विद्यार्थी	157	53	34



चित्र संख्या - 5.3.30
प्रश्न संख्या 30 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.30 एवं चित्र संख्या 5.3.30 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "चित्र में प्रदर्शित आकृति कच्छपावतार से संबंधित है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 35 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 29 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 34 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि लगभग एक तिहाई विद्यार्थी "चित्र में प्रदर्शित आकृति कच्छपावतार से संबंधित" होने से परिचित हैं। यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। अधिकांश विद्यार्थी पौराणिक कथाओं से परिचित नहीं है।

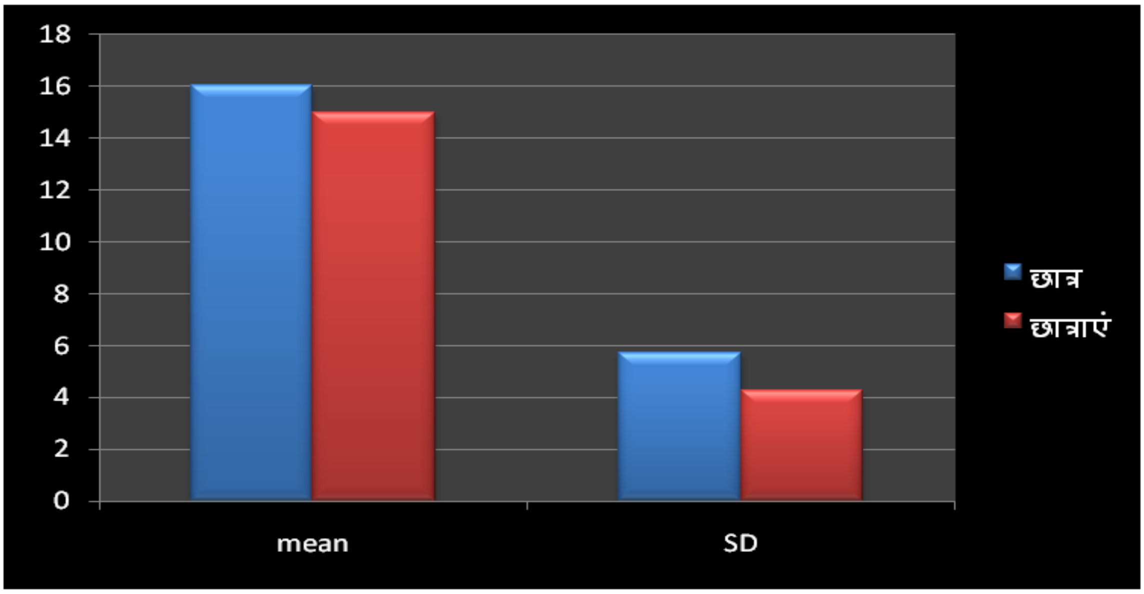
5.4 गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र- छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.4

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रान्तिक अनुपात गणना मान (CR)	't' तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र	122	16.06	5.70	1.0198	1.962	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है।
छात्राएं	35	15	4.28				

df= 155



चित्र संख्या 5.4

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण — तालिका संख्या 5.4 एवं चित्र संख्या 5.4 से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मध्यमान 16.06 तथा छात्राओं का मध्यमान 15 है। गणना द्वारा प्राप्त CR मान 1.0198 है जो कि स्वतन्त्रांश 155 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर ‘t’ तालिका मान 1.962 से कम है।

अतः शून्य **परिकल्पना** "गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

विवेचना — तालिका संख्या 5.4 एवं चित्र संख्या 5.4 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है। छात्र एवं छात्राएँ समान रूप से जागरूक हैं।

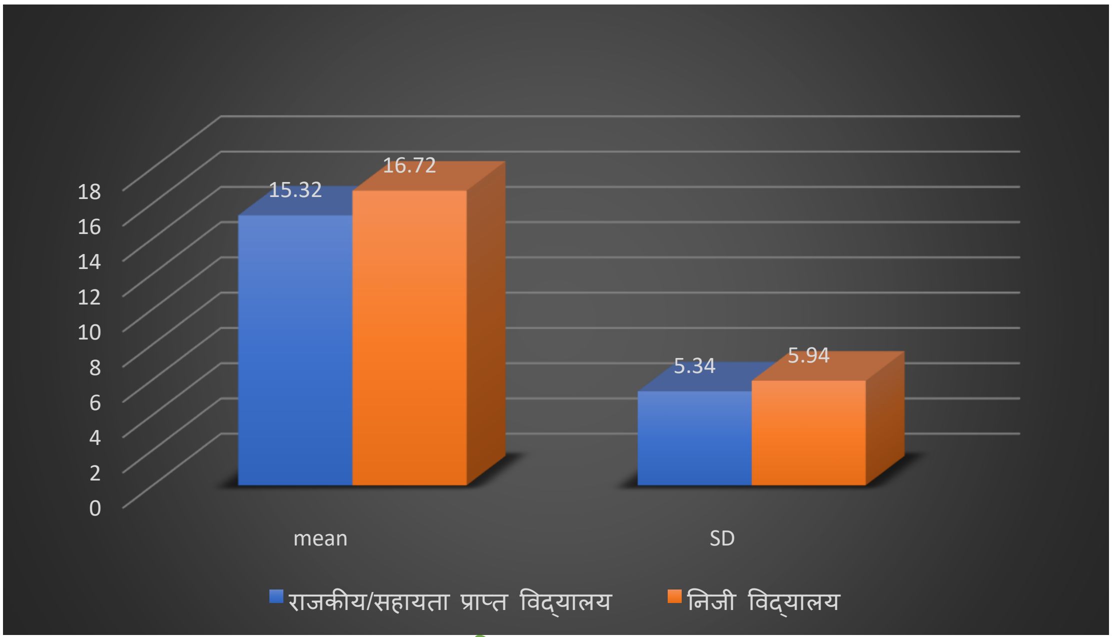
5.5 गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.5

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/ सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	‘t’ तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
राजकीय/सहायता प्राप्त विद्यालय	100	15.32	5.34	1.5160	1.962	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है।
निजी विद्यालय	57	16.72	5.94				

df= 155



चित्र संख्या 5.5

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण — तालिका संख्या 5.5 एवं चित्र संख्या 5.5 से स्पष्ट है कि राजकीय/सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 15.32 तथा निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 16.72 है। गणना द्वारा प्राप्त CR मान 1.516 है जो कि स्वतन्त्रांश 155 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर 't' तालिका मान 1.962 से कम है।

अतः **शून्य परिकल्पना** "गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

विवेचना — तालिका संख्या 5.5 एवं चित्र संख्या 5.5 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का स्तर समान है। विद्यार्थी समान रूप से जागरूक हैं।

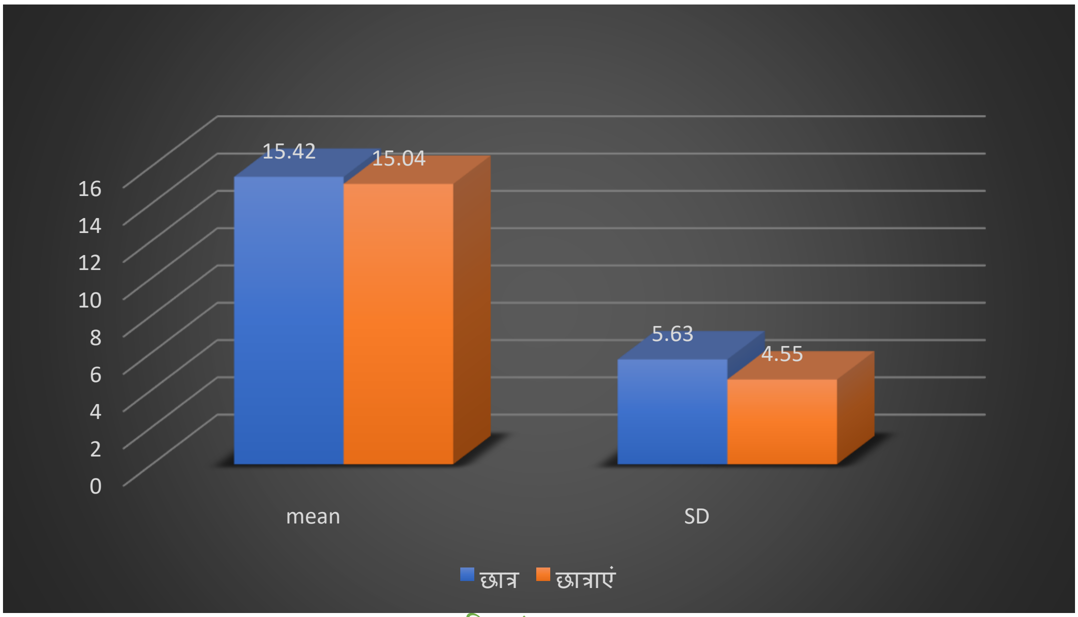
5.6 गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.6

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	't' तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र	74	15.42	5.63	0.3101	1.984	0.5	सार्थक अन्तर नहीं है।
छात्राएँ	26	15.04	4.55				

df= 98



चित्र संख्या 5.6

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण — तालिका संख्या 5.6 एवं चित्र संख्या 5.6 से स्पष्ट है कि राजकीय/सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मध्यमान 15.42 तथा छात्राओं का मध्यमान 15.04है। गणना द्वारा प्राप्त CR मान 0.3101है जो कि स्वतन्त्रांश 98 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर 't' तालिका मान 1.984 से अत्यधिक कम है।

अतः **शून्य परिकल्पना** "गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

विवेचना — तालिका संख्या 5.6 एवं चित्र संख्या 5.6 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है। छात्र एवं छात्राएँ समान रूप से जागरूक हैं।

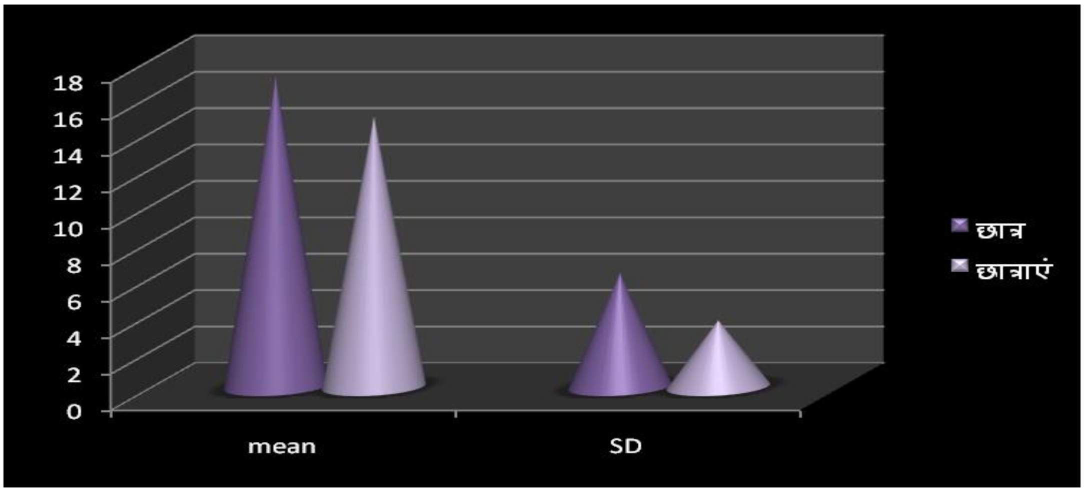
5.7 गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.7

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मकअध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	't' तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र	48	17.06	6.25	1.0051	2.000	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है।
छात्राएं	09	14.89	3.66				

df = 55



चित्र संख्या 5.7

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मकअध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण — तालिका संख्या 5.7 एवं चित्र संख्या 5.7 से स्पष्ट है कि निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मध्यमान 17.06 तथा छात्राओंका मध्यमान 14.89 है। गणना द्वारा प्राप्त CR मान 1.0051 है जो कि स्वतन्त्रांश 55 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर 't' तालिका मान 2.000 से कम है।

अतः **शून्य परिकल्पना** "गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

विवेचना — तालिका संख्या 5.7 एवं चित्र संख्या 5.7 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है। छात्र एवं छात्राएँ समान रूप से जागरूक हैं।

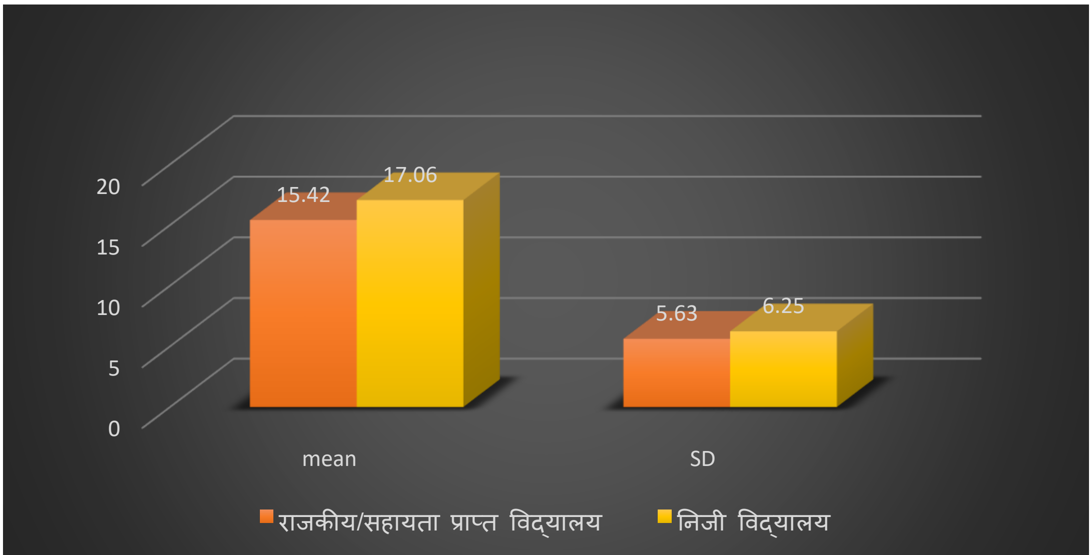
5.8 गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.8

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त, निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	't' तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
राजकीय/सहायता प्राप्त	74	15.42	5.63	1.5048	1.962	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है।
निजी	48	17.06	6.25				

df= 120



चित्र संख्या 5.8

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण — तालिका संख्या 5.8 एवं चित्र संख्या 5.8 से स्पष्ट है कि राजकीय/सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मध्यमान 15.42 तथा निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मध्यमान 17.06 है। गणना द्वारा प्राप्त CR मान 1.5048 है जो कि स्वतन्त्रांश 120 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर 't' तालिका मान 1.962 से कम है।

अतः **शून्य परिकल्पना** “गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है” 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

विवेचना — तालिका संख्या 5.8 एवं चित्र संख्या 5.8 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की जागरूकता का स्तर समान है। दोनों स्तर के छात्र समान रूप से जागरूक हैं।

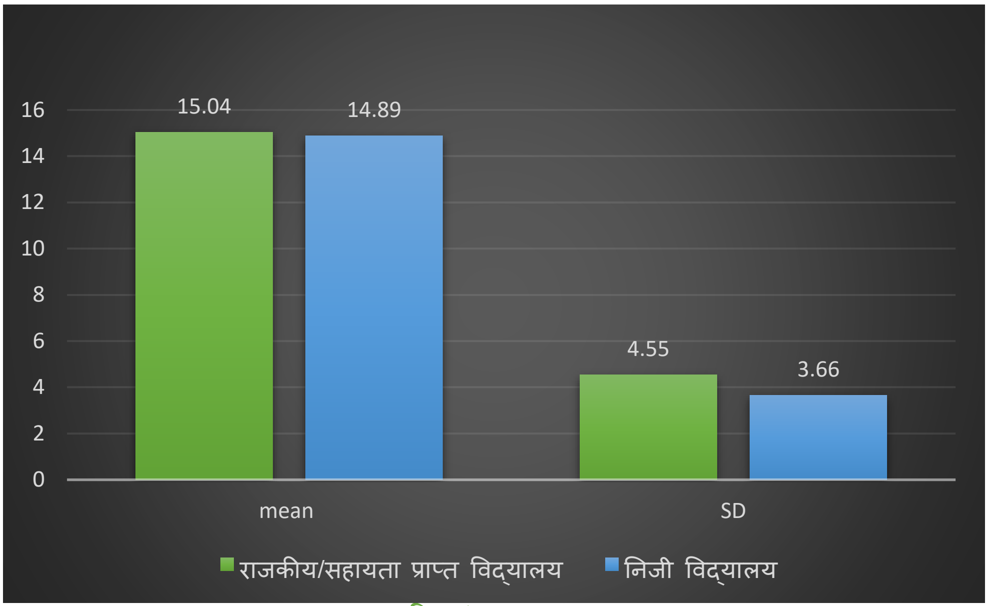
5.9 गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.9

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/ सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मकअध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	‘t’ तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
राजकीय/सहायता प्राप्त विद्यालय की छात्राएं	26	15.04	4.55	0.0891	2.021	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है।
निजी विद्यालय की छात्राएं	09	14.89	3.66				

df = 33



चित्र संख्या 5.9

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा चित्र

विश्लेषण — तालिका संख्या 5.9 एवं चित्र संख्या 5.9 से स्पष्ट है कि राजकीय/सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं का मध्यमान 15.04 तथा निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं का मध्यमान 14.89 है। गणना द्वारा प्राप्त CR मान 0.0891 है जो कि स्वतन्त्रांश 17 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर 't' तालिका मान 2.021 से अत्यधिक कम है।

अतः **शून्य परिकल्पना** "गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

विवेचना — तालिका संख्या 5.9 एवं चित्र संख्या 5.9 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है। छात्र एवं छात्राएँ समान रूप से जागरूक हैं।

अध्याय षष्ठ

निष्कर्ष एवं सुझाव

कोई भी शोध अध्ययन तब तक पूर्ण नहीं माना जाता जब तक उसके द्वारा किसी निष्कर्ष में न पहुँचा जाए। अनुसन्धान की वैज्ञानिक प्रक्रिया में तथ्यों को सापेक्षित कर, निष्कर्षों का सामान्यीकरण करके वर्ग विशेष के लिए अनुमोदित करना, अनुसन्धान का अन्तिम चरण माना गया। एक उत्तम शोध प्रबन्ध की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि उसके निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिक विधियों द्वारा संग्रहित प्रदत्त पर आधारित हों, उन पर शोधार्थी की व्यक्तिगत धारणाओं एवं अनुमानों का किञ्चित मात्र भी प्रभाव न पड़े। इस अध्याय को निम्न सोपानों में प्रस्तुत किया गया है:

- अध्ययन के निष्कर्ष
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता
- अध्ययन के सुझाव
- अध्ययन की सीमाएं
- भावी शोध हेतु सुझाव

6.1 अध्ययन के निष्कर्ष

सम्पूर्ण शोध कार्य के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात मुख्य कार्य उद्देश्यों की पूर्ति करना है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध के उद्देश्यों के सन्दर्भ में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

उद्देश्य 1: गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत का अध्ययन करना

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत से सम्बन्धित न्यादर्शों की वैषम्यता तथा कुकुदता के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि इनका स्तर सामान्य है/ सामान्य वितरण के अनुरूप है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षो को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है।

उद्देश्य 2: गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थी जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना

शोधकर्ता द्वारा गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया, जिसमें 30 बहुविकल्पीय (4 विकल्प) प्रश्नों को सम्मिलित किया गया। इस जागरूकता प्रश्नावली का प्रशासन गूगल फॉर्म की सहायता से किया गया।

उद्देश्य 3: गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का उनके लिंग एवं विद्यालय स्तरानुसार अध्ययन करना

चयनित ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन छ: परिकल्पनाओं के अन्तर्गत किया गया है, जिनका निष्कर्ष निम्न प्रकार है:

I. **गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना**

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। **छात्रों की जागरूकता, छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाई गयी**। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मध्यमान 16.06 पाया गया, जो कि छात्राओं के मध्यमान 15 से अधिक है। **छात्र विरासत के प्रति लगभग 50% ही जागरूक हैं,** जागरूकता का **यह स्तर सन्तोषजनक नहीं है।**

II. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी स्तर के विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति **राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की जागरूकता का स्तर समान है।** वे विरासतों के प्रति मात्र 50% ही जागरूक हैं, जागरूकता का **यह स्तर सन्तोषजनक नहीं है।**

III. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति **राजकीय/सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है।** वे विरासत के प्रति मात्र 50% ही जागरूक हैं, जागरूकता का **यह स्तर सन्तोषजनक नहीं है।**

IV. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति **निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की**

जागरूकता का स्तर समान है। वे विरासतों के प्रति मात्र 50% ही जागरूक हैं, जागरूकता का **यह स्तर सन्तोषजनक नहीं है।**

V. गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी स्तर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी स्तर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की जागरूकता समान स्तर की है। वे विरासत के प्रति 50% से कुछ ही अधिक जागरूक हैं, जागरूकता का **यह स्तर सन्तोषजनक नहीं है।**

VI. **गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी स्तर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना**

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी स्तर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति **राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी स्तर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है।** वे विरासत के प्रति लगभग 50% ही जागरूक हैं, जागरूकता का **यह स्तर सन्तोषजनक नहीं है।**

उद्देश्य 4: चयनित ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी पर्याप्त जागरूक नहीं हैं। उनकी जागरूकता संवर्धन के लिए सुझाव नीचे 'अध्ययन के सुझाव' के अन्तर्गत प्रस्तुत किए गये हैं।

प्रस्तुत उद्देश्य के संदर्भ में पाया गया कि गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी पूर्णतः जागरूक नहीं हैं। अतः जागरूकता के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं:

i. विद्यालयों में समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाएं।
ii. लोगों की जागरूकता के लिए संगोष्ठियाँ एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए।
iii. ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए जाएं।
iv. चित्रकूट क्षेत्र के ऐतिहासिक स्थलों को देश की ऐतिहासिक धरोहर घोषित किया जाए।
v. गणेश बाग की जर्जर इमारतों का पुनर्निर्माण तीव्र गति से किया जाए।

उद्देश्य 5: गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत का ई- ब्रोशर (E-brochure) तैयार करना

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत का ई ब्रोशर (E-brochure) (**परिशिष्ट –XI)** में संलग्न है।

6.2 अध्ययन के सुझाव

- विद्यालयों में समय-समय पर स्थानीय संस्कृति से सम्बंधित कार्यक्रम किए जाए।
- विद्यार्थियों की जागरूकता के लिए स्थानीय संस्कृति एवं ऐतिहासिक धरोहरों से सम्बंधित संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए।

- ऐतिहासिक धरोहरों को शिक्षा के विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए। अथवा जनपद की ऐतिहासिक विरासत और से संबंधित सामग्री पूरक पाठ्यपुस्तक के रूप में शिक्षा के विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- चित्रकूट बस स्टैण्ड एवं रेलवे स्टेशन में इन विरासतों से सम्बन्धित बोर्ड लगाए जाने चाहिए।
- शिक्षण संस्थानों द्वारा विद्यार्थियों को स्थानीय मेलों के अवसर पर भारतीय स्काउट गाइड, एन.सी.सी, राष्ट्रीय सेवा योजना, रेड क्रॉस सोसाइटी इत्यादि संस्थाओं के माध्यम से ट्रैफिक कंट्रोल, प्याऊ अन्य सेवा कार्य हेतु ले जाया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थी स्थानीय संस्कृति के महत्व से परिचित होंगे तथा अपना महत्वपूर्ण योगदान भी कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों को विद्यार्थियों को सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण धरोहरों की गहराई सूक्ष्मता से निरीक्षण हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए। शिक्षकों द्वारा अपने मार्गदर्शन में विद्यार्थियों को इसका अभ्यास कराया जाना चाहिए।
- यहां पर गाइड की व्यवस्था की जानी चाहिए जो आने वाले पर्यटकों को गणेश बाग की विशिष्टताओं से अवगत करा सकें। शुरुआत में विभिन्न पर्वों के अवसर पर गाइड की व्यवस्था प्रारम्भ की जा सकती है।
- गणेश बाग में समीपवर्ती ऐतिहासिक स्थलों की दूरी भी दर्शाई जानी चाहिए ताकि पर्यटक उससे परिचित होकर वहां का भी भ्रमण कर सकें।
- घर-परिवार द्वारा स्थानीय परंपराओं को पीढ़ी दर पीढ़ी अक्षुण्ण बनाए रखने का यत्न पूर्वक प्रयास किया जाना चाहिए । वैसे पंचकोसी परिक्रमा की परंपरा स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अत्यंत श्रेयस्कर है।
- गज-ग्राह जैसे विभिन्न पौराणिक आख्यान को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर सम्मिलित किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी भारतीय संस्कृति से परिचित हो सकें।
- एकल परिवार के स्थान पर संयुक्त परिवार को पूरा स्थापित करना होगा ताकि दादी-नानी की छत्र-छाया में बच्चे पौराणिक कथा कहानियों को सुनकर बड़े हों तथा भारतीय संस्कृति को आत्मसात कर सकें।

- ऐसा कहा जाता है कि गणेश बाग से राजा के महल (पुरानी कोतवाली) तक सुरंग है, जो वर्तमान काल में बंद है। इसे पुनः खोलने/चालू की करने की आवश्यकता है। उसमें लाइट की व्यवस्था की जा सकती है। आज के समय में सुरंग मार्ग पर्यटन का प्रमुख आकर्षण होते हैं।
- गणेश बाग के मुख्य मंदिर में विग्रह की पुनर्स्थापना कर पूजा अर्चना प्रारम्भ की जानी चाहिए।
- बावली में स्थित कुएं मे नर्तकी की मूर्तियां उसकी एक विशिष्ट पहचान है, जिससे बावली में पानी के तल का पता चलता है। वर्तमान में नर्तकी का सिर गायब है। संभवतः यह मुगल आक्रांताओं की देन है। पुरातत्व विभाग द्वारा इसका जीर्णोद्धार कर पुनः सही स्वरूप प्रदान किए जाने की आवश्यकता है।
- गणेश बाग स्थित मुख्य तालाब के किनारे दीपदान स्तंभ स्थित है, जिसमें 175 दीपक प्रज्वलित करने की व्यवस्था है देख रेख के अभाव में यह नष्ट होने की कगार पर है। पुरातत्व विभाग द्वारा इसके पुनरुद्धार किए जाने की आवश्यकता है प्रशासन द्वारा दीपावली, देव दीपावली, गणेश चतुर्दशी इत्यादि के अवसर पर इस पर दीपदान की परंपरा को पुनर्जीवित किया जाना चाहिए।
- गणेश बाग के मुख्य मंदिर के चारों ओर उकेरी गई मूर्तियों/कलाकृतियों में कुछ भग्न अवस्था में है, जिसे देखकर विभिन्न पर्यटकों की आस्था पर गहरी चोट पहुंचती है। पुरातत्व विभाग द्वारा इसका जीर्णोद्धार कर वैभवशाली स्वरूप प्रदान किए जाने की आवश्यकता है।
- गणेश बाग परिसर स्थित बावली एवं मुख्य मंदिर के सम्मुख उसके इतिहास/महत्त्व/ विशिष्टताओं को दर्शाता शिलालेख लगाया जाना चाहिए ताकि पर्यटक उस से भलीभांति परिचित हो सकें और भ्रमण के समय उन विशिष्टताओं का अवलोकन करने में सक्षम हो सकें।
- गणेश बाग का पुनरुद्धार कर विश्व विरासत में दर्ज कराने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- गणेश बाग में प्रवेश पर टिकट की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे शहर के एक सुदूर कोने में स्थित होने के कारण यह स्थल असामाजिक तत्वों का अड्डा होने से बचे।
- गणेश बाग की बाउंड्री वॉल की मरम्मत की जानी चाहिए ताकि इसे अन्ना जानवरों एवं असामाजिक तत्वों के अनधिकृत प्रवेश से बचाया जा सके।
- विद्यालयों द्वारा शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया जाना चाहिए।

- गणेशबाग की ऐतिहासिक विरासत का विकीपीडिया पेज बनाया जाना चाहिए।
- गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत का सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर व्यापक प्रचार-प्रसार जाना चाहिए।
- चित्रकूट जिले की Official website (https://chitrakoot.nic.in) के Menu Bar में Download का option होना चाहिए जिसके अन्तर्गत चित्रकूट का पर्यटन मानचित्र तथा पर्यटन स्थलों के ई-ब्रोशर डाउनलोड हेतु उपलब्ध होने चाहिए।
- उत्तर प्रदेश राज्य की ऑफिशियल पर्यटन वेबसाइट में 'Destination Column' के अन्तर्गत एक कॉलम जिले-वार पर्यटक स्थलों की सूची का होना चाहिए जिसमें जिले की ऐतिहासिक विरासतों का वर्णन किया जाना चाहिए।
- देश की ऑफिशियल पर्यटन वेबसाइट में 'Destination Column' के अन्तर्गत सभी राज्यों की एक सूची होनी चाहिए जिसमें राज्य की ऑफिशियल पर्यटन वेबसाइट का लिंक हाइपरलिंक होना चाहिए।

6.3 शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा जगत, विद्यार्थियों, शिक्षकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों एवं समाज के लोगों के दृष्टिकोण को विकसित करने एवं ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं के समाधान में सहायक होंगे।

प्रस्तुत अध्ययन में दर्शनीय ऐतिहासिक विरासत पर विस्तृत चर्चा की गयी है, साथ ही पर्यटन जैसे विश्वव्यापी महत्व वाले विषय पर प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही स्थानों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष से सम्बन्धित चर्चा की गयी है । उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति विद्यार्थियों की अल्प जानकारी को भी प्रकाश में लाया गया है। प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों, शिक्षकों, पाठ्यक्रम निर्माताओं, प्रशासकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों इत्यादि के लिए अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा।

6.3.1 विद्यार्थियों के लिए

- ❖ विद्यार्थी गणेश बाग के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- ❖ विद्यार्थी अपनी क्षेत्रीय धरोहर के महत्व को जान सकेंगे।
- ❖ विद्यार्थी गणेश बाग के प्रति रुचि विकसित कर सकेंगे।
- ❖ विद्यार्थी गणेश बाग के प्रति आकर्षित होकर खाली समय पर भ्रमण हेतु जा सकेंगे।

6.3.2 शिक्षकों के लिए

- ❖ शिक्षक क्षेत्रीय धरोहर के महत्व को समझकर विद्यार्थियों को बता सकते हैं।
- ❖ विद्यार्थियों के मन में गणेश बाग के प्रति रुचि जागृति उत्पन्न कर सकते हैं।
- ❖ शिक्षक विद्यार्थियों को गणेश बाग शैक्षिक भ्रमण हेतु ले जा सकते हैं।
- ❖ शिक्षक विद्यार्थियो को गणेश बाग के प्रति जागरुक कर सकते हैं।
- ❖ शिक्षक अभिभावकों को शैक्षिक भ्रमण के महत्व का ज्ञान करा सकते हैं।

6.3.3 पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए

- ❖ ऐतिहासिक विरासतों को उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल करने हेतु नीति बनाने की आवश्यकता है।
- ❖ शैक्षिक भ्रमण को उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में विशेष महत्व दिया जाना चाहिए।
- ❖ इतिहास विषय के उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम में गणेश बाग को पूरक पाठ्य पुस्तक के रूप में सम्मिलित किया जा सकता है।

6.3.4 प्रशासकों के लिए

- ❖ जिले के प्रशासक गणेश बाग पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करा सकते हैं।
- ❖ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को गणेश बाग के शैक्षिक भ्रमण हेतु दिशा निर्देश जारी कर सकते हैं।
- ❖ कर्वी नगर के प्रशासक चित्रकूट बस स्टैण्ड एवं रेलवे स्टेशन में गणेश बाग से सम्बन्धित बोर्ड लगवा सकते हैं।
- ❖ कर्वी नगर के मुख्य चौराहों पर गणेश बाग से सम्बन्धित बोर्ड लगवाए जा सकते हैं।
- ❖ प्रस्तुत शोध में दिए गये सुझावों के आधार पर देश तथा प्रदेश की पर्यटक वेबसाइट्स में गणेश बाग का उल्लेख किया जा सकता है।

6.3.5 इतिहासकारों के लिए

- ❖ इतिहासकार गणेश बाग मन्दिर से जुड़े इतिहास के विषय में गहन जानकारी एकत्रित कर सकते हैं।
- ❖ इतिहासकार गणेश बाग की बावली तथा उसके तलों से जुड़े रहस्य के विषय में पता लगा सकते हैं।

6.3.6 पुरातत्वविदों के लिए

- ❖ पुरातत्वविद गणेश बाग के पेशवा कालीन मन्दिर के विषय में खोज कर सकते हैं।
- ❖ गणेश बाग के मन्दिर के गुम्बद में प्रदर्शित मूर्तियों के विषय में खोजबीन कर सकते हैं।

6.4 अध्ययन की सीमाएँ

- शोध में प्रयुक्त स्वनिर्मित उपकरण का समय व धन के अभाव के कारण मानकीकरण सम्भव नहीं हो पाया है।

- प्रयुक्त शोध में आँकड़े एकत्रित करने के लिए विद्यार्थियों का चयन उपलब्धता के आधार पर किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में दिनांक तक गूगल फार्म से प्राप्त प्रश्नावली (157) को सम्मिलित किया गया है। सांख्यिकी गणना में सुविधा एवं समयाभाव के कारण शोधार्थी द्वारा व्यक्तिगत रूप से विद्यालयों में जाकर पूरित कराई गई 75 मुद्रित प्रश्नावलियों को अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया है।

6.5 भावी शोध हेतु सुझाव

शोध अध्ययन के क्षेत्र में सत्य की खोज निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। कोई भी शोधकार्य पूर्ण व अन्तिम नहीं होता वरन् यह एक ऐसी श्रृंखला जिसमें एक कड़ी के सम्पन्न होने के साथ ही दूसरी कड़ी की शुरुआत होती है। कोई भी अध्ययन एक निश्चित परिधि तक सीमित रहता है किन्तु उसी क्षेत्र में और कार्य अन्य शोधार्थियों द्वारा किए जा सकते हैं ताकि समस्या का अधिक स्पष्ट निरूपण हो सके। शोध अध्ययन के अधिक स्थिर एवं विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए एक ही शोध समस्या पर कई शोध अध्ययनों का किया जाना आवश्यक होता है। शोध समस्या के लिए अधिक समय व धन की आवश्यकता होती है जो कि केवल एक शोधार्थी के लिए सम्भव नहीं होता, जिसके कारण वह एक विषय के विभिन्न पहलुओं पर कार्य नहीं कर पाता। एक शोध समस्या पर किया गया शोधकार्य, दूसरे शोधार्थी द्वारा किए गये शोध अध्ययन के लिए मार्गदर्शन एवं सुझाव का कार्य करता है। इस शोधकार्य के आधार पर भावी अध्ययनों के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं–

- ✓ वर्तमान शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जनपद के गणेश बाग तक सीमित है, भावी शोध अध्ययन में अन्य जनपदों/राज्यों की अन्य ऐतिहासिक विरासतों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- ✓ प्रस्तुत अध्ययन चित्रकूट जनपद की ऐतिहासिक विरासत गणेश बाग तक ही सीमित है, भावी अध्ययन में चित्रकूट जनपद की अन्य ऐतिहासिक विरासतों को सम्मिलित किया जा सकता है।

- ✓ प्रस्तुत अध्ययन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता तक सीमित है, भावी अध्ययन में प्राथमिक तथा उच्च स्तर के विद्यार्थियों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
- ✓ प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन असम्भाव्य विधि से किया गया है, भावी अनुसन्धान में सम्भाव्य विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अवस्थी, निधि (2005) 1 ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियन्त्रण के प्रति जागरूकता का अध्ययन/पी-एच०डी० थीसिस, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।

https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/270538

आनन्द, विक्रम (2019)। माध्यमिक स्तर के हिंदी अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता एवं अध्यापक की शिक्षण प्रभाविता का अध्ययन पी-एच०डी० थीसिस, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस

https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/296838

आर्य, डॉ० मोहन लाल (2018)। शिक्षा के ऐतिहासिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य मेरठ: आर० लाल० बुक डिपो

कतरनhttps://yogagurul.blogspot.com/2019/

कुमार, दीपक (2021)। मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन अप्रकाशित लघु शोध शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी।

खण्डेलवाल, आरती (2018) | सिरोही जिले के बी० एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन। पी-एच०डी० थीसिस, पैसिफिक अकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एण्ड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर।
https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/321972

गुप्ता, एस. पी. & गुप्ता, अलका (2019)। उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान: सिद्धान्त एवं व्यवहार (Rev. Ed.)प्रयागराज: शारदा पुस्तक भवन।

चित्रकूट जिला विकिपीडिया। https://bit.ly/3cjql79

चौरसिया, प्रिन्सी (2018)। स्नातक स्तर पर महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन। अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

चौरसिया, पूजा (2019)। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिन्जर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन। एम० एड० लघु शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

https://archive.org/details/ilovepdf-merged-4-1/mode/2up?view=theater

जागरूकता (2018 दिसम्बर 04)। विकीपीडिया।

घर, अभिलाषा (2019)। उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में योग जागरूकता का अध्ययनः बाँदा जनपद के विशेष सन्दर्भ मे। लघु शोध प्रबन्ध शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

https://archive.org/details/20200304 20200304_1435/mode/2up

पटेल, श्वेता (2017)। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में वृत्तिक अभिमुखीकरण हेतु जागरूकता कार्यक्रम का प्रभाव एक अध्ययन/ पी-एच०डी० थीसिस, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)।
https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/229015

पटेल, ब्रजलाल (2021)। बांदा जनपद के विद्यार्थियों भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन। अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध-शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

परिहार,नीलम (2017)।भारतीय बीमा सेवा में ग्राहक सन्तुष्टि भारतीय जीवन बीमा निगम एवं निजी क्षेत्र की कम्पनियों द्वारा प्रदत्त सेवाओं का तुलनात्मक अध्ययन। (अल्मोड़ा जनपद के विशेष संदर्भ में) / पी-एच० डी०थीसिस, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल।

https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/203279

पाठक, पी० डी० (2017)। शिक्षा में मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य। आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।

पाठक, योगेश (2011)। पूर्वी उत्तर प्रदेश के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का सूचना क्रांति परंपरागत विषयों तथा पर्यावरण जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन/ पी-एच०डी० थीसिस, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/17819

प्रतिचयन विधियाँ और प्रतिदर्श आकार का आकलन/ E-gyankosh.

https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/30591/1/Unit-15.pdf

प्रसामान्य वितरणः प्रसम्भाव्यता का प्रसम्प्रत्यय, प्रसामान्य सम्भाव्य वक्र की विशेषताएँ, विषमता एवं कुकुदता, प्रसामान्य सम्भाव्यता वक्र के अनुप्रयोग। उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय।

https://www.uou.ac.in/sites/default/files/sim/BAPY-201.pdf

मिश्रा, मधुरिमा (2000)।महिलाओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता एक समाजशास्त्रीय अध्ययन कानपुर नगर के संदर्भ में)। पी-एच०डी० थीसिस, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।
https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/257977

राजकुमार (2016) । तकनीकी शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा तथा समायोजन पर प्रभाव का एक अध्ययन। पी-एच० डी० थीसिस, जवाहर लाल नेहरू स्नातकोत्तर शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान।

रायजादा, बी० एस० (2008)। शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व / जयपुर: दी डाइमण्ड प्रिंटिंग प्रेस।

राठौर, पूनम (2020)।अनुसूचित पिछड़े व सामान्य जाति के स्नातकोत्तर स्तर विद्यार्थियों के मानवाधिकार जागरूकता एवं व्यक्तिगत मूल्य विकास का तुलनात्मक अध्ययन/ पी-एच०डी० थीसिस, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ।

लघु शोध-प्रबन्ध प्रकाशित https://yogagurul.blogspot.com/2020/05/blog-post.html

लाल, रमन बिहारी (2014)। शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन। मेरठः आर० लाल० बुक डिपो

लाल, रमन बिहारी (2018)।शिक्षा के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मेरठ: आर० लाल० बुक डिपो।

सक्सेना, अर्चना (2010)। पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण उन्मूलन के प्रति जनमानस की जागरूकता एवं सहभागिता का अध्ययन। पी-एच०डी० थीसिस, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/230163

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण अर्थ, उद्देश्य, आवश्यकता एवं स्रोता (2019 जुलाई 20)।Sootburor.https://www.scotbuzz.org/2019/07/sambandhit sahityhtml?m=1

सर्वेक्षण विधि का अर्थ (2020, मार्च 17)1 टीचर दीदी, यू-ट्यूब

https://youtu.be/3Bazwi9gRe

साहू, सरिता (2016)। क्षेत्रीय इतिहास अध्ययन के परम्परागत मौखिक स्रोतों की ऐतिहासिकता: छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ माँ पी.एच०डी० [थीसिस, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छत्तीसगढ़)।
https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/245803

सांख्यिकीUnionpedia. http://suri.li/ephml

सिंह, लक्ष्मण (2016)। अलीगढ़ मण्डल के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत शिक्षकों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० थीसिस, डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/328345

शोधगंगाhttps://shodhganga.inflibnet.ac.in/

Guidelinesfor Preparation of thethesis/Dissertations (2018).Nainital:KumaunUniversity.

https://www.kunainital.ac.in/images/document/KUDScDLittPhDMScDissertationThesisPreparationandSubmissionGuidelines2018.pdf

How to Add Page Numbers in APA 5. (2020, February 25).

Editarians. https://www.editarians.com/page-numbers-in-apa-style/

How to Cite a website in APA Style: Format & Examples. (2022, May 10). Scribbr.

https://www.scribbr.com/apa-examples/website/

How to Create a Bell Curve Chart in Excel.

https://www.extendoffice.com/documents/excel/2404-excel-template-bell-curve-chart.html

Margins. (n.d.) APA Style. Retrieved (2022, June 10).

https://apastyle.apa.org/style-grammar-guidelines/paper-format/margins

Normal Skewness Range.

https://community.gooddata.com/metrics-and-maql-kb-articles-43/normality-testingskewness-and-kurtosis-241

Normal Kurtosis Range.

https://www.sciencedirect.com/topics/neuroscience/kurtosis

Paragraph Style. https://libguides.usc.edu/APA7th/formatting

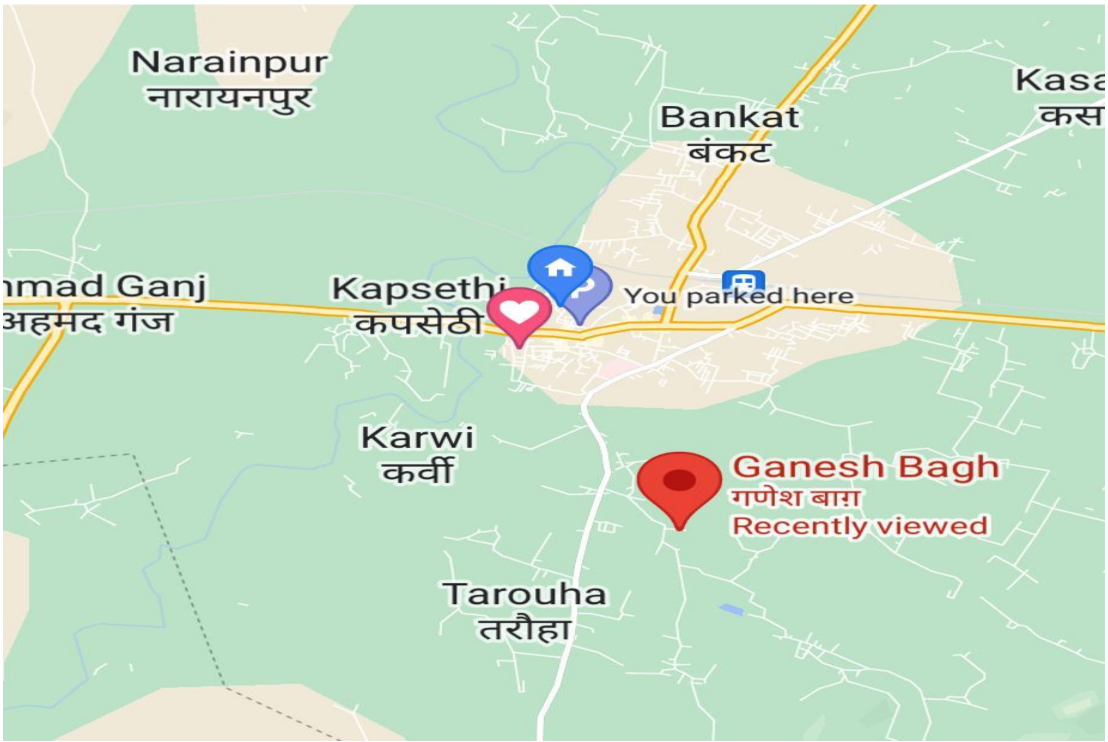
t-test calculator. Graphpad.

www.graphipad.com/quickcales/test1.cfm>

परिशिष्ट—I

चित्रकूट जनपद का मानचित्र





गणेश बाग़ की अवस्थिति

परिशिष्ट—II

गणेश बाग से सम्बंधित समाचार, लेख इत्यादि

चित्रकूट के दशकों पुराने किले में क्या है रहस्यमयी आवाज का सच ? TV9 की टीम ने किया ये बड़ा खुलासा

गणेश बाग के इस किले (Chitrakoot Fort) को खजुराहो शैली के हिसाब से बनाया गया है. कर्वी पेशवाकालीन राजमहल से गणेश बाग तक एक गुप्त रास्ता है, जो पेशवाओं के पारिवारिक सदस्यों के आने-जाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था.

उपेक्षा के शिकार बुंदेलखंड के मिनी खजुराहो के अस्तित्व पर संकट, भारतीय वास्तुकला की धरोहर को बचाए रखने की चुनौती

Alok Bhadouria | Lipi | Updated: Nov 7, 2021, 2:36 PM

भारतीय वास्तुकला की अनमोल धरोहर गणेश का बाग के अस्तित्व पर संकट मंडरा रहा है। मुंबई में हुई बेसिन की संधि के बाद करवी (चित्रकूट) की जागीर संभालने वाले मराठा शासक बाजीराव पेशवा के वंशज अमृत राव ने खजुराहों की तर्ज पर भारतीय वास्तुकला की अनमोल धरोहर का निर्माण वर्ष 1828 में कराया था। इसके अलावा पुरानी कोतवाली किला, गोल तालाब और नारायण बाग का भी मराठा शासकों की ही देन है। पुरातत्व विभाग की अनदेखी का शिकार यह मिनी खजुराहो हो गया है।

चित्रकूट: मिनी खजुराहों का प्रस्ताव बनाएं, टिकट लगेगा

कानपुर ब्यूरो
Updated Fri, 05 Aug 2022 06:09 PM IST



गणेश बाग के पास पार्क के लिए कराएं जमीन की पैमाइश : डीएम

जागरण संवाददाता चित्रकूट मिनी खजुराहो के रूप में अप
रखने वाले पेशवाकालीन गणेश

Jagran
Publish:Tue, 19 Oct 2021 06:56 PM (IST)
Updated:Tue, 19 Oct 2021 06:56 PM (IST)



चित्रकूट स्थित मिनी खजुराहो का निरीक्षण करते चित्रकूट के DM अभिषेक आनंद।

चित्रकूट DM अभिषेक आनन्द ने शुक्रवार को मिनी खजुराहो गणेश बाग का औचक निरीक्षण किया। भारतीय पुरातत्व विभाग के आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (ASAI) के मनोज कुमार वर्मा भी मौजूद रहे।

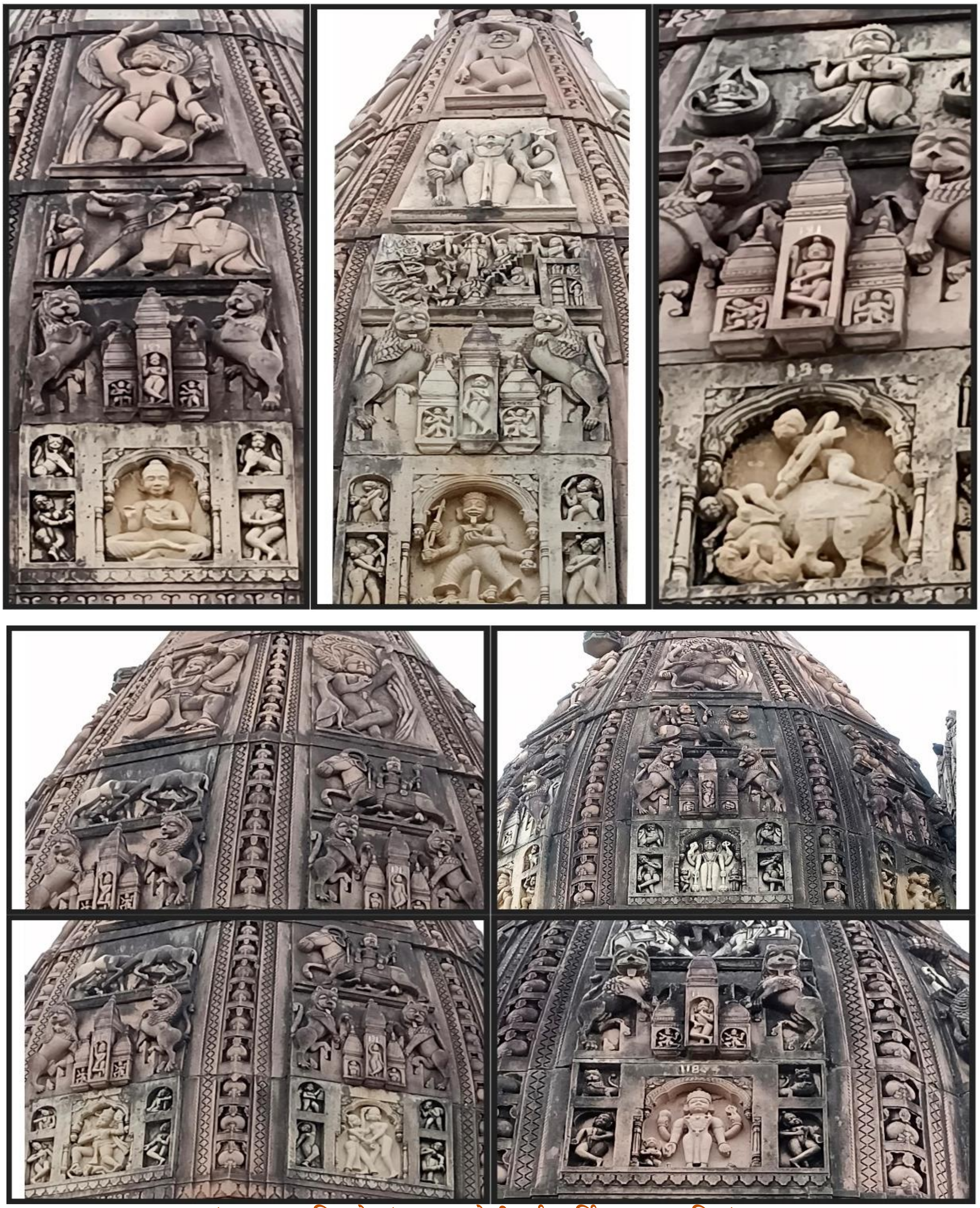
परिशिष्ट—III

ऐतिहासिक विरासत भ्रमण चित्रावली



परिशिष्ट-- IV

गणेश बाग चित्रावली



पंचायतन मन्दिर के गुंबद पर उकेरी गई धार्मिक कलाकृतियां



पंचायतन मन्दिर की गुंबद पर पर उकेरी गई धार्मिक कलाकृतियां



गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के चित्र

परिशिष्ट—V

लघु शोध-प्रबन्ध प्रारूप

- Website Citations as per APA 7th Edition

Webpage
1 author
Full date

Reference entry
Slat, B. (2019, April 10). *Whales likely impacted by Great Pacific garbage patch*. The Ocean Cleanup. https://www.theoceancleanup.com/updates/whales-likely-impacted-by-great-pacific-garbage-patch/

In-text citation
Parenthetical: (Slat, 2019)
Narrative: Slat (2019)

Webpage
1 author
Full date

Reference entry
Author's Last Name, Initial(s). (Year, Month Day of publication). *Title of work*. Website. https://URL

In-text citation
Parenthetical: (Author's Last Name, Year of publication)
Narrative: Author's Last Name (Year of publication)

- Margins

Use 1-inch margins on every side of the page for an APA Style paper.

However, if you are writing a dissertation or thesis, your advisor or institution may specify different margins (e.g., a 1.5-inch left margin to accommodate binding).

- Line Spacing

2.1.3 Type -Setting, Text Processing and Printing

The text shall be printed employing laserjet or Inkjet printer, the text having been processed using a standard text processor. The standard font shall be Times New Roman or Arial of 12 pts with 1.5 line spacing. हिंदी के लिए Arial Unicode MS फंट का आकार 14 तथा शीर्षकों के लिए फंट का आकार 16 स्वीकार्य होगा।

- Page Numbering

  - The first page is numbered page 1.
  - Each page is numbered sequentially thereafter.
  - Numbers are positioned in the header at the top right of each page.

परिशिष्ट – VI

कर्वी नगर स्थित उच्चतर माध्यमिक शिक्षण संस्थान

क्रम संख्या	विद्यालय का नाम
1.	राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, कर्वी (चित्रकूट)
2.	केंद्रीय विद्यालय संगठन, कर्वी (चित्रकूट)
3.	चित्रकूट इंटर कॉलेज, कर्वी (चित्रकूट)
4.	जनसेवा इंटर कॉलेज, कर्वी (चित्रकूट)
5.	ज्ञान भारती इंटर कॉलेज, कर्वी (चित्रकूट)
6.	बैजनाथ भारद्वाज सरस्वती विद्या मंदिर, कर्वी (चित्रकूट)
7.	सरस्वती बालिका विद्या मंदिर, कर्वी (चित्रकूट)
8.	जे0एम0 सिंह बालिका इंटर कॉलेज, कर्वी (चित्रकूट)
9.	अशोक पब्लिक स्कूल, कर्वी (चित्रकूट)
10.	जी0 डी0एन0 डी0 मंदिर, कर्वी (चित्रकूट)
11.	श्री जी इंटरनेशनल हायर सेकेण्डरी स्कूल, कर्वी (चित्रकूट)
12.	संत थॉमस हायर सेकेण्डरी स्कूल, कर्वी (चित्रकूट)
13.	सहज गर्ल्स इंटर कॉलेज, कर्वी (चित्रकूट)
14.	जी जे पी इंटर कॉलेज, कर्वी (चित्रकूट)
15.	श्रीमती बुईया बाई इंटर कॉलेज, कर्वी (चित्रकूट)
16.	कल्याण भारती इंटर कॉलेज, कर्वी (चित्रकूट)
17.	छत्रपति शाहूजी महाराज इंटर कॉलेज, कर्वी (चित्रकूट)
18.	श्री राधा कृष्ण पोद्दार इंटर कॉलेज, कर्वी (चित्रकूट)

परिशिष्ट—VII

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरुकता प्रश्नावली–प्रथम प्रारूप

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरुकता प्रश्नावली

मार्गदर्शक **शोधार्थी**

डॉ0 राजीव अग्रवाल **धीरेन्द्र कुमार वर्मा**

निम्न सूचनाएं भरिए :

नाम.. ....

पिता का नाम..

लिंग...

कक्षा...

विद्यालय का नाम.. ....

दिनांक..

WhatsApp..

निर्देश

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में गणेश बाग़ की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित है। इसमें गणेश बाग़ की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रश्न दिए गये हैं। दिए गए विकल्पों में से किसी एक पर सही का चिह्न लगायें। सभी प्रश्न करने अनिवार्य है। आपके द्वारा दी गयी जानकारी केवल शोध कार्य में प्रयुक्त की जाएगी, अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।

प्रश्न 1. चित्रकूट जिले में स्थित प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों के नाम लिखिए—

1……….. 2……….. 3………..

प्रश्न 2. कर्वी के निकट के ऐतिहासिक धरोहरों के नाम लिखिए?

1………. 2……….. 3………..

प्रश्न 3. गणेश बाग नामक ऐतिहासिक स्थल किस जिले में स्थित है?

क- बाँदा ख- महोबा

ग- चित्रकूट घ- हमीरपुर

प्रश्न 4. गणेश बाग को किस मंदिर के नाम से जाना जाता है?

क- शिव मंदिर ख- विष्णु मंदिर

ग- गणेश मंदिर घ- हनुमान मंदिर

प्रश्न 5. गणेश बाग को दूसरे किस नाम से जाना जाता है ?

क- छोटा कालिंजर ख- छोटा दुर्ग

ग- छोटा खजुराहो घ- छोटा नागपुर

प्रश्न 6. गणेश बाग का निर्माण किस शताब्दी में हुआ था ?

क- 17 वीं ख- 18 वी

ग- 19 वीं घ- 20 वीं

प्रश्न 7. गणेश बाग का निर्माण किस शासक के द्वारा किया गया था ?

क- मराठा शासक ख- चंदेल शासक

ग- राजपूत शासक घ- मुगल शासक

प्रश्न 8. गणेश बाग का निर्माण किस राजा द्वारा कराया गया था ?

क- पेशवा बाजीराव ख- विनायक राव

ग- माधव राव घ- धनपत राव

प्रश्न 9. गणेश बाग किन प्रस्तरों से निर्मित है ?

क- लाल पत्थर ख- चूना पत्थर

ग- संगमरमर घ- ग्रेनाइट

प्रश्न 10. गणेश बाग का विस्तार है-

क- एक किमी ख- तीन किमी

ग- पाँच किमी घ- सात किमी

प्रश्न 11. गणेश बाग में कुल कितने मंदिर स्थित हैं?

क- एक ख- दो

ग- तीन घ- एक भी नहीं।

प्रश्न 12. गणेश बाग में कुल कितने तालाब स्थित है?

क- एक ख- दो

ग- तीन घ- एक भी नहीं।

प्रश्न 13. गणेश बाग गुप्त रास्ते द्वारा कर्वी के किस मुख्य स्थान से जुड़ता है?

क- तरौहा ख- पुरानी कोतवाली

ग- कोठी तालाब घ- नई कोतवाली

प्रश्न 14. गणेश बाग में स्थित मंदिर का आकार कैसा है?

क- चतुष्कोणीय। ख- पंचकोणीय

ग- षट्कोणीय। घ- सप्तकोणीय

प्रश्न 15. गणेश बाग का निर्माण राजा द्वारा किस उद्देश्य से कराया गया था?

क- मनोरंजन के लिए ख- मेला के लिए

ग- राजनीति के लिए घ- सैनिकों के लिए

प्रश्न 16. गणेश बाग की बावड़ी कितने खंडों की है?

क- चार खण्ड की ख- पाँच खण्ड की

ग- छ: खण्ड की घ- सात खण्ड की

प्रश्न 17. गणेश बाग के मंदिर समूह में कितने मन्दिर है?

क- चार मन्दिर ख- पाँच मन्दिर

ग- छ: मन्दिर घ- सात मन्दिर

प्रश्न 18. गणेश बाग की बावली के मुख्य द्वार पर किस भगवान की मूर्ति लगी है?

क- भगवान गणेश की ख- भगवान शिव की

ग- भगवान विष्णु की घ- भगवान राम की

प्रश्न 19. राजा विनायक राव के पिता का क्या नाम था ?

क- बाजीराव ख- अमृत राव

ग - महेन्द्र राव घ- धनपत राव

प्रश्न 20. कर्वी का पुराना नाम क्या था?

क- बाजीराव नगर ख- कावेरी नगर

ग- अमृत नगर घ- धनपत राव नगर

प्रश्न 21. चित्रकूट रेलवे स्टेशन के निकटतम स्थल है–

क– रामघाट ख- गणेश बाग

ग– हनुमान धारा घ– मड़फा दुर्ग

प्रश्न 22. कोठी तालाब में किस भगवान का मंदिर है?

क– भगवान कृष्ण ख– भगवान विष्णु

ग– भगवान राम घ– भगवान शिव शंकर

प्रश्न 23. कर्वी का राजा महल किस रोड पर स्थित है?

क– बांदा रोड ख– प्रयागराज रोड

ग– पहाड़ी रोड घ– देवांगना रोड

प्रश्न 24. चित्रकूट धाम रेलवे स्टेशन से गणेश बाग की दूरी कितनी है?

क– 2 किमी ख– 3.5 किमी

ग– 10 किमी घ– 12 किमी

प्रश्न 25. निम्न चित्रित तालाब कहां है?



क– रामघाट मे

ख– कर्वी के राजा महल में

ग– गणेश बाग में

घ– भरतकूप

प्रश्न 26. चित्र में प्रदर्शित स्थल को कहते हैं–



क- बावली

ख- मंदिर

ग- महल

घ- संग्रहालय

प्रश्न 27. निम्न चित्रित मंदिर किस जनपद में स्थित है?



क- महोबा

ख- चित्रकूट

ग- बांदा

घ- हमीरपुर

प्रश्न 28. निम्न मूर्ति गणेश बाग में विराजमान है–



क- तालाब परिसर

ख- बावली परिसर

ग- मंदिर परिसर

घ- मुख्य द्वार

प्रश्न 29. निम्न चित्रित प्रस्तर मूर्तियां बनी हुई है–



क- मंदिर में

ख- आवास में

ग- बावली में

घ- तालाब परिसर में

प्रश्न 30. निम्न चित्रित आवास स्थित है –



क- गणेश बाग में

ख- राजा के महल में

ग- कोठी तालाब में

घ- मड़प्पा में

प्रश्न 31. निम्न आकृति किस खेल से संबंधित है?



क- शतरंज

ख- लूडो

ग- चौसड़

परिशिष्ट—VIII

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरुकता प्रश्नावली–अंतिम प्रारूप

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरुकता प्रश्नावली

मार्गदर्शक **शोधार्थी**

डॉ0 राजीव अग्रवाल **धीरेन्द्र कुमार वर्मा**

निम्न सूचनाएं भरिए :

नाम.. ....

पिता का नाम...

लिंग..

कक्षा..

विद्यालय का नाम... ....

दिनांक...

WhatsApp..

निर्देश

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में गणेश बाग़ की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित है। इसमें गणेश बाग़ की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रश्न दिए गये हैं। दिए गए विकल्पों में से किसी एक पर सही का चिह्न लगायें। सभी प्रश्न करने अनिवार्य है। आपके द्वारा दी गयी जानकारी केवल शोध कार्य में प्रयुक्त की जाएगी, अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।

परिशिष्ट—IX

परीक्षण प्रशासन चित्रावली

प्रधानाचार्य, श्री मति बुईयाबाई इण्टर कॉलेज, कर्वी (चित्रकूट)







प्रश्नावली के बारे में समझते हुए विद्यार्थी

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

मुख्य मंदिर



चौसर





तालाब



विभिन्न देवियों की मूर्तियाँ

ISBN 978-93-5913-084-2